पूर्व मध्यकाल में भारत के कुछ राजवंश

6वीं शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ भारतीय राजनीति में अनेक नए राज्यों का उदय हुआ। गुप्तों के पतन के बाद उत्तर भारत में कन्नौज राजनीतिक शक्ति का प्रमुख केन्द्र बन गया।

⇒ गुप्त साम्राज्य के पतन के परिणाम :-

* भारत के विभिन्न भागों में राजनीतिक सत्ता के अनेक स्वतंत्र केन्द्रों का उदय
* भारत में बहु-राज्यवादी व्यवस्था के विस्तार का प्रारंभ।
* जाति व्यवस्था अत्यधिक जटिल हो गयी एवं समाज रूढ़िवादी हो गया।
* अर्थव्यवस्था का पतन शुरू हुआ एवं सर्वत्र सामंतवाद की जड़े मजबूत हुई
* उत्तर भारत में राजनीतिक अराजकता की स्थिति बन गयी।
* राजनीतिक अस्थिरता एवं अनेक छोटे राज्यों के बनने के कारण विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा भारतीय हिस्सों को जीतना आसान हो गया।

⇒ पूर्व मध्यकालीन प्रमुख राजवंश :-

राजवंश (पूर्व मध्यकालीन)

उत्तर भारत

- पुष्यभूति वंश (थानेश्वर, हरियाणा)
- मौखरी वंश (कन्नौज)
- पाल वंश] बंगाल
- सेन वंश
- राजपूत वंश
  - i) गुर्जर प्रतिहार वंश (गुजरात)
  - ii) चौहान वंश (दिल्ली)
  - iii) चन्देल वंश (बुंदेलखंड / जेजाक भुक्ति)
  - iv) परमार वंश (मालवा)
  - v) चालुक्य (सोलंकी) वंश (अन्हिलवाड, गुजरात)
- हिंदुशाही वंश (गांधार)

दक्षिण भारत

- चालुक्य वंश (वातापी)
- पल्लव वंश (कांची)
- पांड्य वंश (मदुरा)
- चोल वंश (चोलमण्डलम्)
- राष्ट्रकूट वंश (मान्यखेत)

KD Job Updates
Raj Holkar
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

पाल वंश (बंगाल) ②

⇒ पाल वंश की स्थापना बौध्द धर्म के अनुयायी गोपाल ने की थी।
⇒ गोपाल ने बिहार शरीफ के निकट ओदन्तीपुरी विहार की स्थापना करवायी थी।

⇒ धर्मपाल :- उपाधियाँ :- परमेश्वर, परम भट्टारक एवं महाराजाधिराज।

* यह गोपाल का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था।
* इसने कन्नौज के त्रिदलीय संघर्ष की शुरुआत की।
* गुजराती कवि सोड्ढल ने धर्म पाल को उत्तरापथ स्वामिन कहा है।
* धर्मपाल ने कन्नौज के शासक इंद्रायुध को हराकर चक्रायुध को अपने संरक्षण में कन्नौज का शासक बनाया।
* धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविधालय की स्थापना करवायी।
* धर्मपाल के शासनकाल में यात्री सुलेमान भारत आया था। सुलेमान ने धर्मपाल को रूहमा कहा है।

⇒ देवपाल :-

* देवपाल ने मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया था।
* देवपाल ने प्रतिहार शासक नागभट्ट -II को पराजित किया।
* देवपाल ने परम सौगात की उपाधि ग्रहण की।

⇒ महिपाल प्रथम :-

* इसे पाल वंश का दूसरा संस्थापक माना जाता है।

Raj Holkar
KD Job Updates
Raj Holkar

गुजरात का चालुक्य वंश

* गुजरात के चालुक्य वंश की स्थापना मूलराज -I ने की थी एवं अपनी राजधानी अन्हिलवाड़ को बनाया था।
* भीम -I के सामन्त विमल शाह ने माउन्ट (आबू, राजस्थान में दिलवाडा जैन मंदिर का निर्माण करवाया था।
* भीम -I के समय महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया था तथा भारी लूटपाट की थी।
* मूलराज -II ने 1178 ई० में आबू पर्वत के समीप मुहम्मद गौरी को परास्त किया
* 1187 ई० में कुतुबुद्दीन एबक ने भीम -II को परास्त किया था।

Scanned by CamScanner

चंदेल वंश (जेजाकभुक्ति) ③

* चंदेल वंश का प्रथम शासक नन्नुक था। चंदेश प्रतिहारों के सामन्त थे।
* यशोवर्मन ने खजुराहो के चतुर्भुज मंदिर (विष्णु मंदिर) का निर्माण करवाया।
* धंगदेव ने खजुराहो में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया।
* कीर्तिवर्मन ने महोबा के निकट कीरत सागर का निर्माण करवाया।

चौहान वंश शाकम्भरी (अजमेर के निकट)

* शाकंभरी में चौहान वंश की स्थापना वासुदेव ने की थी।
* ~~अजयपाल~~ (अजयराज) ने अजमेर (अजयमेरु) नगर की स्थापना की थी।
* प्रारंभ में चौहान शासक प्रतिहारों के सामंत थे। दसवीं शताब्दी के प्रारंभ में वाक्पतिराज प्रथम ने प्रतिहारों से स्वयं को स्वतंत्र कर लिया।
* अर्णोराज ने अजमेर के निकट सुल्तान महमूद की सेना को पराजित किया था।
* अर्णोराज ने दिल्ली, बुंदेलखंड एवं पंजाब के कुछ हिस्सों को जीता था परन्तु गुजरात के चालुक्य शासक कुमार पाल ने इसे हरा दिया।
* विग्रहराज चतुर्थ (विसलदेव) ने कुमार पाल को हराकर दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया।

⇒ पृथ्वीराज-III (पृथ्वीराज चौहान):- अन्य नाम: राय पिथौरा

* यह सोमेश्वर का पुत्र था जो 1178 ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
* 1182 ई० में पृथ्वीराज चौहान एवं चन्देल शासक परमार्दिदेव के बीच युद्ध हुआ इसमें परमार्दिदेव की पराजय हुई तथा परमार्दिदेव के लोक प्रसिद्ध सेना नायक आल्हा-ऊदल वीरगति को प्राप्त हुए।
* तराइन का प्रथम युद्ध:- सन 1191 ई० में मुहम्मद गोरी एवं पृथ्वीराज चौहान के बीच तराइन का प्रथम युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी बुरी तरह पराजित हुआ एवं घायल हुआ तथा अपनी सेना के साथ वापस चला गया।
* तराइन का द्वितीय युद्ध (1192):- सन् 1192 ई० को पुनः मुहम्मद गोरी एवं पृथ्वीराज चौहान के बीच युद्ध हुआ। परन्तु गोरी ने कुछ समय बाद प्रातः काल में चौहान की सेना पर आक्रमण किया। सेना को हमले का आभास नहीं था अतः चौहान की हार हुई एवं चौहान को बंदी बना लिया गया।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

⇒ **तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की हार के कारण :-**

* तराइन के प्रथम युद्ध में गौरी की भागती सेना का पीछा कर उसकी शक्ति को क्षीण न करना, अर्थात् गोरी की शक्ति पूरी तरह समाप्त न करना।
* संयोगिता के साथ प्रेम प्रसंग में व्यस्त रहकर आगामी हमले का आभास न करना।
* राजपूतों की वंशगत प्रतिष्ठा तथा अपने राज्यों के हित को सर्वोपरि मानने के कारण उनकी आपसी ईर्ष्या तथा वैमनस्य का लाभ मुहम्मद गोरी को मिला।
* तराइन के द्वितीय युद्ध से पहले गोरी से समझौता-वार्ता के संपूर्ण काल में पृथ्वीराज ने अपनी सेना को युद्ध के लिए सतर्क नहीं किया।

⇒ **संयोगिता प्रकरण :-** संयोगिता एवं पृथ्वीराज चौहान के प्रेम प्रसंग की जानकारी चन्दरबरदायी, अबुल फजल तथा चन्द्रशेखर के लेखों से मिलती है परन्तु कुछ इतिहासकार इसे केवल एक कहानी मानते हैं।

संयोगिता, गढ़वाल के शासक जयचंद की पुत्री थी तथा पृथ्वीराज के साथ संयोगिता का प्रेम था। जयचंद एवं पृथ्वीराज के बीच शत्रुता थी। इसी शत्रुता के कारण जयचंद ने ही मुहम्मद गोरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया था। जयचंद एवं पृथ्वीराज चौहान के बीच शत्रुता उस समय चरम पर पहुँच गयी जब संयोगिता के स्वयंवर से पृथ्वीराज चौहान ने संयोगिता का अपहरण कर लिया।

Raj Holkar

⇒ **चन्दरबरदायी :-** यह पृथ्वीराज चौहान के दरबार में कवि था। चन्दरबरदायी ने पृथ्वीराज रासो नामक काव्य की रचना की है। (अपभ्रंश भाषा में)

⇒ **जयानक :-** जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक संस्कृत महाकाव्य लिखा है।

* मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को बंदी बनाकर कुछ समय बाद उसकी हत्या कर दी थी एवं पृथ्वी राज चौहान के पुत्र गोविन्द को अपनी अधीनता में अजमेर का शासक बनाया।
* पृथ्वी राज चौहान के बाद भारतीय राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत हुई।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

राष्ट्रकूट वंश ⑤

* राष्ट्रकूटों के अभिलेख में उनका मूल स्थान लट्टलूर (लातूर, बीदर जिला) माना गया है किन्तु बाद में एलिचपुर (बरार) में इस वंश का राज्य स्थापित हुआ।

⇒ **दन्तिदुर्ग :-**

* राष्ट्रकूटों के स्वतंत्र राज्य की स्थापना दन्तिदुर्ग ने की थी। इसने अपनी राजधानी मान्यखेत (मालखण्ड) बनायी।
* इसने चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन को परास्त कर अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की।
* चालुक्य शासक विक्रमादित्य ने उसे पृथ्वीवल्लभ और खड्गावलोक की उपाधि दी
* दन्तिदुर्ग ने महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक की उपाधि धारण की।
* दन्तिदुर्ग ने हिरण्यगर्भदान नामक महायज्ञ किया।

Raj Holkar

⇒ **कृष्ण-I :-**

* कृष्ण प्रथम ने द्रविड शैली के एलोरा के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया
* कृष्ण प्रथम ने चालुक्य राज्य का अस्तित्व समाप्त कर दिया।

⇒ **गोविन्द -III :-**

* इसने पल्लवों, पाण्ड्यों, केरलों तथा गंग राजाओं के संघ को नष्ट कर दक्षिण में अपनी सार्वभौम सत्ता स्थापित की।

⇒ **अमोघवर्ष :-**

* यह राष्ट्रकूटों का अन्तिम महान शासक था।
* अमोघवर्ष ने कन्नड भाषा में कविराजमार्ग तथा प्रश्नोत्तरमलिका की रचना की।

दरबारी कवि :- जिनसेन ने "आदिपुराण" की रचना की।
शकटायन ने "अमोघवृति" की रचना की।
महावीराचार्य ने "गणितसारसंग्रह" की रचना की।

⇒ **राष्ट्रकूटों का राज्य चिन्ह :-** गरुड

⇒ **राष्ट्रकूटों की मुद्राएं :-** कलंज, गाह्यंक, कसु।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

भारत पर विदेशी आक्रमण

(6)

1. अरबों का आक्रमण

Raj Holkar

⇒ **मोहम्मद बिन कासिम :-**

* भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम अरब मुस्लिम मोहम्मद बिन कासिम था।
* मोहम्मद बिन कासिम के आक्रमण के समय सिंध का शासक दाहिर था।
* भारत में जजिया कर सर्वप्रथम मोहम्मद बिन कासिम ने लगाया था।
* ब्रह्मगुप्त द्वारा लिखित ब्रह्म सिद्धांत एवं खण्डखाद्य (खण्डखण्डवाद भी नाम है) का अरबी में अनुवाद भारतीय विद्वानों की सहायता से अल-फाजरी ने किया था। ब्रह्म सिद्धांत का अरबी नाम अल्म - उल - साहिब रखा गया।
* खगोल शास्त्र पर आधारित पुस्तक किताब - उल - जिज की रचना अल - फाजरी ने की।
* किताब - फुतुल - अल - बलदान का लेखक बिलादुरी है।
* पंचतंत्र का अरबी अनुवाद कलीलाह वा दिमना/कलिया वा दिमना कहलाता है।
* मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध एवं मुल्तान, महमनाशाद आदि को जीता किन्तु वे अधिक आगे नहीं बढ़ सके।

KD Job Updates

2. तुर्कों का आक्रमण

Raj Holkar

* अरबों के बाद भारत पर तुर्कों ने आक्रमण किया।

⇒ **अल्पतगीन :-**

* यह गजनी साम्राज्य व यामिनी वंश/गजनी वंश का संस्थापक था।

⇒ **सुबुक्तगीन :-**

* यह अल्पतगीन का दास एवं दामाद था।
* सुबुक्तगीन भारत पर आक्रमण करने वाला पहला तुर्क शासक था।

Scanned by CamScanner

महमूद गजनवी (7)

* महमूद गजनवी, सुबुक्तगीन का पुत्र था।
* महमूद गजनवी ने 1001 ई० से 1027 ई० के बीच भारत पर 17 बार आक्रमण किए।
* सुल्तान की उपाधि तुर्की शासकों ने प्रारंभ की थी। इसे यह उपाधि बगदाद के खलीफा ने प्रदान की। सुल्तान की उपाधि लेने वाला पहला शासक महमूद गजनवी था।

Raj Holkar

⇒ महमूद गजनवी के आक्रमण के कारण :-

* अपने राज्य की सुरक्षा हेतु शाही वंश पर आक्रमण करना।
* राज्य विस्तार एवं अपने शत्रुओं को पराजित करने के लिए धन की आपूर्ति करना।
* अपने विरुद्ध भारतीय राजाओं को संगठित या दलबंदी करने का अवसर नहीं देना चाहता था।
* इस्लाम का प्रचार-प्रसार करना भी इसका एक गौण उद्देश्य था।

⇒ आक्रमण के परिणाम :-

Raj Holkar

* उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति में आमूल-चूल परिवर्तन।
* मुस्लिम व्यापारियों के माध्यम से मध्य एवं पश्चिम एशिया के साथ भारतीय व्यापार में वृद्धि।
* मुस्लिम व्यापारियों के साथ इस्लाम प्रचारकों का भारत में प्रवेश
* लाहौर अरबी तथा फारसी साहित्य का केन्द्र बन गया।
* मुस्लिम राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

⇒ गजनवी के भारतीय आक्रमण :-

महमूद गजनवी के कुल 17 आक्रमण :- 1. पंजाब का सीमावर्ती क्षेत्र 2. पेशावर 3. भटिण्डा 4. मुल्तान 5. मुल्तान 6. वैहिंद (पेशावर) 7. नारायणपुर (अलवर) 8. मुल्तान 9. थानेश्वर 10. नन्दन 11. कश्मीर 12. मथुरा व कन्नौज 13. कालिंजर 14. कश्मीर 15. ग्वालियर व कालिंजर 16. सोमनाथ मंदिर 17. सिंध के जाट।

* महमूद गजनवी का पहला आक्रमण हिन्दुशाही शासक जयपाल के विरुद्ध था।
* वैहिन्द की पहली लड़ाई :- महमूद गजनवी एवं जयपाल [गजनवी की विजय]
  वैहिन्द की दूसरी लड़ाई :- गजनवी एवं आनन्दपाल [गजनवी की विजय]

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* महमूद गजनवी ने 1015 में कश्मीर पर आक्रमण किया परन्तु असफल रहा।

* 1025 ई० में महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया तथा शिवमन्दिर को नष्ट कर दिया और अपार धन संपदा लूटी। यह आक्रमण चालुक्य (सोलंकी) वंश के शासक भीम देव / भीम - I के समय में हुआ।

नोट : महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का उद्देश्य केवल लूटपाट, एवं धन प्राप्ति था वह भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित करने अथवा अपना साम्राज्य विस्तार के लिए भारत नहीं आया था।

तर्क : गजनवी विजित प्रदेशों में स्थायी रूप से नहीं रहता था वह बार- बार गजनी लौट जाता था।
- गजनवी ने न तो विजित प्रदेशों को अपने राज्य में मिलाया और न ही विजित प्रदेशों में कुछ स्थायी बन्दोबस्त किया।
- गजनवी भारत से धन लूटकर मध्य एशिया में विशाल साम्राज्य स्थापित करना चाहता था।

* गजनवी ने मथुरा, के कई मंदिरों को तोड़ा यह भारत का बेथलेहम कहा जाता है।
* गजनवी को भारतीय इतिहास में बुतशिकन (मूर्तिभंजक) के नाम से जाना जाता है।

⇒ अलबरूनी :- अलबरूनी फारसी भाषा के लेखक थे जो महमूद गजनवी के साथ भारत आए प्रसिद्ध पुस्तक किताब उल हिन्द (तहकीक - ए - हिन्द) की रचना की।

⇒ फिरदौसी :- ये फारसी कवि थे इन्होंने शाहनामा महाकाव्य की रचना की

⇒ किताब उल हिन्द :- भाषा : फारसी कुल अध्याय : 80 लेखक : अलबरूनी

अंग्रेजी अनुवाद : एडवर्ड सी सचाऊ ने "अलबरूनी इंडिया : एन अकाउन्ट ऑफ रिलीजन नाम से।

हिन्दी अनुवाद : रजनीकान्त शर्मा ने किया।

विषय : भारतीय समाज एवं संस्कृति।

Raj Hollkar

- किताब उल हिन्द में भारतीय जलवायु, प्राकृतिक स्थिति, मुद्राप्रणाली, माप तौल, भारतीय समाज, रीति - रिवाज, त्योहार, उत्सव, खान - पान, वेश भूषा, वर्ण व्यवस्था, वेद, वेदान्त, दर्शन, पुराण, शास्त्र, धर्म आदि। के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया है।
- किताब - उल - हिन्द में भारतीय राजनीतिक स्थिति के बारे में नगण्य लिखा है।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मुहम्मद गोरी (9)

* अफगानिस्तान में गजनी वंश के पतन के बाद 'गोरी कबीले' की स्थिति मजबूत हुई। मुहम्मद गोरी इस कबीले का शासक था।
* मुहम्मद गोरी शंसबानी वंश का शासक था।
* मुहम्मद गोरी का भारत पर आक्रमण करने का मुख्य उद्देश्य मुस्लिम राज्य की स्थापना करना था।
* मुहम्मद गोरी का भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई० में मुल्तान पर था।
* 1178 ई० के गुजरात आक्रमण में गुजरात के शासक भीम-II ने मुहम्मद गोरी को बुरी तरह पराजित किया था।

⇒ तराइन का प्रथम युध्द (1191 ई०):- मुहम्मद गोरी एवं पृथ्वीराज-III (पृथ्वीराज चौहान) के मध्य। पृथ्वीराज चौहान की विजय।

⇒ तराइन का द्वितीय युध्द (1192 ई०):- मुहम्मद गोरी एवं पृथ्वीराज-III (पृथ्वीराज चौहान) के मध्य। मुहम्मद गोरी की विजय

* मुहम्मद गोरी को भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है
* चंदावर का युध्द (1194 ई०):- मुहम्मद गोरी एवं जयचन्द के मध्य। जयचन्द की पराजय।
* मुहम्मद गोरी भारत में गोमल दर्रे को पार करके आया था।
* कन्नौज विजय के पश्चात् मुहम्मद गोरी के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी की आकृति बनी है। तथा मुहम्मद गोरी का नाम मुहम्मद बिन साम अंकित था।
* मुहम्मद गोरी के सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को हानि पहुँचायी थी।
* 1206 ई० में खोखरों ने मुहम्मद गोरी की हत्या कर दी।

Raj Holkar

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

⇒ तुर्की आक्रमण के विरुद्ध राजपूत राजाओं के हार के कारण :-

- तुर्की आक्रमण के पूर्व भारत अनेक राज्यों में विभाजित था अतः राजनीतिक एकता की कमी एवं केन्द्रशक्ति का अभाव।
- वर्ण एवं जाति व्यवस्था के कारण भारतीय समाज कई वर्गों में विभाजित था इसके कारण सामाजिक दुर्बलता।
- राजपूतों में वंशगत श्रेष्ठता की भावना के कारण झगड़ालू प्रवृत्ति एवं अनेक सामाजिक बुराइयों का जन्म हुआ तथा आपसी झगड़ों में वृद्धि।
- भारतीय समाज में नियतिवादी तथा भाग्यवादी विश्वास के कारण समाज विदेशी आक्रमण तथा यातनाओं को पूर्वजन्म के कर्मों का फल मानने लगा और इस कारण जनसाधारण ने एकजुट होकर इनका प्रतिरोध नहीं किया।
- तुर्की सेना की रणनीति, अच्छी नस्ल के घोड़े एवं हथियार।
- राजपूतों की जुटाई हुई सामन्ती सेना राजा के प्रति पूर्ण रूप से निष्ठावान नहीं होती थी।

Raj Holkar

⇒ तुर्की आक्रमण के प्रभाव :-

- भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना
- भारत में सामन्तवाद का ह्रास होने लगा एवं शक्ति का केन्द्र राजा बन गया।
- संसार के काफी [redacted] देशों के साथ व्यापार बढ़ा।
- मुस्लिम समाज में भेदभाव नहीं था अतः राजपूतों के बाद समाज में भेद भाव में कमी आयी।
- 12वीं शताब्दी में चरखा ईरान से भारत आया एवं कपड़े के उत्पादन को बढ़ावा मिला। [इरफान हबीब]
- स्थापत्य कला में परिवर्तन आने लगे।
- दिल्ली में सल्तनत की स्थापना से शहरी अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ। व्यापार एवं वाणिज्य में वृद्धि हुई।
- बड़ी संख्या में हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

दिल्ली सल्तनत (11)

* मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को अपना भारतीय ठिकानों का प्रतिनिधि नियुक्त किया। मुहम्मद गोरी ने ऐबक को मलिक का पद प्रदान किया।

दिल्ली सल्तनत के वंश

1. गुलाम/ममलूक वंश [1206-1290 ई०]
2. खिलजी वंश [1290-1320 ई०]
3. तुगलक वंश [1320-1398 ई०]

विघटन प्रारंभ/काल [1398 से 1526 ई०]

4. सैय्यद वंश [1414-1451 ई०]
5. लोदी वंश [1451-1526 ई०]

गुलाम/ममलूक वंश [1206-1290 ई०]

* इस वंश का नाम मामलूक वंश [गुलामी बंधन से मुक्त] सर्वाधिक उपयुक्त है क्योंकि इस वंश के 11 शासकों में से केवल 3 शासक दास थे उन्हें भी पद ग्रहण से पूर्व दासता से मुक्त कर दिया गया था।
* दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश था।
* मामलूक वंश के शासकों ने 3 राजवंशों की स्थापना की।

⇒ मामलूक वंश के राजवंश :-

Raj Holkar

मामलूक वंश [1206-1290 ई०]

[कुतुबी राजवंश]	[शमशी राजवंश]	[बलबनी राजवंश]
- कुतुबुद्दीन ऐबक	- इल्तुतमिश	- गियासुद्दीन बलबन
- आरामशाह	- रुकनुद्दीन फिरोजशाह	- मोइनुद्दीन कैकुबाद
	- रजिया सुल्तान	- क्यूमर्स
	- बहरामशाह	
	- नासिरुद्दीन महमूद	

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

1. कुतुबी वंश

⇒ कुतुबुद्दीन ऐबक :-

* **प्रारंभिक जीवन :-** कुतुबुद्दीन ऐबक तुर्क जनजाति का था।
  - काजी फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी ने सर्वप्रथम ऐबक को खरीदा एवं धनुर्विद्या तथा घुड़सवारी की शिक्षा दी।
  - ऐबक कुरान पढ़ता था एवं कुरान याद थी इस कारण वह कुरानख्वां के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
  - बाद में मुहम्मद गोरी ने उसे खरीद लिया।
  - मुहम्मद गोरी ने उसे अमीर-ए-आखूर का पद दिया।
  - ~~को~~ कुतुबुद्दीन ऐबक, मुहम्मद गोरी का सबसे भरोसेमंद था इसी कारण गोरी ने ऐबक को अपने भारतीय विजित प्रदेशों की कमान सौंपी।

Raj Holkar

* **भारत में ऐबक का शासनकाल :-**

भारत में ऐबक का जीवन 3 चरणों में विभाजित था -

1192 ई. - 1206 ई. :- गोरी के प्रतिनिधि के रूप में एवं कार्य सैनिक गतिविधियों से पूर्ण।

1206 - 1208 ई. :- भारतीय सल्तनत में मलिक या सिपहसालार के पद पर एवं कार्य राजनयिक।

1208 - 1210 ई. :- स्वतंत्र भारतीय राज्य का औपचारिक शासक के रूप में।

नोट :- ऐबक का अनौपचारिक राज्याभिषेक 25 जून 1206 को लाहौर में हुआ परन्तु औपचारिक मान्यता गोरी के भतीजे गयासुद्दीन महमूद द्वारा 1208 ई. में प्राप्त हुई। अब ऐबक भारतीय सल्तनत का औपचारिक शासक बना।

* ऐबक को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है।
* ऐबक को दानशीलता के कारण लाखबख्श एवं पीलबख्श (~~हथियों~~ हाथियों का दान करने वाला) कहा जाता है।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

* हसन निजामी एवं फर्रुखमुद्दीर ऐबक के दरबार में विद्वान थे।
* ऐबक ने दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण प्रारंभ करवाया।
* ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया।

⇒ अढ़ाई दिन का झोंपड़ा: यह अजमेर में विग्रहराज-IV द्वारा बनाए गए संस्कृत महाविद्यालय के स्थान पर कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा बनाया गया।

* एबक के सेनानायक बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त किया था।

Raj Holkar

⇒ कुतुबमीनार:- इसका निर्माण कार्य कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रारंभ किया था। बाद में इल्तुतमिश ने इसका निर्माण कार्य पूरा करवाया। ऐबक ने केवल एक/पहली मंजिल का निर्माण करवाया था। इल्तुतमिश ने इसकी 3 मंजिलों का निर्माण करवाया [अबतक कुल मंजिल-4]। 1369 ई. में बिजली गिरने से मीनार की ऊपरी मंजिल क्षतिग्रस्त हो गयी। फिरोज शाह तुगलक ने क्षतिग्रस्त मंजिल की मरम्मत करवायी एवं एक नई मंजिल का निर्माण करवाया [अब कुल मंजिल-5]। 1505 ई. में भूकम्प की वजह से मीनार को क्षति पहुँची बाद में सिकन्दर लोदी ने इसकी मरम्मत करवायी।

* कुतुब मीनार का नाम सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया।

KD Job Updates
Raj Holkar

* कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु चौगान (पोलो) खेलते हुए घोड़े से गिरकर हुई।
* कुतुबुद्दीन ऐबक का मकबरा लाहौर में स्थित है।
* ऐबक की राजधानी लाहौर में थी परन्तु मुख्यालय दिल्ली [इन्द्रप्रस्थ] में था।
* ऐबक का संभवतः कोई बेटा नहीं था। ऐबक की अचानक मृत्यु के बाद कुछ तुर्क अमीर एवं मलिकों ने आरामशाह को शासक नियुक्त कर दिया। बाद में बदायुँ के गवर्नर इल्तुतमिश ने आरामशाह को पराजित कर सत्ता अपने हाथ में ले ली।

Scanned by CamScanner

2. शम्शी राजवंश (14)

* इल्तुतमिश इल्बारी जनजाति एवं शम्शी वंश से था। इल्तुतमिश ने शम्शी वंश की स्थापना की।

Raj Holkar

इल्तुतमिश

* इल्तुतमिश, ऐबक का दामाद एवं बदायुं का गवर्नर (प्रशासक) था।
* इल्तुतमिश को अमीर ए शिकार का पद दिया गया।
* इल्तुतमिश भारत में तुर्की शासन का वास्तविक संस्थापक था।
* इल्तुतमिश ने कुतुबमीर को बनवाकर पूरा किया।
* इल्तुतमिश ने इक्ता व्यवस्था की शुरुआत की। RajHolkar

⇒ इक्ता व्यवस्था :-

इक्ता/अक्ता सल्तनत काल में एक प्रकार की भूमि थी जो सैनिक एवं असैनिक अधिकारियों को उनकी सेवाओं के लिए वेतन के रूप में प्रदान की जाती थी। इस भूमि से प्राप्त राजस्व, भूमि प्राप्तकर्ता (इक्ता-धारी) व्यक्ति को प्राप्त होता था। पद समाप्ति या सेवा समाप्ति के बाद यह भूमि सरकार द्वारा वापस ले ली जाती थी।

* इल्तुतमिश सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला दिल्ली का पहला शासक था। इल्तुतमिश ने यह उपाधि औपचारिक रूप से खलीफा अलमुंत सिर बिल्लाह से प्राप्त की थी।
* इल्तुतमिश पहला तुर्क शासक था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाए। इल्तुतमिश ने चांदी का टंका एवं तांबे का जीतल प्रचलित किए। चांदी का सिक्का 175 ग्रेन का था।
* विदेशों में प्रचलित टंकों पर टकसाल का नाम लिखने की परंपरा को भारतवर्ष में प्रचलित करने का श्रेय इल्तुतमिश को दिया जा सकता है।
* इल्तुतमिश ने दिल्ली को राजधानी बनाया।
* 1229 में इल्तुतमिश को खलीफा से खिअलत पत्र प्राप्त जिससे इल्तुतमिश वैध सुल्तान और दिल्ली सल्तनत स्वतंत्र राज्य बन गया। [18 फरवरी 1229]

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* भारत में मुस्लिम प्रभुसत्ता का श्रीगणेश इल्तुतमिश ने ही किया।

⇒ तराइन का तीसरा युद्ध: [1215-1216 ई०]

इल्तुतमिश एवं यल्दुज / यल्दौज के बीच हुआ जिसमें इल्तुतमिश विजयी रहा। परिणाम: इस विजय से दिल्ली का स्वतंत्र अस्तित्व निश्चित हो गया एवं गजनी से अंतिम रूप से संबंध विच्छेद हो गया।

* इल्तुतमिश को भारत में गुम्बद निर्माण का पिता कहा जाता है।

Raj Holkar

⇒ चहलगानी:-

सल्तनतकाल में चहलगानी 40 तुर्क सरदारों/यादासों का समूह था। जो इल्तुतमिश ने स्थापित किया था ये सरदार तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था में सुल्तान को अपना सहयोग देकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। चहलगानी का अंत बलवन ने किया।

KD Job Updates

* इल्तुतमिश ने उज्जैन के महाकाल / महाकालेश्वर मंदिर को तुड़वाया था।
* इल्तुतमिश ने सुल्तान के पद को वंशानुगत बनाया।
* इल्तुतमिश ने अपने महल के सामने संगमरमर की 2 शेरों की मूर्तियां स्थापित करवायी एवं उनके गले में घंटियाँ लटकाई। इन घण्टियों को बजाकर कोई भी व्यक्ति न्याय की माँग कर सकता था।
* मंगोल नेता चंगेज खाँ, जलालुद्दीन मंगबरनी का पीछा करते हुए भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा तक इल्तुतमिश के शासन काल में आया था।
* इल्तुतमिश ने 1226 ई० में रणथम्भौर पर विजय प्राप्त की थी।
* इल्तुतमिश के शासन काल में न्याय मांगने वाला व्यक्ति लाल रंग के वस्त्र पहनता था।

Raj Holkar

* इल्तुतमिश का सांस्कृतिक योगदान:-
  - अपने पुत्र नासिरुद्दीन की कब्र पर सुल्तानगढ़ी का मकबरा बनवाया।
  - जोधपुर में अतारकिन दरवाजा बनवाया।
  - बदायुं में हौज शम्शी एवं शम्शी ईदगाह का निर्माण करवाया।
* इल्तुतमिश के दरबार में मिनहाज-उस-सिराज एवं मलिक ~~मजुद्दीन~~ ताजुद्दीन विद्वान थे।

Scanned by CamScanner

⇒ इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी :-

* इल्तुतमिश की मृत्यु 30 अप्रैल, 1236 ई० में दिल्ली में हुई थी। दिल्ली में ही इल्तुतमिश को दफनाया गया था।
* इल्तुतमिश ने अपना उत्तराधिकारी रजिया (पुत्री) बनाने की इच्छा व्यक्त की थी। परन्तु तुर्क एक स्त्री को अपना शासक नहीं बनाना चाहते थे। इसी कारण इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद रुकन्नुद्दीन फिरोजशाह को गद्दी पर बैठाया गया।

रजिया सुल्तान

Raj Holkar

* रुकन्नुद्दीन फिरोजशाह एक अयोग्य शासक था। इसके शासन में जगह-जगह विद्रोह होने लगे इसका लाभ उठाकर रजिया सुल्तान ने सत्ता पर अधिकार कर लिया।
* रजिया ने लाल कपड़े पहनकर दिल्ली की जनता से न्याय मांगा। जनता ने रजिया का समर्थन किया इस प्रकार उत्तराधिकार के प्रश्न पर पहली बार स्वयं जनता ने निर्णय लिया।

⇒ रजिया के विरोधी तुर्क अमीर : निजामुलमुल्क जुनैदी, मलिक अलाउद्दीन जानी, मलिक सैफुद्दीन कूची, मलिक ईनुद्दीन कबीर खां अयाज और मलिक ईजुद्दीन सलारी प्रमुख थे।

* रजिया ने पर्दा त्याग दिया एवं पुरुषों के समान कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर जनता के सामने आने लगी।
* रजिया के शासन में 'अक्तादारों', 'चहलगानी', 'तुर्की अमीर तुर्कों' ने विद्रोह किया जिससे शासन करने में अनेक कठिनाइयां आयी।

⇒ रजिया के पतन के कारण :-

i) तुर्की अमीरों की बढ़ती हुई शक्ति
ii) रजिया का स्त्री होना (मिनहाज के अनुसार)
iii) रजिया का याकूत [अबीसीनियाई हब्सी, इसे रजिया ने अमीरे आखूर / अस्तबल का प्रधान बनाया था। इस कारण चहलगानी (चालीसा) नाखुश थे] का प्रेमसंबंध। [याकूत - मलिक जमालुद्दीन याकूत]
iv) गैर तुर्कों का प्रतिस्पर्धी दल बनाना।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

मुइजुद्दीन बहरामशाह

* रजिया के बाद मुईजुद्दीन बहरामशाह सुल्तान बना।
* इसके शासनकाल में सुल्तान की शक्ति एवं अधिकारिता को कम करने के लिए तुर्की अमीरों ने 'नायब ए मुमलकत' का पद की रचना की।

नायब ए मुमलकत :- यह पद संरक्षक के समान था जिसके पास सुल्तान के समान शक्ति एवं पूर्ण अधिकार थे।

* वास्तविक शक्ति एवं सत्ता के अब 3 दावेदार थे – सुल्तान, वजीर एवं नायब
* प्रथम नायब ए मुमलकत :- मलिक इख्तियारुद्दीन ऐतगीन।
* इसके शासन काल में 1241 ई० में मंगोल आक्रमण हुआ।
* वजीर मुहज्जबुद्दीन ने अमीर तुर्कों को सुल्तान के खिलाफ भड़का दिया 1242 ई० में सुल्तान की हत्या कर दी।

अलाउद्दीन मसूदशाह

Raj Holkar

* बहरामशाह की हत्या के बाद मलिक ईजुद्दीन किश्लू खाँ ने इल्तुतमिश के महलों पर कब्जा कर लिया एवं स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया परंतु तुर्क अमीर राजवंश में परिवर्तन नहीं चाहते थे। किश्लू खां ने नागौर का इक्ता एवं एक हाथी लेकर अपना पद एवं सिंहासन का दावा वापस ले लिया।
* अमीरों ने अलाउद्दीन मसूदशाह को सुल्तान चुना।
* मलिक कुत्बुद्दीन हसन को नायब बनाया गया।
* नज्मुद्दीन अबु बक्र वजीर बनाया गया।

⇒ गयासुद्दीन बलबन :- यह 'चहलगानी' का सदस्य था। इसने बहरामशाह के विरुद्ध विद्रोह में सबसे अधिक साहस दिखाया था। 1249 ई० में इसे उलुग खाँ की उपाधि दी गयी थी।

* बलबन ने ~~नासिरुद्दीन~~ महमूद को सुल्तान के पद पर बैठाने के लिए षड्यंत्र रचा एवं चालीसा के महत्वपूर्ण अधिकारी तुर्कों को अपने पक्ष में ले लिया।
* 4 वर्ष 1 माह के शासन के बाद अलाउद्दीन मसूदशाह को सुल्तान पद से हटाकर कारागार में डाल दिया गया। कारागार में उसकी मृत्यु हो गयी।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

नासिरुद्दीन महमूद (18)

* यह एक नाममात्र का सुल्तान था सारी शक्ति एवं अधिकार चालीसा तथा बलवन के हाथ में थे।
* 1266 ई० में अचानक मृत्यु हो गयी। इसका कोई पुत्र नहीं था।
* यह शम्शी राजवंश का अंतिम शासक था।
* नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद गयासुद्दीन बलवन शासक बना। बलवन ने बलवनी वंश की ~~स्थापना~~ स्थापना की।

3. बलवनी राजवंश

बलवनी राजवंश की स्थापना गयासुद्दीन बलवन ने की। बलवन गुलाम वंश तथा बलवनी राजवंश का महान शासक था।

गयासुद्दीन बलवन

Raj Holkar

* बलवन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था। वह इल्बरी तुर्क था।
* बलवन चहलगानी/चालीसा का सदस्य था।
* बलवन रजिया के विरुद्ध विद्रोह में शामिल था।
* बलवन ने अलाउद्दीन मसूद शाह के विरुद्ध षड्यंत्र रचा एवं नासिरुद्दीन को सुल्तान बनाया।
* नासिरुद्दीन महमूद के समय बलवन नायब था तथा वास्तविक सत्ता का उपयोग बलवन ने ही किया।
* बलवन ने सत्ता संभालते ही चहलगानी/चालीसा को समाप्त कर दिया
* बलवन ने लौह एवं रक्त की नीति के द्वारा अपने विरोधियों को रोका।

⇒ लौह एवं रक्त की नीति अपनाने के कारण :-

i) सुल्तान पद की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करना।
ii) अमीरों की बढ़ती शक्ति को समाप्त करना।
iii) मंगोल एवं राजपूतों के खतरों के विरुद्ध शक्तिशाली सुल्तान पद एवं राज्य की स्थापना करना।
iv) सत्ता का शक्ति केन्द्र सुल्तान को बनाना।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

⇒ बलवन का राजत्व सिद्धांत :-

* बलवन का राजत्व सिद्धांत शक्ति, प्रतिष्ठा एवं न्याय पर आधारित था।
* बलवन ने ईश्वर, शासक तथा जनता के बीच त्रिपक्षीय संबंध को राज्य का आधार बनाने का प्रयत्न किया। जनहित को शासन का व्यवहारिक आदर्श बनाया।
* बलवन ने फारस के इस्लामी राजत्व के राजनीतिक सिद्धांतों एवं परंपराओं के आधार पर अपने शासन को संगठित किया।
* राजा को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि 'नियाबते खुदाई' माना गया एवं राजा 'जिल्ले अल्लाह' अर्थात् ईश्वर का प्रतिबिंब है और उसका हृदय दैवी-प्रेरणा व कांति का भण्डार है।
* बलवन ने फारसी परंपरा 'सिजदा' अर्थात् घुटनों के बल बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना शुरू किया। एवं 'पाबोस' अर्थात् पेट के बल बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना, की प्रथा शुरू की।

⇒ इल्तुतमिश एवं बलवन का तुलनात्मक अध्ययन :-

इल्तुतमिश	बलवन
- इल्तुतमिश को कुतुबुद्दीन ऐबक ने खरीदा था।	- बलवन को इल्तुतमिश ने खरीदा था।
- ब इल्तुतमिश ने चहलगानी/चालीसा दल का गठन किया।	- बलवन ने चालीसा को समाप्त कर दिया।
- इल्तुतमिश ने बाहरी व आंतरिक समस्याओं पर नियंत्रण व राज्य विस्तार किया	- बलवन ने आंतरिक प्रशासन पर विशेष बल दिया एवं राजत्व का सिद्धांत दिया। बलवन ने साम्राज्य विस्तार नहीं किया।
- स्थापित व्यवस्था अस्थायी थी एवं प्रभाव अल्पकालीन था।	- स्थायी व्यवस्था की।

⇒ अन्य तथ्य :-

Raj Hotkar

* बलवन ने पारसी नववर्ष की शुरुआत में मनाए जाने वाले उत्सव नौरोज की भारत में शुरुआत की।
* बलवन ने दीवान ए विजारत (वित्त विभाग) को सैन्य विभाग से अलग कर दीवान-ए-आरिज (सैन्य विभाग) की स्थापना की।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ बलवन के पद :-

1. अमीर ए शिकार - रजिया सुल्तान के समय
2. अमीर-ए-आखूर - बहरामशाह के समय
3. अमीर-ए-हाजिब - अलाउद्दीन मसूदशाह के समय
4. नायब-ए-मुमलकत - नासिरुद्दीन महमूद के समय।

⇒ दरबार के विद्वान :-

अमीर खुसरो एवं अमीर हसन।

Raj Holkar

कैकुवाद

* बलवन ने अपने पौत्र कैखुसरो को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया परन्तु बलवन की मृत्यु के बाद तुर्क अमीर फिर सक्रिय हो गए तथा कैखुसरो के स्थान पर कैकुवाद को सुल्तान मनोनीत किया।

क्यूमर्स / कैमूर्स

* कैकुवाद की हत्या के बाद उसके नाबालिग पुत्र कैमूर्स को गद्दी पर बिठाया एवं जलालुद्दीन खिलजी इसका संरक्षक नियुक्त किया गया।
* 3 माह पश्चात् कैमूर की हत्या कर दी एवं जलालुद्दीन स्वयं सुल्तान बन गया तथा गुलाम / ममलूक वंश के बाद खिलजी वंश का उदय हुआ।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

खिलजी वंश

* खिलजी तुर्क ही थे जो महमूद गजनवी एवं मुहम्मद गोरी के समय भारत आए तथा दिल्ली के सुल्तानों के समय सेना एवं अन्य प्रशासनिक पदों पर नौकरी करने लगे तथा सल्तनत काल की अव्यवस्था का फायदा उठाकर सल्तनत के स्वामी बन बैठे।
* भारत में खिलजी वंश का संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी था।

जलालुद्दीन खिलजी

RajHolKar

* जलालुद्दीन खिलजी एक निष्ठावान, निष्कपट, दयालु और उदार व्यक्ति था
* जलालुद्दीन खिलजी का राज्याभिषेक किलोखरी (कूलागढ़ी) के महल में हुआ।
* जलालुद्दीन एक वृद्ध ~~मुसलमान~~/शासक था उसने अपने दुश्मनों के विरूध्द दुर्बल नीति अपनायी।
* सिद्दि मौला को विद्रोही गतिविधि में संलिप्त होने के कारण मृत्युदण्ड दिया

⇒ **नव मुसलमान :-** 1292 ई. में हलाकू (मंगोल नेता) के पौत्र अब्दुल्ला के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण हुआ परन्तु मंगोल पराजित हुए उनमें से कुछ मंगोलों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तथा दिल्ली के मुगलपुरा में बस गए ये नवमुसलमान कहलाये।

* जलालुद्दीन की हत्या 1296 ई. में उसके भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने की एवं स्वयं सुल्तान बन गया।

KD Job Updates

अलाउद्दीन खिलजी

Raj Holkar

* अलाउद्दीन खिलजी के पिता का नाम शिहाबुद्दीन खिलजी था जो जलालुद्दीन खिलजी का भाई था।
* जलालुद्दीन खिलजी ने अपनी पुत्री का विवाह अलाउद्दीन खिलजी से किया।
* भिलसा, चन्देरी एवं देवगिरी पर सफल अभियानों से अलाउद्दीन खिलजी को अपार धन प्राप्त हुआ।
* अलाउद्दीन ने जलालुद्दी खिलजी की हत्या करवायी एवं सत्ता हासिल की।

Scanned by CamScanner

⇒ जलालुद्दीन को मारने में शामिल षडयंत्रकारी :-

i) अलाउद्दीन खिलजी ii) उलूक खां (अलाउद्दीन का भाई) iii) मोहम्मद सलीम

* दक्षिण भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम मुसलमान अलाउद्दीन खिलजी था एवं विजय प्राप्त की
* अलाउद्दीन खिलजी को कड़ा (मानकपुर) में सुल्तान घोषित किया गया एवं राज्याभिषेक दिल्ली में बलवन के लाल महल में हुआ।

Raj Holkar

⇒ अलाउद्दीन के समय हुए विद्रोह :-

i) गुजरात विजय के पश्चात लूट के माल को लेकर नव मुसलमानों ने विद्रोह किया ये रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव से जा मिले।
ii) अकत खां का विद्रोह
iii) मलिक उमर (बदायुं का गवर्नर) एवं मंगू खां (अवध का गवर्नर) का विद्रोह
iv) दिल्ली में हाजी मौला का विद्रोह।

⇒ विद्रोह के दमन के लिए जारी अध्यादेश :-

a. अमीर वर्ग की भूमि/संपत्ति जब्त
b. गुप्तचर प्रणाली का गठन
c. दिल्ली में शराब बंद कर दी।
d. अमीरों के परस्पर मेल मिलाप एवं त्यौहारों पर रोक)

Raj Holkar
KD Job Updates

⇒ खिलजी का राजत्व सिद्धांत :-

* अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन के लिए राजत्व के सिद्धांत का प्रतिपादन किया
* अलाउद्दीन को जिल्ले-इलाही माना गया परन्तु यह सिद्धांत 'शरीयत' के सिद्धांत पर आधारित नहीं था। इसमें इस्लामी सिद्धांतों का सहारा नहीं लिया गया। धर्म को राजनीति से अलग रखा।
* अलाउद्दीन ने खलीफा की सत्ता को मान्यता दी लेकिन प्रशासन में उनके हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं किया।
* उसने इस्लाम, उलेमा, खलीफा किसी का सहारा नहीं लिया वह निरंकुश राजतंत्र में विश्वास करता था।
* अलाउद्दीन ने बलवन की जातीय उच्चतावादी नीति को त्याग दिया और योग्यता के आधार पर पदों का वितरण किया।

Scanned by CamScanner

⇒ अलाउद्दीन खिलजी एवं सल्तनत का विस्तार :-

i) उत्तर भारत पर किए गए अभियान :-

Raj Holkar

a. गुजरात अभियान :-

* अलाउद्दीन का प्रथम सैन्य अभियान 1298 ई० में गुजरात के विरुद्ध था।
* इस अभियान का नेतृत्व उलुग खां एवं नुसरत खां ने किया।
* गुजरात का बघेल राजपूत रायकरन (कर्णदेव-III) पराजित हुआ।
* ~~गुजरात अभियान से वापसी के समय~~
* गुजरात मार्ग में जैसलमेर विजित किया।
* गुजरात अभियान से ही मलिक काफूर को लाया गया। मलिक काफूर को 1000 दीनार में खरीदा गया था इसी कारण उसे हजार दीनारी भी कहा जाता था।

b. रणथम्भौर अभियान :-

* 1301 ई० में उलुग खां एवं नुसरत खां के नेतृत्व में रणथम्भौर पर आक्रमण किया गया।
* पहले रणथम्भौर के राणा हम्मीर देव ने आक्रमण विफल किया तथा नुसरत खां मारा गया। इसके बाद स्वयं अलाउद्दीन खिलजी ने कमान संभाली।
* राणा हम्मीर देव के प्रधान मंत्री रणमल ने धोखा किया। हम्मीर देव पराजित हुआ एवं मारा गया।
* हम्मीर ~~काव्य~~ काव्य के अनुसार, रतिपाल एवं कृष्णपाल इस पराजय के प्रमुख कारण थे।
* इस अभियान में नव मुसलमानों ने राणा हम्मीर देव का साथ दिया।
* हम्मीर देव की मृत्यु के बाद रणथम्भौर की राजपूत महिलाओं ने जौहर किया। राजस्थान में जौहर का यह प्रथम साक्ष्य था।

जौहर :- जौहर के दौरान एक अग्निकुण्ड बनाया जाता था। पुरुषों द्वारा युद्ध में जाते समय केसरिया वस्त्र धारण किए जाते थे यह केसरिया करना कहा जाता था। यदि युद्ध में राजा मारा जाता तो रानी एवं अन्य स्त्रियाँ अपने स्वाभिमान एवं इज्जत की रक्षा के लिए इस अग्निकुण्ड में कूदकर जान देती थी एवं अपने गौरव, सतीत्व ~~की के लिए~~ की रक्षा करती थी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

C. चित्तौड़गढ़ पर अभियान :-

* चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण 1303 ई० में किया गया। इस आक्रमण का नेतृत्व अलाउद्दीन खिलजी ने किया। इससे पूर्व यह किसी सुल्तान ने नहीं जीता था।

⇒ आक्रमण का कारण :- Raj Holkar

- चित्तौड़गढ़ का किला सामरिक महत्व का था जो अलाउद्दीन के दक्षिण भारत के अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता।
- चित्तौड़ के राजा रतनसिंह की रानी ~~पद्मिनी~~ पद्मिनी (पद्मावती) को प्राप्त करना। [मलिक मुहम्मद जायसी की रचना पद्मावत् के अनुसार]

* इस युद्ध में रतनसिंह वीरगति को प्राप्त हुए एवं रानी पद्मिनी ने जौहर किया।
* इस युद्ध में चित्तौड़गढ़ के दो वीर सैनिक गोरा एवं बादल वीरगति को प्राप्त हुए।
* चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर, चित्तौड़गढ़ को अपने पुत्र खिज्र खाँ को सौंप दिया गया एवं इसका नाम खिज्राबाद कर दिया गया।
* इस अभियान में अमीर खुसरो अलाउद्दीन खिलजी के साथ था परन्तु ~~खिलजी~~ अमीर खुसरो ने पद्मावती की घटना का कोई उल्लेख नहीं किया।

D. मालवा पर अभियान :-

* इस अभियान का नेतृत्व आइनुलमुल्क मुल्तानी ने किया।
* मालवा का शासक महलकदेव भाग गया एवं मालवा भी सल्तनत का हिस्सा बन गया।

E. सिवाना पर अभियान :-

नेतृत्व : कमालुद्दीन कुर्ग

* सिवाना के शासक सातलदेव एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य युद्ध हुआ युद्ध में सातलदेव वीरगति को प्राप्त हुआ एवं राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया। अलाउद्दीन ने इस दुर्ग का नाम खैराबाद रख दिया। कमालुद्दीन ~~कुर्ग~~ कुर्ग को किले का संरक्षक नियुक्त किया।

F. जालौर पर अभियान :-

नेतृत्व : कमालुद्दीन कुर्ग

* जालौर के शासक कान्हदेव सोनगरा एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य युद्ध हुआ। कान्हदेव वीरगति को प्राप्त हुआ।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

ii) दक्षिण भारत पर किए गए अभियान :-

क्रम :- देवगिरी → तेलंगाना → होयसल → मदुरा (पाण्ड्य)

राजधानी →	देवगिरी	वारंगल	द्वारसमुद्र	मदुरा
समकालीन शासक →	रामचन्द्र देव	प्रताप रूद्र देव	बल्लाल तृतीय	कुलशेखर

Raj Holkar

a. देवगिरी अभियान :-

* अलाउद्दीन के आक्रमण के समय देवगिरी में सेना नहीं थी रामचन्द्र का पुत्र सिंघण देव अपनी सेना दक्षिण अभियान के लिए ले गया था। रामचन्द्र देवगिरी के किले में अन्दर चला गया। अलाउद्दीन ने जनता को जी भरकर लूटा।
* रामचन्द्र ने संधि प्रस्ताव भेजा परन्तु सिंघण देव ने युध्द करने का निश्चय किया परन्तु सिंघण की सेना मैदान छोडकर भाग गयी। यह देख सिंघण देव ने पुनः संधि की मांग पेश की। अलाउद्दीन ने कठोर शर्तो के साथ संधि स्वीकार की। रामचन्द्र एवं सिंघण देव ने प्रतिवर्ष कर देने का वचन दिया।
* देवगिरी अभियान के समय अलाउद्दीन ने अपार धन प्राप्त किया।

⇒ देवगिरी का द्वितीय अभियान :-

* देवगिरी के शासकों ने 2-3 वर्ष तक अलाउद्दीन को कर देना बन्द कर दिया था। इस कारण देवगिरी पर पुनः आक्रमण किया।
* इस आक्रमण के बाद खिलजी ने रामचन्द्र को 'रायरायने की उपाधि' प्रदान की एवं गुजरात में 'नवसारी' की जागीर और एक लाख सोने के टंके भेंट किए। इसका उद्देश्य अलाउद्दीन दक्षिण भारत पर विजय के लिए एक भरोसेमंद साथी चाहता था।

KD Job Updates

Raj Holkar

b. तेलंगाना अभियान :-

* इस अभियान का नेतृत्व मलिक काफूर ने किया एवं देवगिरी के शासक रामचन्द्र ने मलिक काफूर का पूरा सहयोग किया।
* वारंगल के शासक ने बिना युध्द किए अधीनता स्वीकार कर ली एवं प्रतीक के रूप में सोने की एक मूर्ति जिसके गले में सोने की जंजीर थी भेजी।
* वारंगल के शासक प्रताप रूद्र देव ने हाथी, घोडे, रत्न, सोना, चांदी आदि दिए कोहिनूर हीरा यहीं से मलिक काफूर ने प्राप्त किया।

Scanned by CamScanner

Raj Holkar

c. होयसल अभियान / द्वारसमुद्र की विजय :-

* होयसल राज्य पर बल्लाल -III का शासन था। इस अभियान का नेतृत्व मलिक काफूर ने किया। देवगिरी शासक रामचंद्र ने काफूर की सहायता की।
* आक्रमण के समय बल्लाल पाण्ड्य राज्य के गृहयुध्द में वीर पाण्ड्य की सहायता करने के लिए दक्षिण की ओर गया हुआ था।
* बल्लाल ने प्रतिवर्ष कर अदा करने की संधि की तथा बहुत अधिक मात्रा में सोना, चांदी, हीरे, मोती आदि दिए। बल्लाल को अपने अगले अभियान में सहायता करने के लिए विवश किया।

Raj Holkar

d. पाण्ड्य अभियान / मदुरा पर विजय :-

* द्वारसमुद्र के बाद मलिक काफूर पाण्ड्य राज्य की ओर बढ़ा। इस अभियान में बल्लाल-III ने मलिक काफूर की मदद की।
* पाण्ड्य शासक के दो पुत्र सुन्दर पाण्ड्य एवं वीर पाण्ड्य (अवैध पुत्र) के बीच सिंहासन को लेकर गृहयुध्द चल रहा था। मलिक काफूर ने सुन्दर पाण्ड्य का पक्ष लिया परन्तु मलिक काफूर न तो वीर पाण्ड्य को हरा सका और न ही कोई शर्त लाद सका। गृहयुध्द में वीर पाण्ड्य जीता एवं सुन्दर पाण्ड्य को बाहर निकाल दिया।
* इस अभियान में मलिक काफूर ने नगरों, भवनों एवं मन्दिरों को लूटा परन्तु वीर पाण्ड्य से न जीत सका।
* बल्लाल-III को दिल्ली बुलाया गया एवं उसकी सहायता से प्रसन्न होकर अलाउद्दीन ने उपहार स्वरूप खिलत, एक मुकुट और छत्र तथा 10 लाख टंका मुद्राएँ प्रदान की।
* यह विजय राजनीतिक दृष्टि से महत्वहीन परन्तु आर्थिक दृष्टि से महान विजय थी

e. देवगिरी पर तृतीय आक्रमण :-

* रामचंद्र देव के पुत्र सिंघण देव ने सिंहासन पर बैठते ही सल्तनत की अधीनता के सब लक्षणों को समाप्त कर दिया एवं स्वतंत्र शासक की भाँति कार्य करने लगा।
* मालिक काफूर को आक्रमण के लिए भेजा गया तथा सिंघण देव की पराजय हुई तथा सिंघणदेव युध्द में मारा गया।
* रामचंद्र के दामाद हरपालदेव को गद्दी पर बिठाया गया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ अलाउद्दीन खिलजी द्वारा किए गए कार्य :-

Raj Holkar

i) प्रशासन :-

a. **दीवान-ए-वजारत** : इसका प्रमुख वजीर होता था। इसका मुख्य विभाग वित्त विभाग था। वजीर राजस्व के एकत्रीकरण और प्रांतीय सरकारों के दीवानी पक्ष के प्रशासन में सुल्तान के प्रति उत्तरदायी था।

b. **दीवान-ए-आरिज** : यह सैन्य मंत्री होता था। सेना की भर्ती, वेतन बाँटना, सेना का हुलिया एवं सैनिकों की नामावली रखता था।

c. **दीवान-ए-इंशा** :- इसका कार्य शाही आदेशों एवं पत्रों का प्रारूप तैयार करना तथा स्थानीय अधिकारियों से पत्र व्यवहार करना

d. **दीवान-ए-रसालत** : पड़ोसी राज्यों में भेजे जाने वाले पत्रों का प्रारूप तैयार करना एवं विदेशी राजदूतों से संपर्क रखना।

e. **दीवान-ए-रियासत** :- अलाउद्दीन ने यह **नया मंत्रालय** स्थापित किया था। इसका कार्य राजधानी के आर्थिक मामलों की देखभाल करना था। व्यापारी वर्ग पर नियंत्रण रखता था।

⇒ अन्य अधिकारी :-

Raj Holkar

~~[illegible]~~

i) मुहतसिब - बाजारों पर नियंत्रण एवं नाप-तौल का निरीक्षण।

ii) **बरीद-ए-मुमालिक** - गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी

⇒ अन्य तथ्य :-

* अलाउद्दीन एक नया धर्म शुरू करना चाहता था तथा सिकन्दर के समान विश्व विजेता बनना चाहता था परन्तु काजी **अलाउलमुल्क** के परामर्श से ये दोनों योजनाएं त्याग दी।
* अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सिक्कों पर स्वयं को दूसरा सिकन्दर घोषित किया तथा **सिकन्दर-ए-सानी** का खिताब प्राप्त किया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* अलाउद्दीन खिलजी ने स्वयं को यस्मिन - उल - खिलाफत - नासिरी - अमीर - उल - मुनिजीन घोषित किया।
* खिलजी ने घोड़ों का दागने की प्रथा, सैनिकों का हुलिया रखने की प्रथा एवं सेना को नकद वेतन देने की शुरुआत की।

⇒ दुबस्पः- जो सैनिक दो घोड़े रखता था उसे दुबस्प कहा जाता था। [दो अस्पा]

* अलाउद्दीन खिलजी ने शराब तथा भाँग पर रोक लगा दी।
* अलाउद्दीन ने भूमि को बिस्वा में मापने की प्रथा शुरु की।
* गृहकर 'घरी' एवं चराई कर 'चरी' नए कर लगाए गए।
* सभी आवश्यक वस्तुओं की कीमत निर्धारित (राशनिंग) की गयी।
* चार अलग - अलग बाजार स्थापित किए गए -
  i) गल्ला बाजार : यह खाद्यान्न चीजों का बाजार था।
  ii) सराय - ए - अदल : यह निर्मित वस्तुओं तथा बाहर से आने वाले माल का बाजार था।
  iii) घोड़े - दास - मवेशियों का बाजार

Raj Holkar

⇒ दरबारी कविः- अमीर खुसरो, हसन दहलवी

⇒ दीवान - ए - मुख्तराजः- अलाउद्दीन ने भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए इस नए विभाग की स्थापना की थी।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

तुगलक वंश

⇒ खिलजी वंश का अंत एवं तुगलक वंश की स्थापना :-

अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर की सहायता से अलाउद्दीन का अल्पवयस्क पुत्र शहाबुद्दीन उमर दिल्ली की गद्दी पर बैठा तथा मलिक काफूर सुल्तान का संरक्षक बना। खिज्रखाँ व शादीखाँ को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था तथा अंधा बना दिया गया था। अलाउद्दीन के तीसरे पुत्र मुबारक खाँ को भी गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु मुबारक खाँ ने सैनिकों से मिलकर मलिक काफूर की हत्या करवा दी एवं स्वयं अल्पवयस्क सुल्तान शहाबुद्दीन उमर का संरक्षक बन गया।

Raj Holkar

मुबारक खाँ लगभग 2 माह तक संरक्षक रहा इसके बाद उसने शहाबुद्दीन उमर को ग्वालियर भेज दिया जहाँ उसकी आँखें निकलवा दी एवं स्वयं मुबारक शाह सल्तनत का मालिक बन गया। खुसरो खाँ एक हिन्दु था जो बाद में मुसलमान बना था उसने मुबारक शाह की हत्या कर दी तथा स्वयं दिल्ली की गद्दी पर बैठ गया तथा अलाउद्दीन के अन्य पुत्रों की हत्या करने की तैयारी करने लगा। गाजी मलिक मुबारक शाह खिलजी के शासन काल में उत्तर-पश्चिम सीमाप्रांत का गवर्नर था। गाजी मलिक एवं अन्य कुछ अमीरों के लिए खुसरो खाँ द्वारा किया जा रहा अलाउद्दीन के पुत्रों की हत्या एक घिनौना अपराध बन गया एवं गाजी मलिक ने खुसरो खाँ के विरूध्द बीड़ा उठाया।

KD Job Updates

गाजी मलिक ने पहली लडाई सरसुती (सिरसा) स्थान पर जीती तथा यमुना पार करके गाजी मलिक की प्रबल सेना ने खुसरो खाँ को करारी हार दी। इस प्रकार गाजी मलिक, गयासुद्दीन तुगलक नाम से दिल्ली का सुल्तान बना एवं दिल्ली में तुगलक वंश की स्थापना हुई।

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

गयासुद्दीन तुगलक

* गयासुद्दीन तुगलक का वास्तविक नाम गाजी मलिक था। यह तुगलक वंश का संस्थापक था।
* गाजी मलिक ने मंगोलों को बार-बार पराजित किया इस कारण वह मलिक-उल-गाजी नाम से प्रसिद्ध था।

Raj Holkar

* वह पहला सुल्तान था, जो मानता था कि राजकीय आय में वृद्धि भू-राजस्व में वृद्धि द्वारा नहीं अपितु उत्पादन में वृद्धि द्वारा की जानी चाहिए। इसके लिए इसने नहर निर्माण को प्रोत्साहन दिया। नहर निर्माण करने वाला वह प्रथम सुल्तान था।
* गयासुद्दीन तुगलक ने सडकों की मरम्मत करवायी एवं पुल निर्माण करवाये।
* गयासुद्दीन तुगलक के काल में डाक व्यवस्था श्रेष्ठ थी।
* अमीर खुसरो के अनुसार," सैकडों पण्डितों की पगडी अपने मुकुट के पीछे छुपाए रहता था अर्थात् वह बहुत विद्वान था"।
* गयासुद्दीन तुगलक का सूफी संत निजामुद्दीन औलिया से मनमुटाव था जब सुल्तान औलिया को दण्डित करने के लिए बंगाल से वापस लौट रहा था तो औलिया ने कहा था – "हुनोज दिल्ली दूरस्त" दिल्ली अभी दूर है।
* 1321 ई. में उसने अपने पुत्र जूना खां (मु० बिन तुगलक) को तेलंगाना पर आक्रमण के लिए भेजा। तेलंगाना को सुल्तान ने सल्तनत में मिला लिया एवं वारंगल का नाम सुल्तानपुर रख दिया।
* राजमुंद्री अभिलेख में जूना खां (मु० बिन तुगलक) को विश्व का खान कहा है।
* जूना खां ने गयासुद्दीन तुगलक के लिए अफगानपुर के निकट लकडी का महल बनवाया था। इसी महल के गिरने से गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हुई थी।
* इस लकडी के महल का शिल्पकार आयाज का पुत्र अहमद था।
* इब्नबतूता, बरनी, अबुलफजल, बदायुंनी एवं निजामुद्दीन ने गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु का कारण जूना खां का षड्यंत्र के तहत निर्मित महल माना है।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मोहम्मद बिन तुगलक

* अपने पिता गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के पश्चात् जूना खाँ, मोहम्मद बिन तुगलक के नाम से 1325 ई० में सुल्तान बना।
* इसे इतिहास में एक बुद्धिमान मूर्ख शासक के रूप में जाना जाता है।
* इसका मूल नाम जूना खाँ (जौना खाँ) था इसे उलूग खाँ की उपाधि दी गयी थी।
* इसके शासन काल में अफ्रीकी यात्री इब्ने-बतूता आया। इब्ने-बतूता को दिल्ली का काजी नियुक्त किया एवं राजदूत बनाकर चीन भेजा।
* बरनी के अनुसार, मोहम्मद बिन तुगलक ने 5 परियोजनाएँ शुरू की तथा ये परियोजनाएँ निम्न थी -
  i) दो-आब क्षेत्र में कर वृद्धि
  ii) राजधानी परिवर्तन
  iii) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन
  iv) कराचिल अभियान
  v) खुराशान अभियान। इनका क्रम सही नहीं है।

संभवतः सही क्रम :- राजधानी परिवर्तन → सांकेतिक मुद्रा प्रचलन → खुरासान अभियान → कराचिल अभियान → दोआब में करवृद्धि। [H.C. Verma]

Raj Holkar

i) राजधानी परिवर्तन :- लगभग (1326-27)

* मोहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरी का नाम बदलकर दौलताबाद कर दिया एवं इसे अपनी राजधानी बनाया।
* विद्रोहों के कारण शीघ्र ही दक्षिणी क्षेत्र सल्तनत से बाहर हो गये और देवगिरी को राजधानि बनाए जाने का औचित्य समाप्त हो गया।
* 1335 ई० में दिल्ली पुनः राजधानी बनी।

KD Job Updates

Raj Holkar

ii) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन :-

* मोहम्मद बिन तुगलक ने चाँदी की कमी के कारण ताँबे एवं काँसे के सिक्के चलाए। इन सिक्कों का मूल्य चाँदी के सिक्कों के बराबर घोषित किया गया।
* जनता ने इस परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया। बहुत अधिक मात्रा में नकली सिक्के बनने लगे। इसके बदले सुल्तान को खजाने से असली सिक्के देने पड़े जिससे खजाना खाली हो गया एवं योजना विफल हो गयी।

Scanned by CamScanner

iii) खुरासान अभियान :-

* सुल्तान ने मध्य एशिया में स्थित खुरासान राज्य की अव्यवस्था का लाभ उठाकर वहाँ कब्जा करना चाहा। इसके लिए 3 लाख 70 हजार लोगों की एक विशाल सेना तैयार की तथा 1 वर्ष का वेतन पहले ही दे दिया परन्तु खुरासान में स्थिति सामान्य हो गयी एवं यह योजना भी विफल हो गयी।

iv) कराचिल अभियान :-

* यह अभियान खुरासान के तुरंत बाद कुल्लू। कांगड़ा अथवा कुमाऊँ पहाड़ी में स्थित कराचिल के शासक के विरुध्द था इसमें सुल्तान को जन-धन की हानि हुई परन्तु कराचिल के शासक ने सुल्तान की अधीनता स्वीकार करली।

v) दोआब में कर वृध्दि :-

* मोहम्मद बिन तुगलक के असफल योजनाओं से राजकीय कोष को आर्थिक हानि हुई इसकी पूर्ति के लिए दोआब क्षेत्र की उपजाऊ भूमि पर कर में वृध्दि करदी। दुर्भाग्य से इसी वर्ष इस क्षेत्र में अकाल पड़ गया। किसान एवं जमींदारों से कर वसूल करने में सख्ती बरती गयी। इस स्थिति में किसानों ने कृषि कार्य छोड़ दिया एवं उपज को आग लगा दी एवं शक्तिशाली जमींदारों ने विद्रोह कर दिया। इतिहास में संभवतः यह पहली बार हुआ था जब किसानों ने खेती बन्द करदी। इस प्रकार सुल्तान की यह योजना भी विफल रही।

Raj Holkar
KD Job Updates

⇒ अन्य तथ्य :-

* मोहम्मद बिन तुगलक ने कृषि के विकास के लिए दीवान-ए-कोही नामक विभाग की स्थापना की। इसका प्रधान अमीर-ए-कोही होता था।
* इसके काल में दिल्ली में प्लेग (ब्लैक डेथ) नामक महामारी फैल गयी इस कारण सुल्तान कुछ वर्ष स्वर्गद्वारी (कन्नौज के निकट) जाकर रहा।
* इब्ने-बतूता ने समकालीन पुस्तक 'सफरनामा (रेहला)' लिखी। इब्ने-बतूता मोरक्को का यात्री था।
* मोहम्मद बिन तुगलक पहला सुल्तान था जिसने होली का त्योहार मनाया।
* मोहम्मद बिन तुगलक ने जैन विद्वान राजशेखर को संरक्षण दिया।
* मोहम्मद बिन तुगलक के समय दक्षिण भारत में हिन्दु राज्य विजयनगर एवं मुस्लिम राज्य बहमनी स्थापित हुए।

Scanned by CamScanner

* मोहम्मद बिन तुगलक ने कृषि भूमि के आकलन के लिए एक रजिस्टर तैयार करवाया तथा अकाल पीड़ितों के लिए "अकाल संहिता" तैयार करवायी।
* मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में सर्वाधिक विद्रोह हुए।
* अंततः 1351 ई० में सिंध के विद्रोह को दबाते हुए सुल्तान की मृत्यु हो गयी।
* मोहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु पर अब्दुल कादिर बदायुंनी ने लिखा है, " सुल्तान को अपनी प्रजा से तथा प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गयी"।

फिरोज शाह तुगलक

Raj Holkar

* मोहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद उसका चचेरा भाई फिरोजशाह तुगलक सुल्तान बना। इसका राज्याभिषेक थट्टा (सिंध) में हुआ।
* इसने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगाया।

Raj Holkar
KD Job Updates

⇒ जजिया कर :-
यह एक गैर धार्मिक कर था। भारत में जजिया कर सर्वप्रथम मुहम्मद बिन कासिम ने लगाया। फिरोजशाह तुगलक ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगाया। अकबर -I ने जजिया कर को समाप्त कर दिया था परन्तु औरंगजेब ने पुनः जजिया कर लगाया। फर्रुखसियार ने एक बार जजिया कर को समाप्त कर दिया था परन्तु पुनः फर्रुखसियार ने जजिया कर लगाया। बाद में मुहम्मद शाह ने जजिया कर को बंद कर दिया था।

* फिरोजशाह तुगलक ने अनेक मंदिरों को तोड़ा एवं मरम्मत पर पाबन्दी लगा दी थी।
* फिरोजशाह तुगलक ने खराज (लगान), खुम्स (लूट का माल), जजिया (गैर-मुसलमानों पर लगने वाला कर) और जकात (मुस्लिम आय से कर जो मुस्लिमों पर ही खर्च किया जाता था) को छोड़कर अन्य सभी कर समाप्त कर दिए।
* किसानों पर शुर्ब (सिंचाई कर) लगाया गया।

Scanned by CamScanner

* फिरोजशाह को आर्थिक एवं प्रशासनिक सुधारों के कारण सल्तनत काल का अकबर कहा जाता है। [इलियट और एलिफिंस्टन ने कहा]
* फिरोजशाह तुगलक ने हिसार, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, जौनपुर नगरों की स्थापना की एवं दिल्ली में फिरोजशाह कोटला नगर बसाया।
* फिरोजशाह तुगलक ने कुतुबमीनार की चौथी मंजिल की मरम्मत करवायी एवं पाँचवी मंजिल का निर्माण करवाया।
* वह मेरठ एवं टोपरा स्थित अशोक स्तंभों को दिल्ली लेकर आया।
* फिरोज शाह ने दासों के लिए दीवान-ए-बंदगान विभाग की स्थापना की।
* उसने महिलाओं एवं बच्चों की आर्थिक सहायता के लिए दीवान-ए-खैरात दान विभाग की स्थापना की।
* उसने खैराती अस्पताल दारूल-सफा की स्थापना की।
* फिरोज शाह तुगलक ने मैरिज ब्यूरो, लोक निर्माण विभाग एवं रोजगार कार्यालय की स्थापना की।
* फिरोजशाह तुगलक ने जगन्नाथ मंदिर (पुरी) को हानि पहुँचायी।
* फिरोजशाह ने दो नए सिक्के अधा (जीतल का आधा) तथा बिख (जीतल का 1/4) चलाए। फिरोजशाह ने शशगानी (6 जीतल का) सिक्का भी चलाया।
* फिरोजशाह ने 5 नहरों का निर्माण करवाया जिनमें अलूखनी नहर एवं रजबाह नहर प्रमुख हैं।

Raj Holkar

⇒ फिरोजशाह के उत्तराधिकारी :-

तुगलकशाह-II → अबूबक्र → मुहम्मदशाह → हुमायुँ खाँ → महमूदशाह

* महमूद शाह के शासन काल में मंगोल तैमूर लंग ने आक्रमण किया था।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

तैमूर का भारत पर आक्रमण

⇒ तैमूर लँग कौन था ?

तैमूर उज्बेकिस्तान में जन्मा एक कट्टर तुर्क मुसलमान था। तैमूर ने तैमूरी राजवंश की स्थापना की। तैमूर, चंगेज खाँ की तरह समस्त संसार को अपनी शक्ति से रौंदना एवं सिकन्दर की तरह विश्व विजय की कामना रखता था। तैमूर विश्व के महानतम निष्ठुर एवं रक्त पिपासु आक्रमणकारियों में से एक था। तैमूर ने समरकंद के मंगोल शासक के मरने के बाद उसने समरकंद की गद्दी पर कब्जा कर लिया। अब तैमूर ने अपना विजय अभियान शुरू किया।

1380 से 1387 के बीच उसने खुरासान, सीस्तान, फारस, अफगानिस्तान, अजरबैजान और कुर्दिस्तान को अधीन कर लिया तथा बगदाद से लेकर मेसोपोटामिया पर ~~अधिपत्य~~ आधिपत्य कर लिया। अब भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया। एक दुर्घटना में वह लंगड़ा हो गया था इसलिए लंग नाम के साथ जुड़ा।

⇒ भारत पर आक्रमण के कारण :-

i) मूर्तिपूजकों को एवं मूर्तिपूजा को विध्वंस करना तथा इस्लाम का प्रचार करना।

ii) भारत की सम्पत्ति को लूटना।

iii) लूटपाट एवं विश्व को अपनी शक्ति से रौंदना।

Raj Holkar

⇒ तैमूर का आक्रमण :-

Raj Holkar

KD Job Updates

* भारत पर तैमूर का आक्रमण 1398 ई. में सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद के समय में हुआ।
* तैमूर के आक्रमण के समय खिज्र खाँ ने तैमूर की सहायता की।
* तैमूर उत्तर पश्चिम से होते हुए पंजाब, हरियाणा को लूटता हुआ दिल्ली तक पहुंचा। तैमूर दिल्ली में 15 दिन रहा एवं दिल्ली को लूटा एवं स्त्री, शिल्पियों को अपने साथ ले गया।
* दिल्ली में भयंकर ~~कत्ले~~ कत्लेआम किया हजारों - लाखों लोगों को काट दिया गया। मंदिर एवं मूर्ति तोड़े गए, लूटा गया।

Scanned by CamScanner

⇒ चंगेज खाँ एवं तैमूर के सिद्धांतों में अन्तर :-

* तैमूर एवं चंगेज खाँ के आक्रमण में इतना अंतर था कि चंगेज खां जहाँ पूरी दुनिया को एक ही साम्राज्य से बाँधना चाहता था परंतु तैमूर का इरादा सिर्फ लोगों को लूटना, धौंस जमाना, मारकाट था।
* चंगेज के कानून में सिपाहियों को खुली लूट - पाट की मनाही थी लेकिन तैमूरी सेना को लूट - पाट एवं कत्लेआम की खुली छूट थी।

⇒ तैमूर को क्यों माना जाता है दरिन्दा ? क्यों हुआ करीना कपूर खान द्वारा बेटे का नाम तैमूर रखने पर विवाद ?

* तैमूर ने असपन्दी नाम के गाँव लूटा एवं सभी हिन्दुओं का कत्लेआम किया। वहाँ से तुगलक पुर पहुंचा एवं यजदीयों (पारसी) के घर जला डाले और पकड - पकड कर मार डाला। यहाँ से पानीपत की ओर गया।
* पंजाब के समाना कस्बे एवं हरियाणा के कैथल में कत्लेआम किया
* पानीपत पहुँचकर तैमूर ने शहर को तहसनस कर दिया एवं रास्ते में लोनी के किले के राजपूतों को रौंदा एवं कत्लेआम किया। अब तक तैमूर के पास लगभग एक लाख हिन्दु बन्दी थे दिल्ली पर चढ़ाई करने से पहले तैमूर ने सैनिकों को सभी बन्दियों का कत्ल करने का हुक्म दिया और जो सैनिक कत्ल न करे उसका कत्ल करने का हुक्म दिया गया।
* दिल्ली का सुल्तान दिल्ली छोडकर भाग गया। दिल्ली में तैमूर 15 दिन रहा यहाँ दिल्ली में तैमूर ने हिन्दुओं को ढूंढ - ढूंढ कर कत्ल किया गया। दिल्ली शहर को खून से रँग दिया गया।
* जब तैमूर दिल्ली छोडकर उज्बेकिस्तान की तरफ रवाना हुआ तो रास्ते में मेरठ में 30,000 हिन्दुओं का कत्ल किया।

यही कारण था कि तैमूर जैसे दरिन्दे का नाम करीना कपूर खान द्वारा अपने बेटे का नाम रखने पर विरोध हुआ।
वैसे तिमूर का अर्थ लोहा होता है।

Raj Holkar
Raj Holkar

⇒ तैमूर आक्रमण का प्रभाव :-

* तैमूर के आक्रमण ने तुगलक वंश का अंत कर दिया।
* सल्तनत की शक्ति को समाप्त करने एवं सल्तनत के विघटन में अहम भूमिका निभायी।
* विजित प्रदेशों पर तैमूर ने खिज्र खां को राज्यपाल नियुक्त किया। इसी खिज्र खां ने सल्तनत में सैयद वंश की स्थापना की।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

सैयद वंश (37)

* तैमूर के आक्रमण ने सल्तनत की शक्ति को क्षीण कर दिया एवं खिज्र खाँ ने सैयद वंश की स्थापना की।

⇒ **खिज्र खाँ :-**

* खिज्र खाँ ने सैयद वंश की स्थापना की।
* सैयद वंश स्वयं को पैगम्बर मुहम्मद का वंशज मानते हैं। [प्रमाण नहीं हैं]
* खिज्र खाँ ने कभी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की, उसने 'रैयत-ए-आला' की उपाधि ली।

Raj Holkar

⇒ **मुबारक शाह :-**

* खिज्र खाँ के बाद उसका पुत्र मुबारक शाह गद्दी पर बैठा।
* मुबारक शाह ने विख्यात इतिहासकार वाहिया-बिन-अहमद सरहिंदी को आश्रय दिया। सरहिन्दी ने तारीख-ए-मुबारकशाही पुस्तक की रचना की।
* मुबारक शाह ने शाह की उपाधि धारण की एवं अपने नाम का खुतबा पढ़ाया एवं अपने नाम के सिक्के जारी किए।

⇒ **मुहम्मद शाह :-**

* मुबारक शाह के बाद उसका दत्तक पुत्र मुहम्मद शाह गद्दी पर बैठा
* मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अलाउद्दीन आलम शाह सुल्तान बना।

⇒ **अलाउद्दीन आलम शाह :-**

* यह सैयद वंश का अंतिम शासक था।
* इसके समय दिल्ली सल्तनत के शासन की बागडोर सैयदो से निकलकर लोदियों के हाथ में चली गयी।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

प्रथम अफगान राज्य : लोदी वंश

स्थापना :- लोदी वंश की स्थापना, सैयद वंश के अंतिम शासक अलाउद्दीन आलमशाह द्वारा राज्य त्यागने के पश्चात् बहलोल लोदी ने की।

* लोदी अफगानी थे। ये मुख्यत: व्यापारियों के रूप में भारत आए इन्होने दिल्ली सल्तनत में सेवाएँ एवं प्रशासनिक पदों पर कार्य किया जब सल्तनत की शक्ति कम हुई तो लोदियों ने अपने वंश की स्थापना की।

बहलोल लोदी

Raj Holkar

* बहलोल लोदी राजदरबार में सिंहासन पर न बैठकर, दरबारियों के बीच बैठता था।
* लोदी वंश, सल्तनत पर शासन करने वाला पहला अफगान वंश था।
* बहलोल लोदी ने जौनपुर के शासक हुसैन शाह को पराजित किया एवं अपने पुत्र बारबक शाह को जौनपुर का शासक बनाया।
* बहलोल लोदी ने ग्वालियर के शासक मानसिंह को हराया और वहीं से लौटते समय उसकी मृत्यु हो गयी।

KD Job Updates
Raj Holkar

सिकन्दर लोदी

* सिकन्दर लोदी, बहलोल का उत्तराधिकारी था। इसका नाम निजाम खाँ था।
* सिकन्दर लोदी ने भूमि मापन हेतु, 'गज-ए-सिकंदरी' पैमाना बनवाया।
* सिकन्दर लोदी ने 1504 ई० में आगरा नगर की स्थापना की एवं 1506 ई० में आगरा को राजधानी बनाया।
* वह गुलरुखी के उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था।
* सिकन्दर लोदी ने कुतुबमीनार की मरम्मत करवायी।
* सिकन्दर लोदी ने मुहर्रम एवं ताजिए निकालना बंद कर दिया।

Scanned by CamScanner

इब्राहिम लोदी

* सिकन्दर लोदी के बाद इब्राहिम लोदी सल्तनत का सुल्तान बना।
* यह लोदीवंश का अंतिम शासक था।
* गृहयुध्द से बचने के लिए अफगान अमीरों ने सिकन्दर लोदी के राज्य को उसके दो पुत्रों में विभाजित कर दिया -
  i) इब्राहिम लोदी - दिल्ली का सुल्तान
  ii) जलाल खाँ - जौनपुर का राज्य

Raj Holkar

⇒ पानीपत का प्रथम युध्द [21 अप्रैल, 1526 ई.]:-

- यह युध्द बाबर एवं इब्राहीम लोदी के मध्य हुआ।
- इब्राहीम युध्द में मारा गया। इब्राहिम लोदी दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जो युध्दभूमि में मारा गया।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का अंतिम सुल्तान था।

Raj Holkar

⇒ पानीपत के प्रथम युध्द में बाबर की जीत के कारण :-

i) इब्राहिम के पास सेना अधिक थी परन्तु सुसंगठित नहीं थी।
ii) बाबर के पास तोपखाना था एवं कुशल तोपची उस्ताद अली और मुस्तफा भी बाबर के साथ थे।
iii) बाबर ने तुलुगमा पध्दति एवं रूमि विधि का प्रयोग किया।
iv) सिकन्दर लोदी की सेना में हाथियों पर सैनिक अधिक थे जबकि बाबर के पास घुडसवार अधिक थे।
v) इब्राहिम लोदी एक कुशल सेनानायक। पराक्रमी नहीं था।
vi) इब्राहिम लोदी ने हमला न करके इंतजार किया एवं बाबर ने रात में आक्रमण किया।

क्या है तुलगमा पध्दति:- तुलुगमा पध्दति एक छल नीति है। इसमें सेना को कई टुकडों में बांट दिया जाता है और विपक्षी सेना पर सामने एवं पीछे से घेरकर आक्रमण किया जाता है। बाबर ने यह पध्दति उजबेगों से सीखी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

सल्तनतकालीन स्थापत्य (५०)

i) कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद : निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा।
- पहले यह जैन मंदिर था बाद में विष्णु मंदिर बना एवं ऐबक ने इसे मस्जिद बना दिया।
- भारतीय-इस्लामिक शैली में निर्मित यह प्रथम स्थापत्य है। इसका विस्तार इल्तुतमिश एवं अलाउद्दीन खिलजी ने किया।

Raj Holkar

ii) अढ़ाई दिन का झोंपड़ा - अजमेर में इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया। यह एक संस्कृत विद्यालय था। इसकी दीवारों पर हरिकेलि नाटक के अंश हैं।

iii) कुतुब मीनार :- निर्माण कार्य कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू किया। इल्तुतमिश ने 3 मंजिल बनवायी। फिरोजशाह तुगलक ने मरम्मत एवं 1 मंजिल बनवायी एवं सिकन्दर लोदी ने भी मीनार की मरम्मत करवायी।

Raj Holkar

iv) सुल्तानगढ़ी का मकबरा : इसका निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया यह दिल्ली में स्थित है।

v) अतारकिन का दरवाजा :- इसका निर्माण इल्तुतमिश ने नागौर (राज०) में करवाया।

vi) हौज-ए-शम्सी/शम्सी ईदगाह : इल्तुतमिश ने बदायुं में बनवाया।

vii) अलाई दरवाजा :- यह कुव्वत उल इस्लाम मस्जिद का प्रवेश द्वार है अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाया यहाँ पहली बार घोड़े की नाल की आकृति में मेहराब बनाया गया।

viii) जमात खाना मस्जिद :- इसका निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने करवाया।

ix) झिरका मस्जिद : मुबारक शाह खिलजी ने भरतपुर (राज०) में बनवायी।

x) तुगलकाबाद किला :- निर्माण गयासुद्दीन तुगलक ने करवाया। यह मकबरा

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

xi) गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा: दिल्ली में स्थित, यह पंचकोंणीय है।

xii) आदिलाबाद किला: दिल्ली में मो० बिन तुगलक ने बनवाया।

xiii) कोटला फिरोज शाह :- दिल्ली में फिरोज शाह तुगलक ने बनवाया।

xiv) काली मस्जिद :- फिरोजशाह तुगलक द्वारा निर्मित।

xv) खान-ए-जहाँ तेलंगानी मकबरा :- निजामुद्दीन में स्थित अष्टकोंणीय मकबरा है। इसका निर्माण जौना शाह (खान-ए-शाह-II) ने करवाया।

⇒ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :-

* आरिज ए मुमालिक - सैन्य विभाग का प्रधान
* इंशा ए मुमालिक - पत्राचार विभाग का प्रधान
* रसालत ए मुमालिक - विदेश विभाग का प्रधान
* मुस्तौफी ए मुमालिक - राज्य व्यय की जाँच करना
* मुशरिफ ए मुमालिक - राज्य आय की जाँच करना
* बरीद ए मुमालिक - गुप्तचर विभाग का प्रधान
* काजी-उल-कुजात - न्याय विभाग का प्रधान
* मुफ्ती :- धर्म की व्याख्या करने वाला।
* मुशरिफ - किसानों से भूमिकर लेने वाला
* वक्फ - वह भूमि जो धार्मिक कार्यों के लिए सुरक्षित कर दी गयी हो।
* मैमार - इमारतों का निर्माण करने वाला
* मो० बिन तुगलक को 'प्रिंस ऑफ मेनिरियस' की उपाधि मिली थी।
* फिरोज शाह तुगलक एकमात्र ऐसा शासक था जिसने स्वयं को खलीफा का नायब कहा।
* फिरोजशाह तुगलक ने सर्वप्रथम अपनी कुल आय का ब्यौरा तैयार करवाया था जो 6 करोड 75 लाख थी।
* मोहम्मद गोरी ने कहा था, "अन्य मुसलमानों के एक बेटा हो सकता है या दो मेरे अनेक हजार बेटे हैं।"

"विश्वासघात में उसका आरंभ हुआ, दानशीलता पर वह विकसित हुआ और आतंक में उसका अंत हुआ"! यह कथन डॉ० R.S. Sharma ने अलाउद्दीन खिलजी के लिए कहा है।

Raj Holkar
KD Job Updates
Raj Holkar

Scanned by CamScanner

सल्तनत कालीन स्वतंत्र प्रांतीय राज्य

तैमूर के आक्रमण के बाद दिल्ली सल्तनत का विघटन प्रारंभ हो गया। सुल्तानों की दुर्बलता का लाभ उठाकर उत्तर एवं दक्षिण भारत के कई राज्य स्वतंत्र हो गए।

उत्तर भारत : जौनपुर, कश्मीर, मालवा, राजपूताना, गुजरात, उड़ीसा etc.

दक्षिण भारत : विजय नगर, बहमनी आदि।

उत्तर भारत के स्वतंत्र राज्य

1. जौनपुर :- [गोमती नदी के किनारे बसा हुआ]

* जौनपुर की स्थापना फिरोजशाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई जौना खां / जूना खां [मुहम्मद बिन तुगलक] की स्मृति में 1359 ई में की थी।
* जौनपुर में स्वतंत्र सत्ता का संस्थापक मलिक सरवर नामक एक हिंजड़ा था। इसने जौनपुर में शर्की राजवंश की स्थापना की।
* जौनपुर को भारत का शिराज कहा जाता था।

Raj Holkar

⇒ शर्की राजवंश के शासक :-

मलिक सरवर (संस्थापक) → मुबारक शाह [सुल्तान की उपाधि ली] → इब्राहिम शाह → महमूद शाह → मुहम्मद शाह → हुसैन शाह [अंतिम शासक या स्वतंत्र सुल्तान]

KD Job Updates

Raj Holkar

* शर्की राजवंश के अंतिम स्वतंत्र सुल्तान हुसैन शाह शर्की को लोदी वंश के संस्थापक बहलोल लोदी ने पराजित कर सल्तनत में जौनपुर का विलय किया। जलाल खां को जौनपुर, इब्राहिम लोदी काल में मिला।
* पद्मावत के लेखक मलिक मुहम्मद जायसी जौनपुर के रहने वाले थे।

Scanned by CamScanner

बंगाल राजधानी : लखनौती

* 12 वीं सदी के अंतिम दशक में इख्तियारुद्दीन मोहम्मद बख्तियार खिलजी ने बंगाल को दिल्ली सल्तनत में मिलाया।
* बलबन के समय तुगरिल खां ने बंगाल में विद्रोह किया जिसे बलबन ने दबाया एवं अपने पुत्र बुगरा खां को वहाँ का शासक बनाया।
* बलबन की मृत्यु के बाद बुगरा खां ने बंगाल को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
* 1324 ई० में गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल को जीता एवं नासिरुद्दीन को बंगाल में अपना अधीनस्थ नियुक्त किया सुल्तान की उपाधि धारण करने का अधिकार प्रदान किया।
* गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल को 3 भागों में विभाजित किया।
* मोहम्मद बिन तुगलक के समय बंगाल दिल्ली सल्तनत से पूर्णतः स्वतंत्र हो गया। दिल्ली सल्तनत से अलग होने वाला यह प्रथम प्रांत था।
* फिरोजशाह तुगलक ने बंगाल पर 2 बार आक्रमण किया परन्तु उसे दिल्ली सल्तनत में न मिला सका।

Raj Holkar

* बंगाल 1340 ई० से 1576 ई० तक एक स्वतंत्र राज्य रहा। सन् 1576 ई. में अकबर के सेनापतियों ने अंतिम अफगान सुल्तान दाउदशाह को पराजित कर मार डाला एवं अकबर के राज्य में बंगाल को शामिल कर दिया।
* संस्कृत रामायण का बांग्ला में अनुवाद कृत्तिवास ने किया एवं बंगला - रामायण की रचना की। इस ग्रंथ को बंगला की बाइबिल कहा जाता है।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

गुजरात राज्य

* सन् 1297 ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने इसे दिल्ली सल्तनत में मिलाया। बाद में दिल्ली सल्तनत के स्थायित्व तक दिल्ली से गुजरात में मुस्लिम सूबेदारों का नियुक्त होना जारी रहा।
* सन् 1401 में अंतिम सूबेदार जफर खाँ ने औपचारिक तौर पर दिल्ली सल्तनत की अधीनता त्याग दी एवं अपने पुत्र तातार खाँ को नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह की पदवी देकर सुल्तान के रूप में स्वतंत्र राज्य के सिंहासन पर बैठा दिया।
* सन् 1407 ई० में जफर खाँ ने अपने पुत्र सुल्तान नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह को जहर दे दिया एवं सुल्तान मुजफ्फर शाह के नाम से गद्दी पर बैठा बाद में इसके पौत्र अलप खाँ ने इसे जहर दे दिया एवं अहमद शाह के नाम से गद्दी पर बैठा।

Raj Holkar

⇒ अहमद शाह :-

* अहमद शाह को स्वतंत्र गुजरात राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
* अहमद शाह ने अहमदाबाद नगर की स्थापना की।
* अहमद शाह ने प्रथम बार गुजरात में जजिया कर लगाया।
* इसके समय मिस्त्र विद्वान बदरुद्दीन दमामीनी ने गुजरात यात्रा की।

KD Job Updates

⇒ सुल्तान महमूद बेगडा :-

Raj Holkar

* यह अपने वंश का सबसे प्रतापी राजा था।
* इसके समय इटली के यात्री लुदोविको दि वारथेमा ने गुजरात की यात्रा की।

⇒ सुल्तान बहादुर शाह :-

* इसने मालवा के सुल्तान महमूद-II खिलजी को पराजित किया एवं मालवा को गुजरात में मिला लिया।
* मुगल बादशाह हुमायुँ ने इसे बुरी तरह पराजित किया। एवं गुजरात को अपने राज्य में मिलाना चाहा परन्तु असफल रहा।
* बाद में अकबर ने गुजरात को मुगल साम्राज्य में मिलाया।

Scanned by CamScanner

मालवा राज्य (45)

⇒ परमार वंश :-

* परमार वंश की उत्पत्ति गुर्जर प्रतिहारों की भांति अग्निकुण्ड से बतायी जाती है परन्तु प्राचीन लेखों से सिद्ध होता है कि परमार शासकों का उद्भव राष्ट्रकूटों के कुल से हुआ था।
* परमार वंश की स्थापना उपेन्द्र अथवा कृष्णराज ने दसवीं शताब्दी के प्रारंभ में की थी। पहले परमार राष्ट्रकूटों के सामन्त थे।
* वीरसिंह द्वितीय ने धार नगरी पर अधिकार किया।
* सीयक द्वितीय ने मालवा के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
* मालवा के परमारों की वास्तविक शक्ति का विकास वाक्पति मुंज ने किया। वाक्पति मुंज ने उत्पलराज, अमोघवर्ष, श्रीवल्लभ एवं पृथ्वी वल्लभ की उपाधि धारण की।

⇒ भोज :- भोज ने चालुक्य नरेश जयसिंह -II को पराजित किया एवं मुंज की हार का बदला लिया। बाद में चालुक्य नरेश सोमेश्वर ने धार पर आक्रमण किया एवं जयसिंह -II की हार का बदला लिया।

Raj Holkar

* भोज के बाद मालवा पर सोलंकियों ने अपना अधिकार कर लिया।
* इल्तुतमिश एवं अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा को लूटा।

होशंगशाह :- इसने राजधानी धार से मांडू स्थापित की। यह गुजरात में लड़े गये युद्ध में पराजित हुआ एवं बन्दी बना लिया गया। बाद में गुजरात शासकों के अनुग्रह से प्राप्त सत्ता पर वह 1432 ई. तक बना रहा।

* होशंगशाह के बाद उसका पुत्र सुल्तान महमूद गोरी गद्दी पर बैठा परन्तु 1436 में उसके वजीर महमूद खाँ खिलजी ने महमूद गोरी को जहर दे दिया एवं मालवा में खिलजी वंश की स्थापना की।

⇒ खिलजी वंश :-

* चित्तौड़ के राणा एवं महमूद खिलजी के मध्य युद्ध हुआ संभवतः यह अनिर्णीत युद्ध था। राणा ने इस विजय के उपलक्ष में चित्तौड़ में विजय स्तंभ बनवाया। ठीक इसी प्रकार खिलजी ने भी विजय का दावा करते हुए माण्डू में एक मीनार बनवायी (बाद में यह गिर गयी)

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* महमूद खिलजी के बाद सुल्तान गयासुद्दीन गद्दी पर बैठा परन्तु उसके पुत्र नासिरुद्दीन ने इसे जहर देकर मार दिया।
* नासिरुद्दीन गद्दी पर बैठा परन्तु कुछ समय बाद वह बुखार से मर गया।
* नासिरुद्दीन के बाद खिलजी वंश का अंतिम सुल्तान महमूद -II खिलजी गद्दी पर बैठा।
* कुछ समय बाद गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने महमूद -II को पराजित कर मार डाला एवं 1531 ई० में मालवा को गुजरात में मिला लिया।

कश्मीर राज्य

Raj Holkar

* चौदहवीं सदी के आरंभ में शाह मिर्जा अथवा मीर नामक मुसलमान ने कश्मीर पर अधिकार कर लिया एवं एक मुस्लिम वंश की स्थापना की।

⇒ सुल्तान सिकन्दर :-

* इसके समय में तैमूर का आक्रमण हुआ था। तैमूर ने कश्मीर पर आक्रमण नहीं किया था।

⇒ सुल्तान जैनुल आबिदीन :-

* इसने लंबे समय तक कश्मीर पर शासन किया।
* यह धार्मिक रूप से सहिष्णु था। गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाया एवं स्वयं मांस नहीं खाता था। संतों का आदर करता था। साहित्य, चित्रकला एवं संगीत को प्रोत्साहन दिया। इन गुणों के कारण यह कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

⇒ मिर्जा हैदर दुगलत (हुमायुं का रिश्तेदार) ने कश्मीर पर विजय प्राप्त की एवं स्वतंत्र (व्यवहारिक), हुमायुं का सूबेदार बनकर राज्य करता रहा।

* कुछ वर्षों बाद कश्मीर पर चाक वंश ने अधिकार कर लिया।
* चाक वंश को 1586 में अकबर ने नष्ट कर दिया।

KD Job Updates
Raj Holkar

Scanned by CamScanner

दक्षिण भारत के स्वतंत्र राज्य

14 वीं शताब्दी के प्रथम चरण में द्वारसमुद्र के होयसलों के अतिरिक्त लगभग संपूर्ण दक्षिण भारत को दिल्ली - सल्तनत में शामिल किया जा चुका था परन्तु मुहम्मद बिन तुगलक के काल में दक्षिण भारत में सर्वाधिक विद्रोह हुए। इन विद्रोहों के दमन के लिए एवं सत्ता की मजबूती के लिए राजधानी दौलताबाद बनायी एवं विजित प्रदेशों को प्रांतों में विभाजित किया।

1325 ई० में मुहम्मद बिन तुगलक के चचेरे भाई बहाउद्दीन गुर्शस्प ने कर्नाटक में विद्रोह कर दिया जिसे स्वयं मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिण जाकर दबाया परन्तु बहाउद्दीन भाग कर कंपिलि के शासक के पास पहुँच गया। मुहम्मद बिन तुगलक ने कंपिलि को जीतकर सल्तनत में शामिल कर लिया। कंपिलि विजय अभियान में ही मुहम्मद बिन तुगलक कंपिलि राज्य से हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों को बंदी बनाकर लाया था।

विजयनगर साम्राज्य

Raj Holkar

⇒ **स्थापना :-**

कंपिलि विजय के बाद ~~परन्तु~~ कुछ समय बाद दक्षिण भारत में अनेक विद्रोह हुए जैसे आंध्र में प्रोलाय एवं कपाय नायक नामक दो भाइयों ने विद्रोह कर दिया। मदुरा के तुगलक सूबेदार जलालुद्दीन अहसान ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। होयसलों ने भी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। इसी स्थिति का लाभ उठाकर कंपिलि ने भी विद्रोह कर दिया। आंध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र सभी जगह विद्रोह भड़क उठे।

दक्षिण के विद्रोहों को दबाने के लिए मुहम्मद बिन तुगलक ने हरिहर एवं बुक्का को मुक्त कर सेनापति बनाकर दक्षिण के अभियान पर भेजा। हरिहर एवं बुक्का ने कंपिलि के विद्रोह को दबाया। इसी बीच में हरिहर एवं बुक्का विद्यारण्य नामक संत के संपर्क में आए। विद्यारण्य ने अपने गुरु विद्यातीर्थ की अनुमति से हरिहर एवं बुक्का पुनः हिन्दु धर्म में दीक्षित किया।

1336 ई. में हरिहर ने हम्पी हस्तिनावती राज्य की नींव रखी। इसी वर्ष उसने अनेगोण्डी के निकट विजयनगर शहर की स्थापना। एवं संगम वंश की स्थापना की। [विद्यारण्य एवं सायण की प्रेरणा से]

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ विजयनगर साम्राज्य के राजवंश :-

विजयनगर साम्राज्य [1336 - 1565 ई०]

संगम वंश	सालुव वंश	तुलुव वंश	अरावीडु वंश
संस्थापक → हरिहर एवं बुक्का-I	नरसिंह सालुव	वीरनरसिंह	तिरुमल्क

संगम वंश

Raj Holkar

* संगम वंश की स्थापना हरिहर एवं बुक्का ने की।
* संगम वंश का प्रथम शासक हरिहर-I एवं अंतिम शासक विरुपाक्ष-II था।

⇒ हरिहर प्रथम :-

* संगम वंश का प्रथम शासक था। इसने पहली राजधानी अनेगोण्डी को बनाया तथा बाद में विजय नगर को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
* हरिहर-I ने होयसल राज्य को अपने राज्य में मिलाया।
* इसके शासन काल में बहमनी व विजयनगर के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ। संघर्ष का प्रारंभ बहमनी शासक अलाउद्दीन हसन बहमन शाह द्वारा रायचूर के किले पर अधिकार करने के बाद प्रारंभ हुआ।

⇒ बुक्का प्रथम :-

* हरिहर के बाद उसका भाई बुक्का-I शासक बना।
* अभिलेखों में इसे पूर्वी, पश्चिमी व दक्षिणी सागरों का स्वामी कहा गया है।
* बुक्का प्रथम ने मदुरा को विजय नगर साम्राज्य में शामिल किया।
* बुक्का प्रथम ने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की।

⇒ हरिहर-II :-

* यह विजयनगर का प्रथम शासक था जिसने राजाधिराज और राजपरमेश्वर की उपाधि धारण की।
* हरिहर द्वितीय को राजव्यास (राजवाल्मीकी) की उपाधि प्रदान की गयी

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ देवराय -I :-

* देवराय -I ने तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनाकर नहरें निकाली।
* इटली के यात्री निकॉल कोंटी ने इसके शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की।
* देवराय प्रथम ने तेलुगु कवि श्रीनाथ को संरक्षण प्रदान किया। श्रीनाथ ने हरविलास नामक ग्रंथ की रचना की।

Raj Holkar

⇒ देवराय - II :- उपाधि - गजबेटकर

* देवराय - II ने कोंडबिन्दु का दमन किया एवं वेलेम के शासक को विजयनगर की प्रभुसत्ता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।
* देवराय - II ने अपनी सेना में मुसलमानों की भर्ती करना प्रारंभ किया एवं 2000 तुर्की धनुर्धरों को सेना में भर्ती किया।
* देवराय - II के समय फारस (ईरान) का राजदूत अब्दुर्रज्जाक विजयनगर आया था।
* देवराय - II ने कवि श्रीनाथ को कवि सार्वभौम की उपाधि दी।

⇒ मल्लिकार्जुन :- उपाधि - गजबेटकर

* इसके शासन काल में विजयनगर साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो गया था।
* इसे प्रौढ़ देवराय भी कहा जाता है।
* इसने बहमनी शासक अलाउद्दीन -I एवं उड़ीसा के गजपति शासक कपिलेश्वर के संयुक्त आक्रमण को विफल किया था।
* इसके शासन काल में चीनी यात्री माहुयान विजयनगर आया था।

⇒ विरूपाक्ष - II :-

* यह विजयनगर साम्राज्य में संगम वंश का अंतिम शासक था।
* इसके शासन में बहमनी साम्राज्य द्वारा विजयनगर साम्राज्य पर प्रथम विजय प्राप्त की।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

सालुव वंश (50)

* सालुव वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था।

⇒ सालुव नरसिंह :-

* इसके सिंहासन पर बैठने के कुछ समय बाद ही उडीसा के शासक पुरुषोत्तम गजपति ने विजयनगर पर आक्रमण कर दिया तथा सालुव नरसिंह को बंदी बना लिया। बाद में नरसिंह द्वारा मुक्ति की याचना पर इसे छोडा गया। उदयगिरी पर गजपतियों का अधिकार हो गया।
* सालुव नरसिंह ने अरब व्यापारियों से अधिक से अधिक घोडे आयात करने को प्रोत्साहन दिया।

Raj Holkar

⇒ इम्मादि नरसिंह :-

* यह सालुव नरसिंह का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। यह अल्पायु का था अतः सालुव नरसिंह का सेनानायक इसका संरक्षक बना।
* अवसर पाकर सेनानायक नरसा नायक ने सत्ता हथिया ली एवं स्वयं ही शासक बन बैठा।
* नरसा नायक ने चोल, चेर एवं पाण्ड्य शासकों से अपनी अधीनता स्वीकार करवायी।
* नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने इम्मादि नरसिंह की हत्या कर दी। इस प्रकार सालुव वंश समाप्त हो गया।
* वीर नरसिंह ने विजयनगर के तीसरे राजवंश तुलुव वंश की स्थापना की।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

तुलुव वंश

* तुलुव वंश का संस्थापक वीर नरसिंह था एवं अंतिम शासक तिरुमल था।
* वीर नरसिंह ने भुजबल की उपाधि धारण की।

⇒ कृष्ण देवराय :-

Raj Holkar

* कृष्ण देवराय 1509 ई. में गद्दी पर बैठा वह विजयनगर साम्राज्य का महानतम शासक था।
* बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में कृष्णदेवराय को तत्कालीन भारत का सबसे शक्तिशाली शासक ~~कहा~~ कहा है।
* 1510 ई. में अल्बुकर्क ने फादर लुई को कालीकट के जमोरिन के विरुद्ध युद्ध संबंधी समझौता और भटकल एवं मंगलौर के मध्य एक कारखाना स्थापित करने की अनुमति मांगने के लिए विजयनगर भेजा। कृष्ण देवराय ने पुर्तगाली दूत को स्पष्ट उत्तर देकर वापस भेज दिया।

⇒ अदोनी का युद्ध :- 1509-10 ई. में बीदर के सुल्तान महमूद शाह ने विजयनगर पर आक्रमण किया। कृष्णदेवराय ने महमूद शाह की सेना को अदोनी के निकट बुरी तरह पराजित किया। इस युद्ध में बीजापुर का सुल्तान युसुफ आदिल मारा गया। युसुफ आदिल की मृत्यु के बाद उसका अल्पवयस्क उत्तराधिकारी इस्माइल गद्दी पर बैठा।

इस स्थिति का लाभ उठाकर कृष्णदेवराय ने रायचूर एवं गुलबर्गा पर अधिकार कर लिया एवं बीदर पर आक्रमण करके बहमनी शासक महमूद शाह को कासिम बरीद के अधिकार से निकाल कर पुनः सिंहासन पर बैठाया। इस उपलक्ष्य में ~~यवनराज्य स्थापनाचार्य~~ "यवनराज्य स्थापनाचार्य" की उपाधि धारण की

⇒ अष्ट दिग्गज :- कृष्ण देवराय का शासन काल तेलुगु साहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है। कृष्ण देवराय के राजदरबार में तेलुगू के 8 महान विद्वान एवं कवि थे इन्हें अष्टदिग्गज कहा जाता है। इनमें पेड्डाना सर्वप्रमुख थे। ये तेलुगू एवं संस्कृत दोनों भाषाओं के विद्वान थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* कृष्ण देवराय के शासन काल में पुर्तगाली यात्री दुआर्ट बारबोसा एवं डोमिंगो पायस ने विजयनगर की यात्रा की।
* कृष्णदेव राय को आन्ध्र भोज भी कहा जाता है।
* कृष्ण देवराय ने हजारा मंदिर, विट्ठल स्वामी मंदिर एवं चिदम्बरम् मंदिर का निर्माण करवाया था।
* 1520 ई. में कृष्ण देवराय ने विजयनगर के सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया था

⇒ **अच्युत देवराय:-** Raj Holkar

* मृत्यु से पूर्व कृष्णदेव राय ने अच्युत देवराय को उत्तराधिकारी नामजद किया था। परन्तु कृष्ण देवराय के जामाता राम राय अपने साले सदाशिव को शासक बनाना चाहता था। इससे गृहयुद्ध की स्थिति पैदा हो गयी। इस गृहयुद्ध के संकट से रक्षा करने के लिए अच्युत देव राय ने राम राय को शासन में सहभागी बनाया।
* इसी समय उडीसा के गजपति शासक प्रतापरुद्र गजपति एवं बीजापुर के शासक इस्माइल आदिल ने विजयनगर पर आक्रमण किया। अच्युत ने गजपति के शासक का आक्रमण विफल कर दिया परन्तु इस्माइल आदिल ने रायचुर एवं मुद्गल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद गोलकुण्डा के शासक ने भी आक्रमण कर दिया। अच्युत ने गोलकुण्डा को भी पराजित कर दिया।
* अच्युत ने बीजापुर को हराकर रायचुर एवं मुद्गल को पुनः जीत लिया किन्तु राजधानी वापस लौटने पर रामराय ने अच्युत को बंदी बना लिया एवं स्वयं को शासक घोषित कर दिया। परन्तु जब रामराय दक्षिण में एक अभियान पर गया तो अच्युत के अपने साले तिम्मल की सहायता से कारागार से भाग निकला एवं स्वयं को शासक घोषित कर दिया।
* बाद में इब्राहिम आदिलशाह ने अच्युत एवं रामराय के मध्य समझौता करवाया।
* अच्युत की मृत्यु के बाद सत्ता उसके साले सलकराज तिम्मल के हाथ में आ गयी। बाद में राम राय ने इब्राहिम आदिल के साथ मिलकर सलकराज तिम्मल को पराजित कर अच्युत के भतीजे सदाशिव को गद्दी पर बैठा दिया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ सदाशिव :-

Raj Holkar

* सदाशिव के शासन काल में सत्ता राम राय के हाथ में रही।
* रामराय ने बड़ी संख्या में मुसलमानों की भरती प्रारंभ की।
* रामराय ने समकालीन दक्षिण की मुस्लिम सल्तनतों की अन्तर्राज्यीय राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था।

M.Imp

तालीकोटा या राक्षसी तांगडी का युद्ध

विजयनगर की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर दक्षिण की मुस्लिम सल्तनतें इतनी आशंकित हो गयीं कि उन्होंने आपसी झगड़ों को समाप्त कर एक संघ बना कर विजयनगर की शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। ~~युद्ध~~ युद्ध के समय विजयनगर का शासक सदाशिव था।

⇒ युद्ध के पक्ष :- पक्ष - A : विजयनगर
पक्ष - B : अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बीदर

नोट :- बरार इस संघ में शामिल नहीं था।

⇒ युद्ध के कारण :-

- विजयनगर के प्रति दक्षिणी सल्तनतों की समान ईर्ष्या व घृणा
- राम राय द्वारा किया गया राज्यों की अन्तर्राज्यीय राजनीति में हस्तक्षेप।
- राम राय के अहमदनगर आक्रमण के दौरान इस्लाम धर्म का अपमान व मस्जिदों को नष्ट करना [फरिश्ता के अनुसार, प्रमाणनहीं]

⇒ शुरुआत :-

- महासंघ की तैयारी पूर्ण होते ही अली आदिल शाह ने शुरुआत करते हुए रामराय से रायचूर, मुदगल एवं अदोनी किले वापस मांगे किन्तु राम राय ने मना कर दिया। इसके बाद 23 जनवरी, 1565 ई. को युद्ध प्रारंभ हुआ। प्रत्यक्षदर्शी: सेवेल, स्थान : राक्षसी - तांगडी

⇒ परिणाम :-

- प्रारंभ में रामराय ने मुस्लिम सेनाओं को पराजित कर दिया किन्तु संघ की तोपों ने राम राय की सेना में तबाही मचा दी। राम राय की सेना के मुस्लिम सैनिक विपक्ष से जा मिले। राम राय मारा गया।
- संघ सेना ने विजयनगर को खूब लूटा।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

आरवीडु वंश

* तालीकोटा के युद्ध के बाद विजयनगर का वैभव एवं शक्ति नष्ट हो गयी। तिरुमल ने सदाशिव को लेकर पेनुकोंडा (वेनुकोण्डा) को राजधानी बनाया।
* 1570 ई० में तुलुववंश के अंतिम शासक सदाशिव को अपदस्थ कर आरवीडु वंश की स्थापना की।
* वेंकट-II ने 1598 ई० में अपने दरबार में ईसाई पादरियों का स्वागत किया तथा उन्हें अपने साम्राज्य में धर्मप्रचार व गिरिजाघर बनवाने की स्वतंत्रता प्रदान की।
* श्री रंग-III अरावीडु वंश एवं विजयनगर साम्राज्य का अंतिम शासक था।

Raj Holkar

विजयनगर का प्रशासन

Raj Holkar

⇒ केन्द्रीय प्रशासन:-

* विजयनगर साम्राज्य का शासन राजतंत्रात्मक था। राजा को राय कहा जाता था वह ईश्वर के समतुल्य माना जाता था।
* प्राचीन काल की भांति राज्य की सप्तांग विचारधारा पर जोर दिया गया
* विजयनगर नरेश अपने जीवन काल में ही उत्तराधिकारियों को नामजद कर देते थे।
* विजयनगर शासकों ने धर्म के मामले में धर्म निरपेक्ष नीति अपनायी।

राजपरिषद:- यह राजा की शक्ति पर नियंत्रण की सबसे शक्तिशाली संस्था थी। राजा, राज्य के समस्त मामलों एवं नीतियों के संबंध में इससे परामर्श लेता था। राजपरिषद में प्रांतों के नायक, सामन्त शासक, प्रमुख धर्माचार्यों, विद्वानों, संगीतकारों, कलाकारों, व्यापारियों यहाँ तक कि विदेशी राज्यों के राजदूतों को शामिल किया जाता था।

मंत्रिपरिषद:- राजपरिषद के बाद मंत्रिपरिषद नामक संस्था थी। इसका प्रमुख अधिकारी 'प्रधानी' या 'महाप्रधानी' होता था।

* राजा एवं युवराज के बाद केन्द्र का सबसे प्रधान अधिकारी प्रधानी होता था जिसकी तुलना हम मराठा कालीन पेशवा से कर सकते हैं।

रायसम: यह सचिव होता था जो राजा के मौखिक आदेशों को लिपिबद्ध करता था।

कर्णिकम: यह लेखाधिकारी होता था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ प्रांतीय प्रशासन :-

प्रान्त [विजय-नगर साम्राज्य प्रांतों में बंटा था]
↓ प्रांत, मण्डलों में बंटा था।
मण्डल [कमिश्नरी]
↓ मण्डल, कोट्टमों में बंटा था।
कोट्टम/वलनाडु [जिले]
↓ कोट्टम, नाडुओं में बंटा था।
नाडु/तहसील [तहसील]
↓ नाडु, मेलाग्रामों में बंटा था।
मेलाग्राम [ग्रामों का समूह]
↓ मेलाग्राम, उर एवं ग्रामों से मिलकर बना था।
उर/ग्राम [प्रशासन की सबसे छोटी इकाई]

Raj Holkar

Raj Holkar

नायंकार व्यवस्था :-

इस व्यवस्था के अंतर्गत विजयनगर नरेश सैनिक एवं असैनिक अधिकारियों को उनकी विशेष सेवाओं के बदले भू-क्षेत्र विशेष प्रदान कर देते थे। यह भूमि अमरम कहलाती थी। इसे ग्रहण करने वाले अमरनायक कहलाते थे। प्रारंभ में यह व्यवस्था सेवा शर्तों पर आधारित थी जो बाद में आनुवांशिक हो गयी।

उंबलि पद्धति :- ग्राम में कुछ विशेष सेवाओं के बदले लगान मुक्त भूमि दी जाती थी यह उंबलि कही जाती थी।

रत्त (खत्त) कोडगे :- युद्ध में शौर्य प्रदर्शन करने वालों या युद्ध में अनुचित रूप से मृत लोगों के परिवार को दी गयी भूमि रत्त (खत्त) कोडगे कहलाती थी।

कुट्टगि :- ब्राह्मण, मंदिर, बड़े भू-स्वामी जो स्वयं खेती नहीं करते थे, वे इस भूमि को अन्य किसानों को पट्टे पर उठाया करते थे यह भूमि कुट्टगि कहलाती थी।

कुदि :- खेती में लगे किसान-मजदूर को कुदि कहलाता था।

भण्डारवाद ग्राम :- ऐसे ग्राम जिनकी भूमि राज्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थी। इन ग्रामों के किसान राज्य को कर देते थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

Raj Holkar

⇒ स्थानीय प्रशासन :-

* इस [redacted] काल में सभा, महासभा, उर एवं महाजन नामक ग्रामीण संस्थाएं थी।
* गाँव की सार्वजनिक जमीन को बेचने का अधिकार था ये ग्राम सभाएं राजकीय करों को भी एकत्रित करती थी।
* ब्रह्मदेय ग्रामों की सभाओं को चतुर्वेदि मंगलम कहा गया है।

नाडु :- यह गाँव से एक बडी राजनीतिक इकाई थी। इसी संस्था को नाडु एवं इसके सदस्यों को 'नात्तवार' कहा जाता था।

* विजयनगर साम्राज्य में आयगार व्यवस्था स्थानीय प्रदेशों के शासन की व्यवस्था प्रचलित थी।

आयगार व्यवस्था :-

इस व्यवस्था के अनुसार, एक स्वतंत्र इकाई के रूप में प्रत्येक ग्राम को संगठित किया गया। इसके प्रशासन के लिए बारह शासकीय व्यक्तियों को नियुक्त किया जाता था। इस बारह शासकीय व्यक्तियों के समूह को आयगार कहा जाता था। इनकी नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती थी। ये पद आनुवांशिक था। आयगारों को वेतन रूप में लगान एवं कर मुक्त भूमि प्रदान की जाती थी।

⇒ विजयनगर साम्राज्य के कर :-

विजयनगर साम्राज्य के प्रमुख कर :- कदमई, मगमाई, कनिक्कई, कत्तनम, वरम्, भोगम्, वारि, पत्तम, इराई और कत्तायम्।

* विजयनगर साम्राज्य में विवाह कर भी लिया जाता था।
* विजयनगर साम्राज्य में वेश्याओं से प्राप्त कर से पुलिश को वेतन दिया जाता।
* 'शिष्ट' नामक कर राज्य की आय का प्रमुख स्त्रोत था।

⇒ विजयनगर साम्राज्य के सिक्के :-

सोने के सिक्के : वराह (सर्वाधिक प्रसिद्ध) अन्य नाम : हूण या पगोडा कहा जाता था।
अन्य सिक्के : प्रताप एवं फणम्

चाँदी के सिक्के : तार

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

विजयनगर साम्राज्य में समाज

* विजयनगर साम्राज्य में समाज शास्त्रीय परम्पराओं पर आधारित था।
* विजय नगर साम्राज्य वर्ण व्यवस्था पर आधारित था।
* ब्राह्मणों को अनेक विशेषाधिकार प्राप्त थे ब्राह्मणों को मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता था।

सतशूद्र: ये वे शूद्र थे जिन्होंने ऊँची जाति के लोगों के विशेषाधिकारों को हड़प लिया था।

⇒ **दासप्रथा**:- विजय नगर में दास प्रथा प्रचलित थी। मनुष्यों के क्रय-विक्रय को बेसवाग कहा जाता था।

⇒ **स्त्रियों की दसा**:- विनयनगर में स्त्रियों की स्थिति सम्मान जनक थी।

* स्त्रियाँ मल्लयोद्धा, ज्योतिजी, भविष्यवक्ता, अंगरक्षिकाएँ, सुरक्षाकर्मी, लेखाधिकारी, लिपिक एवं संगीतकार होती थी।
* विजय नगर साम्राज्य एकमात्र साम्राज्य था जिसने विशाल संख्या में स्त्रियों को विभिन्न पदों पर नियुक्त किया।
* विजय नगर साम्राज्य में देवदासी प्रथा प्रचलित थी। देवदासियों को मंदिरों में देव पूजा के लिए रखा जाता था। इन्हें वेतन भी दिया जाता था।
* समाज में पर्दाप्रथा प्रचलित नहीं थी।
* विधवाओं की स्थिति दयनीय थी।
* सतीप्रथा: विजय नगर साम्राज्य में सती प्रथा प्रचलित थी। लिंगायत सम्प्रदाय की विधवाओं को जीवित दफना दिया जाता था।

Raj Hollkar

गंडपेन्द्र:- यह पैर में पहने जाने वाला कड़ा था। यह युद्ध में वीरता का प्रतीक था।

* विजयनगर साम्राज्य का प्रमुख त्यौहार महानवमी था।
* विजयनगर साम्राज्य काल में यक्षगान नृत्य का विकास हुआ।

लिपाक्षी कला:- यह विजय नगर साम्राज्य की स्वतंत्र चित्रकला शैली थी।

यक्षणी शैली:- यह विजयनगर साम्राज्य में नृत्य एवं संगीत की मिश्रित शैली थी।

* विजय नगर साम्राज्य में बाल विवाह प्रचलित था।
* कुलीन एवं राजाओं में बहु विवाह प्रचलित था।
* विजयनगर में वृहत स्तर पर वेश्यावृति प्रचलित थी। यह संगठित थी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* विजय नगर साम्राज्य में नन्दिनागरी लिपि का प्रयोग होता था।
* 1367 ई० की लड़ाई में पहली बार विजयनगर (बुक्का -I) तथा बहमनी (मुहम्मद शाह -I) के बीच युद्ध में बहमनी शासक ने पहली बार तोप का प्रयोग हुआ।

⇒ सोनार की बेटी का युद्ध :- यह युद्ध विजयनगर शासक देवराय तथा बहमनी शासक फिरोजशाह के बीच हुआ था।

⇒ कृष्ण देवराय की रचनाएँ :- Raj Hollkar

i) आमुक्त माल्मद (तेलुगू) ii) जाम्बवती कल्याण (संस्कृत)
iii) ऊषा परिणय

* विरुपाक्ष ने संस्कृत में नारायण विलास नामक पुस्तक लिखी।
* कृष्णदेवराय के अष्टदिग्गजों से पेड्डाना को आन्ध्र कविता का पितामह कहलाता है।
* विजयनगर साम्राज्य में कालीकट प्रमुख बन्दरगाह था।
* नन्दी तिम्म ने परिजात हरण की रचना की थी।
* नन्नया ने महाभारत का तेलुगू भाषा में अनुवाद प्रारंभ किया था परन्तु पूर्ण नहीं कर सका।
* वीरभद्र ने कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम का तेलुगु भाषा में अनुवाद किया।
* हरिहर के स्वर्ण वाराह सिक्कों पर हनुमान एवं गरुड़ की आकृति का अंकन हुआ था।
* सदाशिवराय के सिक्कों पर लक्ष्मी नारायण की आकृतियों का अंकन हुआ था।
* तुलुव वंश के सिक्कों पर बैल, गरुड, उमा महेश्वर, वेंकटेश और बालकृष्ण की आकृतियों का अंकन हुआ था।
* विजयनगर साम्राज्य में सबसे अधिक निर्यात काली मिर्च का एवं सबसे अधिक आयात घोड़ों का होता था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

बहमनी साम्राज्य

Raj Holkar

⇒ **स्थापना :-** मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिण में साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण करते हुए दक्षिण के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था। मुहम्मद बिन तुगलक ने इनके प्रशासन के लिए 'अमीरान ए सदह' नामक अधिकारी नियुक्त किए इन्हें "सादी" भी कहा जाता था। ये अधिकारी राजस्व वसूल करते थे साथ ही सैनिक टुकड़ियों के भी प्रधान होते थे। ये बहुत शक्तिशाली थे।

जब तुगलक शासन के विरुद्ध सर्वत्र विद्रोह प्रारंभ हुआ इसका लाभ उठाकर 'सादी अमीरों' ने भी विद्रोह प्रारंभ कर दिए। दौलताबाद में नियुक्त तुगलक वायसराय को पराजित कर दौलताबाद पर अधिकार कर लिया। इस्माइल को इन अमीरों ने अपना नेता चुना। इस्माइल ने अमीरों के इस संघ के प्रमुख व्यक्ति हसन को अमीर-उल-उमरा एवं जफर खां की उपाधियों से विभूषित किया। जफर खां ने सागर और गुलबर्गा पर अधिकार कर लिया। अपनी शक्ति एवं सफलताओं के कारण जफर खां बहुत लोकप्रिय हो गया तथा इस्माइल शाह ने इसके पक्ष में सत्ता समर्पित कर दी।

* 1346 ई. में जफर खां ने अलाउद्दीन हसन बहमन शाह की उपाधिधारण की और नए बहमनी वंश का संस्थापक बना।

⇒ **अलाउद्दीन हसन बहमनशाह (हसन गंगू) :-**

* इसने बहमनी साम्राज्य की स्थापना की। इस समय दिल्ली सल्तनत पर मुहम्मद बिन तुगलक का शासन था।
* इसने कंधार, कोइलगिरी, कल्याणी, बीदर, गुलबर्गा एवं दाबुल पर अधिकार किया।

Raj Holkar

⇒ **मुहम्मद प्रथम :-**

* यह हसन गंगू का पुत्र था। इसका शासन विजयनगर एवं तेलंगाना के साथ युद्ध में बीता।
* इसने तेलंगाना के युद्ध में कपाय नायक को पराजित किया तथा तेलंगाना के राजसिंहासन तख्त-ए-फिरोजा को छीन लिया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

[Source : H.C. Verma

* मुहम्मद शाह प्रथम (मुहम्मद प्रथम) ने संपूर्ण बहमनी साम्राज्य को 4 प्रांतों में विभाजित किया था - i) दौलताबाद ii) बरार iii) बीदर iv) गुलबर्गा

* मुहम्मद प्रथम के काल में बारूद का उपयोग पहली बार प्रारंभ हुआ, जिसने सेना संगठन में एक नई क्रांति पैदा की। सेनानायक को अमीर-उल-उमरा कहा जाता था।

Raj Holkar

⇒ ताजुद्दीन फिरोज :-

* बहमनी वंश का सर्वाधिक विद्वान सुल्तानों में से एक। विदेशों से अनेक प्रसिद्ध विद्वानों को दक्षिण में आकर बसने के लिए प्रेरित किया।
* इसने भीमा नदी के किनारे फिरोजाबाद नगर की नींव डाली।

⇒ शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम :-

* इसने राजधानी को गुलबर्गा के स्थान पर बीदर स्थानांतरित किया। नवीन राजधानी का नाम मुहम्मदाबाद रखा।
* इसे इतिहास में अहमद शाह वली या संत भी कहा जाता है।

⇒ महमूद गँवा :- महमूद गँवा अफाकी (ईरानी) मूल का था। प्रारंभ में यह एक व्यापारी था। बहमनी सुल्तानों में हुमायुं के पुत्र निजामुद्दीन अहमद के अल्पवयस्क होने पर उसके संरक्षण के लिए एक प्रशासनिक परिषद का निर्माण किया गया। महमूद गँवा इस परिषद का सदस्य था।

* महमूद - III के राज्यारोहण के समय महमूद गँवा को प्रधानमंत्री बनाया गया। महमूद गवां को ख्वाजा जहाँ की उपाधि दी गयी।
* महमूद गवां ने पूर्व के 4 प्रांतों को 8 प्रांतों में विभाजित किया।

YD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

बहमनी साम्राज्य का पतन

Raj Holkar

⇒ कारण :-

* दक्खनियों एवं अफाकियों (ईरानी, अरब और तुर्की) के मध्य विद्वेष एवं अंतर्विरोध।
* सुल्तान फिरोज का हिन्दुओं की ओर विशेष झुकाव।
* सुल्तान शिहाबुद्दीन अहमद द्वारा ईरान के शिया संतों को आमंत्रित करना इससे दक्खनी सुन्नी मुसलमानों में असंतोष बढ़ा
* बहमन सुल्तानों द्वारा लड़े गए अनेक अनिर्णित युद्ध।
* बहमनी साम्राज्य एवं विजयनगर साम्राज्य के लगातार युद्ध।
* बहमन साम्राज्य की आंतरिक षड्यंत्र एवं एकता का अभाव।

⇒ अंत :-

1490 ई० में बीदर में बारीद शाही का प्रभाव स्थापित हो गया। प्रांतीय तराफदारों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित करना प्रारंभ कर दिया और पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में बहमन साम्राज्य खंडित हो गया।

बहमनी साम्राज्य से अलग हुए प्रांत (उत्तरवर्ती दक्कन सल्तनत राज्य)

* बहमनी साम्राज्य का [redacted] शासक कलीमुल्लाह [redacted] बहमन वंश का अंतिम शासक था।
* बहमनी साम्राज्य के पतन के बाद 5 दक्कन सल्तनत राज्यों का उदय हुआ –
  1. बरार : सर्वप्रथम बहमनी साम्राज्य से अलग होने की घोषणा
  2. बीजापुर : आदिल शाही वंश
  3. अहमदनगर : निजामशाही वंश
  4. गोलकुण्डा : कुतुबशाही वंश
  5. बीदर : बारीद शाही वंश

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

1. बरार सल्तनत :- इमादशाही वंश राजधानी: एलिचपुर, गाविलगढ़

* सर्वप्रथम बहमनी राज्य से अलग होने की घोषणा करने वाला क्षेत्र बरार था।
राजधानियाँ: i) एलिचपुर ii) गाविलगढ़
* इमादशाही वंश का संस्थापक फतेह उल्लाह खां इमादुल्मुल्क था।
* शासक :- फतेह उल्लाह → अलाउद्दीन इमादशाह → दरया इमादशाह → बुरहान इमादशाह
इसके मंत्री तूफाल ने इसे कैद कर लिया एवं स्वयं गद्दी पर अधिकार कर लिया। अंत में अहमदनगर के शासक मुर्तजा निजामशाह ने बुरहान को कैद से आजाद किया एवं बरार को 1574 ई० में अहमदनगर में मिला लिया।

2. बीजापुर सल्तनत : आदिलशाही वंश राजधानी : नौरसपुर

* बीजापुर के आदिलशाही राजवंश का संस्थापक युसुफ आदिलशाह खाँ था
* आदिलशाही सुल्तान स्वयं को तुर्की ऑटोमन राजवंश के वंशज मानते थे

3. अहमदनगर :- निजामशाही वंश राजधानी : जुन्नार, अहमदनगर एवं खिरकी

* अहमदनगर के निजामशाही वंश का संस्थापक अहमदशाह था। इसको निजामुल्मुल्क की उपाधि प्रदान की गयी थी।

4. गोलकुण्डा :- कुतुबशाही वंश राजधानी : गोलकुण्डा

* गोलकुण्डा के कुतुबशाही वंश का संस्थापक कुली कुतुबशाह था।
* गोलकुण्डा साहित्यकारों की बौद्धिक क्रीडा स्थली था।

5. बीदर :- बारीदशाही वंश राजधानी : बीदर

* बीदर में बारीदशाही वंश का संस्थापक अमीर अली बारीद था।
* अमीर अली बारीद को दक्कन का लोमडी कहा जाता है।
* इब्राहिम आदिलशाह -II ने बीदर पर आक्रमण कर 1619 ई० में इसे बीजापुर में शामिल कर लिया था।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

सूफी एवं भक्ति आन्दोलन

⇒ **कारण :-**

* मध्यकालीन जड हो चुके समाज में धार्मिक आडम्बरों एवं कुरीतियों ने हिन्दु, मुस्लिम एवं बौध्द सभी धर्मों में अपनी जडें जमा ली थी।
* लोगों में आपसी सद्भावना की कमी एवं सामाजिक भेदभाव का प्रभाव।
* वर्ण एवं जाति व्यवस्था अत्यधिक कठोर हो गयी थी एवं अनेक सामाजिक बुराइयों ने समाज को दूषित कर दिया था।
* शासक वर्ग के अनाचारों से आम जन में गहरी निराशा उत्पन्न हो चुकी थी।

⇒ **प्रभाव/परिणाम :-**

* भक्ति के प्रति आस्था का विकास
* लोकभाषाओं में साहित्य रचना का आरंभ
* सहिष्णुता की भावना का विकास
* जाति व्यवस्था के बंधनों में शिथिलता
* विचार एवं कर्म दोनों स्तरों पर समाज का उन्नयन।

KD Job Updates
Raj Holkar
Raj Holkar

सूफी आन्दोलन

⇒ **उत्पत्ति/उदय :-** सूफी शब्द को अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग अर्थों में परिभाषित किया है जैसे - 'सफ' शब्द का ऊनी वस्त्र धारण करने वाला। 'सफा' शब्द का अर्थ आचार-विचार से पवित्र व्यक्ति से है। एक मत यह भी है कि "मदीना में मुहम्मद साहब द्वारा बनवायी मस्जिद के बाहर 'सफा' नामक पहाडी पर जिन व्यक्तियों ने शरण ली तथा खुदा की आराधना में लीन रहे वे सूफी कहलाए।

सूफीवाद का उद्भव ईरान में हुआ। प्रारंभिक सूफियों में राबिया प्रसिध्द है। सूफीवाद इस्लाम के भीतर सुधारवादी आन्दोलन था। राबिया एवं मंसूर बिन हल्लाज ने क्रमशः 8वीं एवं 10वीं शताब्दी में ईश्वर एवं व्यक्ति के बीच प्रेम संबंध पर बल दिया। अल गज्जाली ने रहस्यवाद एवं इस्लामी परंपरावाद को मिलाने का प्रयत्न किया इब्न उल अरबी ने सूफी जगत में वहदत उल वुजूद का सिध्दांत प्रतिपादित किया जो एकेश्वरवाद से संबंधित था।

Scanned by CamScanner

⇒ भारत में सूफीवाद का उदय :-

* भारत में सूफियों का आगमन महमूद गजनवी के आगमन के साथ हुआ था। भारत आने वाले प्रथम संत शेख इस्माइल थे जो लाहौर आए। इनके उत्तराधिकारी शेख अली बिन उस्मान अल हुजवीरी थे जो दातागंज बख्श नाम से विख्यात थे।
* शेख अली बिन उस्मान अल हुजवीरी ने सूफी मत से संबंधित प्रसिद्ध रचना कश्फुल महजुब का लेखन किया।
* ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, 1192 ई० में शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी के साथ भारत आए थे इन्होंने भारत में चिश्ती सम्प्रदाय की नींव रखी।

⇒ सूफीवाद के समूह :-

Raj Holkar

मोटे तौर पर सूफीवाद को 2 समूहों में विभाजित किया जाता है -

i) बासरा समूह : ये इस्लामिक कानूनों में विश्वास रखते थे।

ii) बेसरा समूह : ये इस्लामिक कानूनों में विश्वास नहीं रखते। ये घुमक्कड़ संत थे।

⇒ सूफीवाद का दर्शन :-

* सूफीवाद ने इस्लामिक कट्टरपन को त्याग धार्मिक रहस्यवाद अपनाया।
* सूफीवाद में इस्लाम धर्म एवं कुरान के महत्व को स्वीकारा है परन्तु इस्लाम धर्म के कर्मकाण्डों व कट्टरपंथी विचारों का विरोध किया।
* सूफी संतों ने ऐकेश्वरवाद में विश्वास किया है। इसके अनुसार, ईश्वर एक है, सब कुछ ईश्वर में है। त्याग एवं प्रेम के द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।
* सूफी संतों ने ईश्वर को प्रेमी माना है एवं इसी प्रेम में भक्ति, त्याग, प्रेम, अहिंसा, उपासना एवं संगीत को साधन बनाया है।

⇒ सूफी उपासना पद्धति :-

* सूफी संतों की उपासना को जियारत कहा गया है। जियारत में सूफी संत दरगाहों पर नाच एवं संगीत के माध्यम से अपनी प्रेम व भक्ति को प्रस्तुत करते थे। विशेष रूप से कव्वाली, जिक्र, एवं समा के द्वारा उपासना करते थे।
* कौल (कव्वाली से पहले व अंत की कहावत) की शुरुआत अमीर खुशरो ने की

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

सूफी सिलसिले / सम्प्रदाय

Raj Holkar

⇒ चिश्ती सिलसिला :-

प्रमुख चिश्ती संत

- अबु अबदाल चिश्ती
  - ↑ संस्थापक [भारत के बाहर]
- शेख हारुन
  - ↑ मोइनुद्दीन चिश्ती के गुरु
- मोइनुद्दीन चिश्ती
  - ↑ भारत में चिश्ती संप्रदाय के संस्थापक
- बख्तियार काकी
  - ↑ मोइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य
- बाबा फरीद
  - ↑ बख्तियार काकी के शिष्य
- निजामुद्दीन औलिया
  - ↑ बाबा फरीद के शिष्य

* भारत में चिश्ती सम्प्रदाय की स्थापना ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने की। चिश्ती सम्प्रदाय भारत में ही चला अफगानिस्तान की शाखा समाप्त हो गयी थी।

⇒ ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती :-

* ये 1192 ई० में शिहाबुद्दीन गोरी की सेना के साथ भारत आए। कुछ दिन लाहौर में ठहरे बाद में अजमेर जाकर बस गए।
* यात्रा क्रम → लाहौर → दिल्ली → अजमेर।
* जन्म : अफगानिस्तान के सिस्तान में।
* मृत्यु : अजमेर (राजस्थान)
* खानकाह (दरगाह) : अजमेर (राजस्थान)
* शिष्य : योगी रामदेव, जयपाल, शेख हमीदउद्दीन नागौरी एवं कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
* इनके समय अजमेर पर पृथ्वीराज चौहान का शासन था।
* मुगल सम्राट अकबर ने इनकी दरगाह की 2 बार पैदल यात्रा की।
* इन्होंने धर्मांतरण को गलत माना था। ये धर्म की स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे।

⇒ ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी :-

Raj Holkar

* ये ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।
* ये इल्तुतमिश के समय भारत आए थे।
* उपाधि :- कुतुब - उल - अकताब, रईस - उल - सालिकी, - सिराज - उल - औलिया
  शिष्य : बाबा फरीद / शेख फरीद।
* कुव्वत - उल - इस्लाम मस्जिद एवं कुतुबमीनार बख्तियार काकी को समर्पित है।
* जन्म : फरगना मृत्यु : दिल्ली।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ बाबा फरीद :-

* बाबा फरीद बलवन का दामाद था। इनका नाम शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर था। ये बख्तियार काकी के शिष्य एवं उत्तराधिकारी थे।
* बाबा फरीद के कुछ रचनाओं को गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित किया गया था।

जन्म: मुल्तान मृत्यु: पाटन शिष्य: शेख निजामुद्दीन औलिया

⇒ शेख निजामुद्दीन औलिया :-

Raj Holkar

* ये बाबा फरीद के शिष्य थे।

जन्म: बदायुं (उत्तर प्रदेश) मृत्यु: दिल्ली

शिष्य: अमीर खुसरो, शिराजुद्दीन उस्मानी, शेख बुरहानुद्दीन गरीब, नासिरुद्दीन-चिराग-ए-देहलवी।

* निजामुद्दीन औलिया एक मात्र चिश्ती संत थे जो अविवाहित थे।
* निजामुद्दीन औलिया ने 7 सुल्तानों का शासन देखा था परन्तु किसी सुल्तान के दरबार में नहीं गये।
* गयासुद्दीन तुगलक के औलिया से कटु संबंध थे।
* निजामुद्दीन औलिया को महबूब ए इलाही एवं सुल्तान-उल-औलिया कहा जाता है।
* निजामुद्दीन औलिया ने सुलह-ए-कुल का सिद्धांत दिया था।
* निजामुद्दीन औलिया ने योग एवं प्रणायाम को अपनाया एवं योगी सिद्ध कहलाए

KD Job Updates

औलिया के शिष्य :-

Raj Holkar

i) शेख सिराजुद्दीन उस्मानी :

* निजामुद्दीन औलिया ने इन्हें आइना-ए-हिन्द की उपाधि प्रदान की।
* इन्होने बंगाल में निजामुद्दीन औलिया के उपदेशों को पहुँचाया।

ii) शेख बुरहानुद्दीन गरीब :-

* मुहम्मद बिन तुगलक ने इन्हें दक्षिण जाने के लिए बाध्य किया।
* इन्होने दक्षिण भारत में चिश्ती सम्प्रदाय की नींव रखी।

iii) शेख नासिरुद्दीन चिराग देहलवी :-

* निजामुद्दीन औलिया ने इन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।
* इन्होने फिरोज शाह तुगलक को गद्दी पर बैठाने में सहायता की थी।

Scanned by CamScanner

⇒ ख्वाजा सैय्यद मुहम्मद गेसूदराज :-

* ये नासिरूद्दीन चिराग देहलवी के शिष्य थे।
* इन्होने दक्षिण भारत में गुलबर्गा को अपनी शिक्षा का केन्द्र बनाया।
* इन्हें बंदा नवाज की उपाधि प्राप्त की थी।
* गेसूदराज के बाद चिश्ती संप्रदाय 3 शाखाओं में विभाजित हो गया -
  i) साबिरी शाखा : संस्थापक - मखदूम अलाउद्दीन अली महमूद साबरी
  ii) हुसैनी शाखा : संस्थापक - हिसामुद्दीन
  iii) हमजाशाही शाखा : संस्थापक - शेख हम्जा

Raj Holkar

⇒ शेख सलीम चिश्ती :-

* शेख सलीम चिश्ती, चिश्ती शाखा के अंतिम उल्लेखनीय संत थे।
* शेख सलीम चिश्ती अरब में रहे उन्हें शेख-उल-हिंद की पदवी दी।
* सलीम चिश्ती ने 24 बार मक्का की यात्रा की।
* ये मुगल सम्राट अकबर के समकालीन थे।
* इनके आशीर्वाद से अकबर के पुत्र सलीम का जन्म हुआ था। इन्हीं के नाम पर अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम रखा।
* इनकी ~~दरगाह~~ मकबरा फतेहपुर सीकरी में स्थित है।

सुहरावर्दी सम्प्रदाय

संस्थापक : शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी
भारत में संस्थापक : बहाउद्दीन जकारिया

KD Job Updates
Raj Holkar

* बहाउद्दीन जकारिया इल्तुतमिश, कुबाचा एवं बाबा फरीद के समकालीन थे।
* इन्होने मुल्तान को अपनी शिक्षा का केन्द्र बनाया।
* इल्तुतमिश ने जकारिया को शेख-उल-इस्लाम का पद दिया।

⇒ सैय्यद जलालुद्दीन जहांनियां जहांगश्त :-

* इन्होने 36 बार मक्का की यात्रा की। फिरोज शाह तुगलक ने इन्हें शेख-उल-इस्लाम (प्रधान काजी) का पद दिया था।
* सुहरावर्दी संत शेख मूसा सदैव स्त्री के वेश में रहते थे। नृत्य एवं संगीत में अपना समय व्यतीत करते थे।

Scanned by CamScanner

फिरदौसी सिलसिला

* इस सिलसिले की स्थापना शेख नदरुद्दीन ने की थी। इसका कार्यक्षेत्र बिहार में था। यह सिलसिला सोहरावर्दी सिलसिले की ही एक शाखा है।
* इस सिलसिले का प्रमुख संत सरफुद्दीन याहिया मनेरी था जो फिरोज शाह तुगलक के समकालीन था।

Raj Holkar

कादिरी संप्रदाय

* इस संप्रदाय की स्थापना अब्दुल कादिर जिलानी ने की थी।
* कादिरी शाखा के लोग गाने बजाने के विरोधी थे। ये हरे रंग की पगडी पहनते थे एवं पगडी में लाल गुलाब का फूल लगाते थे।
* मुगल शासक दारा शिकोह इस सिलसिले का अनुयायी था।
* लोदी सुल्तान सिकन्दर लोदी इस शाखा के मकदूम जिलानी का शिष्य था
* इस शाखा के संत शेख मीर/मियां मीर, मुगल शासक शाहजहाँ एवं जहांगीर का समकालीन था।
* मियां मीर ने ही स्वर्ण मंदिर की नींव रखी थी।
* कादिरी संप्रदाय का विभाजन 2 उप संप्रदायों में हुआ -
  i) रजकिया : संस्थापक : शहजादा अब्दुल रज्जाक
  ii) वहाबिया : संस्थापक : अब्दुल वहाब

नक्शबंदी सिलसिला

* इसकी स्थापना अकबर के काल में ख्वाजा बाकी बिल्लाह ने की।
* शेख अहमद सरहिन्दी इस शाखा के प्रसिद्ध संत थे इन्हें मुजद्दिद आलिफसानी के नाम से जाना गया। जहांगीर, सरहिन्दी का शिष्य था।
* सूफियों में यह सर्वाधिक कट्टरवादी सिलसिला था।

शत्तारि सिलसिला

* इस शाखा की स्थापना लोदी काल में शेख अब्दुल्ला शत्तार ने की थी।
* संगीत सम्राट तानसेन इस सिलसिले के संत मोहम्मद गौस के शिष्य थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

भक्ति आन्दोलन

Raj Holkar

⇒ **उद्भव एवं विकास :-**

हिन्दु जीवन का मूल उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है जिसके 3 मार्ग (कर्म, ज्ञान एवं भक्ति) हैं। कर्म का उल्लेख गीता में मिलता है। ज्ञान का प्रतिपादन उपनिषदों एवं दर्शन में मिलता है। भक्ति का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वर उपनिषद में मिलता है। अतः मोक्ष प्राप्ति के लिए जो आन्दोलन चलाया गया इसे भक्ति आन्दोलन कहा गया।

भारत में भक्ति आन्दोलन का इतिहास अत्यंत प्राचीन है भक्ति के बीज वेदों में विद्यमान हैं। मौर्योत्तर काल में भागवत एवं शैव पंथ भी भक्ति पर आधारित थे। इसी काल में ही गौतम बुद्ध की पूजा प्रारंभ हुई। मध्यकाल में शुरु हुआ भक्ति आन्दोलन, एक भक्ति आन्दोलन मात्र न होकर सुधारवादी आन्दोलन था।

⇒ **प्रारंभ :** भक्ति आन्दोलन का आरंभ दक्षिण भारत में सातवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य हुआ। यह दो चरणों में पूर्ण हुआ इसका दूसरा चरण तेरहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक चला।

* दक्षिण भारत में शुरु हुए इस आन्दोलन के प्रवर्तक शंकराचार्य थे इनके उपरान्त तमिल वैष्णव संत अलवार एवं शैव संत नयनारों ने इस आन्दोलन का प्रचार प्रसार किया एवं लोकप्रिय बनाया।

⇒ **आन्दोलन की प्रकृति : क्या यह मात्र भक्ति आन्दोलन था?**

यह आन्दोलन विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। किन्तु कुछ मूलभूत सिद्धांत ऐसे थे जो समग्र रूप से पूरे आन्दोलन पर लागू होते थे -

- धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार किया एवं जाति प्रथा का विरोध किया।
- यह विश्वास स्पष्ट किया कि मनुष्य एवं ईश्वर के बीच तादात्म्य प्रत्येक मनुष्य के सद्गुणों पर निर्भर करता है न कि उसकी ऊँची जाति अथवा धन संपत्ति पर।
- इस विचार पर जोर दिया कि भक्ति ही आराधना का उच्चतम स्वरूप है। इसी के आलोक में कर्मकाण्डों, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन आदि की निंदा की।

अतः मनुष्य की सत्ता को सर्वोपरि मानने वाला यह आन्दोलन मात्र भक्ति और भगवत भजन वाला सामान्य आन्दोलन नहीं था बल्कि इसके आगे जातिगत, सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों से मुक्ति की छटपटाहट से उपजा लोक सुधारवादी आंदोलन था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ भक्ति आन्दोलन की विशेषताएं :-

* ईश्वर की एकता (एकेश्वरवाद) पर बल
* भक्ति मार्ग को महत्व
* आडम्बरों, अंधविश्वासों तथा कर्मकाण्डों से दूर रहकर धार्मिक सरलता पर बल
* जनसाधारण / लोक भाषाओं / क्षेत्रीय भाषाओं में प्रचार
* ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण
* मानवता वादी दृष्टिकोण
* समाज में व्याप्त जातिवाद, ऊँच ~~नीच~~ नीच जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध

भक्ति आन्दोलन से जुड़े प्रमुख संत

Raj Holkar

दक्षिण भारत के संत

शंकराचार्य | रामानुजाचार्य | माधवाचार्य | निम्बार्क | अलवार संत | नयनार संत

⇒ शंकराचार्य :-

जन्म : केरल में अल्वर नदी के तट पर कलादि ग्राम में [788 ई.]
मृत्यु : बद्रीनाथ [820 ई.] **उपाधि :** परमहँस
दार्शनिक मत : अद्वैतवाद का प्रतिपादन
कार्य : नव ब्राह्मण धर्म की स्थापना
दर्शन / विचार : जगत को मिथ्या तथा ईश्वर को सत्य माना
- ब्रह्म की प्राप्ति के लिए ज्ञान मार्ग पर बल दिया।
- बौद्ध धर्म की महायान शाखा से प्रभावित होने के कारण इन्हें प्रच्छन्न बौद्ध कहा गया है।

प्रमुख रचनाएं :- ब्रह्मसूत्र भाष्य, गीता भाष्य, उपदेश साहसी, मरीषापच्चम
स्थापित मठ :-
ज्योतिषपीठ - बद्रीनाथ, उत्तराखण्ड [विष्णु]
गोवर्धनपीठ - पुरी, ओडीसा [बलभद्र व सुभद्रा]
शारदा पीठ - द्वारिका, गुजरात [कृष्ण]
श्रृंगेरी पीठ - मैसूर, कर्नाटक [शिव]
कांचीपुरम पीठ - तमिलनाडु

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ रामानुज :-

जन्म : तिरुपति (आंध्रप्रदेश) गुरु : यादव प्रकाश

दार्शनिक मत : विशिष्टाद्वैतवाद सम्प्रदाय : वैष्णव सम्प्रदाय

दर्शन/विचार :- रामानुज सगुण ईश्वर में विश्वास करते थे। इन्होने भक्ति मार्ग को मोक्ष का साधन माना है। रामानुज का विशिष्टाद्वैत वाद का मत शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के विरोध में प्रतिक्रिया थी। रामानुज के अनुसार ब्रह्मा, जीव तथा जगत तीनों में विशिष्ट संबंध है तथा तीनों सत्य हैं।

रचनाएँ :- वेदांतसार, ब्रह्मसूत्र भाष्य, ~~भगवद्गीता~~ भगवद्गीता पर टीका एवं न्याय कुलिश की रचना की।

* दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत रामानुज ने की थी। रामानुज को दक्षिण में विष्णु का अवतार मानते हैं।

Raj Holkar

⇒ माधवाचार्य :-

जन्म : कर्नाटक सम्प्रदाय : ब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना

दार्शनिक मत : द्वैतवाद

दर्शन/विचार :- माधवाचार्य ने शंकराचार्य के अद्वैतवाद एवं रामानुज के विशिष्टाद्वैत वाद का खण्डन किया तथा द्वैतवाद का प्रतिपादन किया।

* माधवाचार्य ने निर्गुण ब्रह्म के स्थान पर विष्णु की प्रतिष्ठा स्थापित की। इन्होने जगत को ब्रह्म/नारायण से पृथक माना।
* माधवाचार्य ने आत्मा एवं परमात्मा को अलग-अलग मानते थे। माधवाचार्य ने भक्ति मार्ग को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया। इन्होने 3 मार्गों को मोक्ष मार्ग बताया है:- कर्म, ज्ञान एवं भक्ति।
* इन्होने अपने उपदेश कन्नड भाषा में दिए। इनके उपदेशों का संकलन सूत्र भाष्य (जयतीर्थ द्वारा लिखित) में किया गया है।
* माधवाचार्य ने चरित्र की शुद्धता, अहिंसा, सत्य, संतोष, सादगी, ज्ञान, अपरिग्रह और ईश्वर की भक्ति पर विशेष जोर दिया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ निम्बार्क :-

जन्म : बेल्लारी जिला (मद्रास) सम्प्रदाय : सनक सम्प्रदाय
दार्शनिक मत : द्वैताद्वैतवाद कार्य क्षेत्र : वृंदावन
दर्शन/विचार :- ये सगुण भक्ति के समर्थक थे। कृष्ण को शंकर का अवतार मानते थे। इन्होंने द्वैतवाद एवं अद्वैतवाद दोनों सिद्धांतों को मिलाकर द्वैताद्वैतवाद का प्रतिपादन किया।
* निम्बार्क को सुदर्शन चक्र का अवतार माना जाता है।
* इन्होंने दस श्लोकी सिद्धांत रत्न की रचना की थी।

⇒ अलवार संत :-

* अलवार संत एकेश्वरवादी थे।
* ये विष्णु की भक्ति एवं पूजा से मोक्ष प्राप्त करने में विश्वास रखते थे।

अलवार संत [कुल 12 संत]

- पल्लव देश
  - पोयगई
  - भूतार
  - पेयालवार
  - तिरुमलिसई
- चेर देश
  - कुलशेखर
  - चेर देश के एकमात्र संत
- पाण्ड्य देश
  - नम्मालवार
  - मधुरकवि
  - पेरियालवार
  - अण्डाल → अलवारों में एकमात्र महिला।
- चोल देश
  - तोण्डरदिपपोडि
  - तियप्पान
  - तियमंगई

⇒ नयनार संत :-

* नयनार संत शिव भक्त थे। इनकी संख्या 63 बतायी जाती है।
* नयनारों के भक्तिगीतों को देवारम नामक संकलन में संकलित है।

प्रमुख नयनार संत : निरुनावुक्करशु, तिरुज्ञान संबंदर, सुन्दरमूर्ति एवं मणिक्कावाचार

Raj Holkar
KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

उत्तर भारत के संत

- रामानंद
  - रामानंद के शिष्य: धन्ना, पीपा, रैदास, कबीर, पद्मावती
- सूरदास
- चैतन्य
- वल्लभाचार्य
- मीराबाई
- दादूदयाल
- मलूक दास

Raj Holkar

⇒ रामानंद :-

जन्म: इलाहाबाद **संप्रदाय** :- रामानंदी संप्रदाय एवं श्री संप्रदाय

कार्यक्षेत्र: बनारस **गुरु** :- राघवानंद

दर्शन / विचार :- ये प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने ईश्वर की आराधना का द्वार महिलाओं के लिए खोला। रामानंद प्रथम संत थे जिन्होंने हिन्दी भाषा में अपने विचारों को प्रचारित किया।

* रामानंद ने बाह्य आडम्बरों का विरोध करते हुए ईश्वर की सच्ची भक्ति तथा मानव प्रेम पर बल दिया।
* रामानंद भक्ति आन्दोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत की ओर लेकर आए।

KD Job Updates
Raj Holkar

⇒ सूरदास :-

जन्म: रुनकता (आगरा) **गुरु**: वल्लभाचार्य

रचनाएं: सूरसागर, साहित्य लहरी, सूरसरावली

* ये भक्ति आन्दोलन की सगुणधारा के कृष्णमार्गी शाखा के प्रमुख थे
* सूरदास ने वल्लभाचार्य से वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की।
* सूरदास को पुष्टि मार्ग का जहाज कहा गया है।
* सूरदास मुगल शासक अकबर का समकालीन थे।

⇒ रैदास (रविदास) :-

जन्म : वाराणसी उपाधि: संतों का संत

* रविदास, रामानंद के शिष्य थे। ये कबीर के समकालीन थे।
* रैदास ने ईश्वर के प्रति समर्पण का प्रचार किया एवं अवतारवाद का विखण्डन किया। इन्होंने रैदास की स्थापना की।

Scanned by CamScanner

⇒ वल्लभाचार्य :-

जन्म : वाराणसी उपाधि : जगतगुरु, महाप्रभु, श्रीमदाचार्य
दार्शनिक मत :- शुध्द अद्वैतवाद संप्रदाय : रुद्र सम्प्रदाय

* वल्लभाचार्य वैष्णव धर्म के कृष्ण मार्गी शाखा के दूसरे महान संत थे।
* वल्लभाचार्य को शासक कृष्ण देवराय ने संरक्षण प्रदान किया।
* बल्लभाचार्य ने शुध्द अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया। ये कृष्ण के उपासक थे। श्री नाथ जी के रूप में उन्होने कृष्ण भक्ति पर बल दिया
* वल्लभाचार्य ने भक्तिवाद के पुष्टिमार्ग की स्थापना की।
* वल्लभाचार्य ने सगुण भक्ति मार्ग को अपनाया।

⇒ विट्ठलनाथ :

Raj Holkar

* ये वल्लभाचार्य के पुत्र एवं उत्तराधिकारी थे। इन्होने ~~कृष्ण~~ कृष्ण भक्ति को लोकप्रिय बनाया।

अष्टछाप : ये 8 कवियों का समूह था। इसकी स्थापना विट्ठलनाथ ने की थी। इसमें शामिल कवि : 1. कुंभनदास 2. सूरदास 3. कृष्णदास 4. परमानंद दास 5. गोविन्द दास 6. क्षितिस्वामी 7. नंद दास 8. चतुर्भुजदास।

* विट्ठलनाथ अकबर के समकालीन थे।

KD Job Updates
Raj Holkar

⇒ कबीरदास :-

जन्म : वाराणसी (उत्तर प्रदेश) मृत्यु : संतकबीर नगर (उत्तर प्रदेश)
गुरु : रामानंद शिष्य : दादू दयाल एवं मलूक दास

* कबीर सुल्तान सिकन्दर लोदी के समकालीन थे।
* कबीर निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे।
* कबीर ने एकेश्वरवाद को अपनाया। कबीर ने आत्मा एवं परमात्मा को एक माना है। कबीर ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया था।
* कबीर हिन्दु - मुस्लिम एकता के समर्थक थे।
* कबीर की विचारधारा विशुध्द अद्वैतवादी थी।
* कबीरदास के सिध्दांतों को उनके शिष्य धर्मदास ने बीजक में संकलित किया।

Scanned by CamScanner

⇒ चैतन्य महाप्रभु :-

जन्म : प० बंगाल वास्तविक नाम : विश्वम्भर बचपन का नाम : निमाई
गुरु : केशव भारती

* वृन्दावन को तीर्थस्थल के रूप में स्थापित करने के लिए चैतन्य ने 6 गोस्वामियों को भेजा
* चैतन्य वैष्णव धर्म के कृष्ण मार्गी शाखा से संबंधित थे।
* चैतन्य ने भक्ति की कीर्तन प्रणाली की शुरुआत की।
* बंगाल में उनके अनुयायी उन्हें भगवान विष्णु एवं कृष्ण के अवतार मानते थे।
* चैतन्य ने गोसाई संघ की स्थापना की।
* इन्होने वृंदावन में राधा और कृष्ण को अध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया।
* चैतन्य महाप्रभु के दार्शनिक सिद्धांत को अचिन्त्य भेदाभेद के नाम से जाना जाता है।

⇒ मीराबाई :-

जन्म : मेड़ता (राजस्थान) के कुदकी ग्राम में गुरु : रैदास पति : भोजराज

* मीराबाई अपने इष्टदेव कृष्ण की भक्ति पति के रूप में करती थी।
* मीराबाई की तुलना प्रसिद्ध सूफी महिला राबिया से की जाती है।
* मीराबाई के भक्ति गीत को पदावली कहा जाता है।
* मीराबाई ने गीत गोविन्द पर टीका लिखी थी।
* मीरा के पिता का नाम रतनसिंह राठौड़ था। मीरा की मृत्यु द्वारका (गुजरात) में हुई।

Raj Holkar

Raj Holkar

KD Job Updates

⇒ तुलसीदास :-

जन्म : बांदा जिला (उत्तर प्रदेश)

* तुलसीदास मुगल शासक अकबर के समकालीन थे।
* तुलसीदास ने सगुण ब्रह्म को अपनाया।
* तुलसीदास ने शैव और वैष्णव धर्म सम्प्रदाय के बीच एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया।
* तुलसीदास ने अकबर काल में रामचरित मानस की रचना की। [अवधी भाषा में]
* तुलसीदास ने श्री राम को अपना इष्ट माना एवं उनकी भक्ति में लीन रहे।

रचनाएं : कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका, रामचरित्र मानस, दोहावली, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछू, पार्वती मंगल आदि।

Scanned by CamScanner

⇒ दादू दयाल :-

जन्म: अहमदाबाद (गुजरात) गुरु: कमाल (कबीर का पुत्र)

सम्प्रदाय: ब्रह्म / पर ब्रह्म संप्रदाय

* दादू कबीर पंथी थे। दादू निर्गुण भक्ति के समर्थक थे।
* दादू ने हिन्दु-मुस्लिम एकता पर बल दिया। भक्ति को राजस्थान में फैलाया।
* दादू अकबर के समकालीन थे।

सिक्ख संप्रदाय

Raj Holkar

Raj Holkar
KD Job Updates

⇒ सिक्ख संप्रदाय के 10 गुरु :-

1. गुरु नानक : सिक्ख धर्म के संस्थापक
2. गुरु अंगद : गुरुमुखी लिपि के जनक
3. गुरु अमरदास : गुरु प्रसार हेतु 22 गद्दियों का निर्माण
4. गुरु रामदास : अमृतसर के संस्थापक
5. गुरु अर्जुनदास : गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन
   स्वर्ण मंदिर का निर्माण, जहाँगीर ने फांसी दी।
6. गुरु हरगोविन्द : अकाल तख्त की स्थापना
7. गुरु हरराय : मुगलों के उत्तराधिकार युद्ध में भाग लिया
8. गुरु हरिकृष्ण : अल्प वयस्क अवस्था में मृत्यु
9. गुरु तेग बहादुर : ऑरंगजेब ने फांसी दी।
10. गुरु गोविन्द सिंह : खालसा सेना का गठन।

⇒ गुरु नानक देव :-

जन्म : ननकाना साहिब, तलवंडी (पाकिस्तान) मृत्यु : करतार पुर

दार्शनिक मत : ऐकेश्वर वाद [कबीर का मार्ग अपनाया]

* ये निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल देते थे। , ईश्वर एक है।
* नारी मुक्ति की दिशा में कार्य किए, सती प्रथा का विरोध किया
* लंगर (सामूहिक भोज) की शुरुआत की
* नानक देव ने दौलत खां लोदी के यहाँ नौकरी की थी।
* सिक्ख धर्म की स्थापना गुरु नानक ने की थी।

Scanned by CamScanner

महाराष्ट्र के संत (77)

⇒ **महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन का स्वरूप :-**

महाराष्ट्र धर्म वैष्णववादी भक्ति परंपरा से निकली मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन की एक शाखा थी। यह आन्दोलन एक उदारवादी आन्दोलन था महाराष्ट्र में कृष्ण का अवतार माने जाने वाले विठोवा देव की पूजा की जाती थी। इस आन्दोलन का केन्द्र पंढरपुर था।

यह आन्दोलन कृष्ण भक्ति पर आधारित था तथा मूर्तिपूजा से जुड़ा हुआ नहीं था।

Raj Holkar

⇒ **महाराष्ट्र भक्ति आंदोलन का विभाजन :**

i) **धारकरी संप्रदाय :** ये राम पूजक थे। इसके प्रमुख संत एकनाथ एवं रामदास थे।

ii) **बारकरी संप्रदाय :** ये विष्णु के रूप में विठोवा की उपासना करते थे। इस संप्रदाय के संस्थापक तुकाराम थे। इसका प्रमुख केन्द्र पंढरपुर था।

Raj Holkar

⇒ **संत ज्ञानेश्वर / ज्ञानदेव :-**

* इन्होंने महाराष्ट्र में भागवत् धर्म की आधारशिला रखी एवं बारकरी पंथ को बढ़ावा दिया।
* ज्ञानेश्वर को वारकरी संप्रदाय में विष्णु का अवतार माना जाता है।
* ज्ञानेश्वर ने मराठी भाषा में गीता पर ज्ञानेश्वरी नामक टीका लिखी।

⇒ **नामदेव :-** ये ज्ञानेश्वर के शिष्य एवं बारकरी संप्रदाय के संत थे।

* इन्होंने ब्राह्मणों की सत्ता को चुनौती दी एवं जाति प्रथा का विरोध

⇒ **तुकाराम :-** ये वारकरी संप्रदाय के संस्थापक एवं शिवा जी के समकालीन थे।

⇒ **रामदास :-** ये धारकरी संप्रदाय से संबंधित थे। शिवा जी के समकालीन थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ प्रमुख मत एवं प्रवर्तक :-

i) अद्वैतवाद - शंकराचार्य
ii) विशिष्टाद्वैतवाद - रामानुज
iii) द्वैताद्वैतवाद - निम्बार्क
iv) शुद्धाद्वैतवाद - वल्लभाचार्य
v) द्वैतवाद - माधवाचार्य
vi) भेदाभेदवाद - भास्कराचार्य
vii) शैव विशिष्टाद्वैतवाद - श्रीकंठ

Raj Holkar

⇒ संत एवं उनके संप्रदाय :-

i) रामानुजाचार्य - श्री संप्रदाय
ii) माधवाचार्य - ब्रह्म संप्रदाय
iii) वल्लभाचार्य - रुद्र संप्रदाय
iv) तुकाराम - बारकरी संप्रदाय
v) रामदास - धरकरी संप्रदाय
vi) माधवाचार्य - हरियाली संप्रदाय
vii) निम्बार्क - सनक संप्रदाय
viii) गुरु नानक - सिक्ख संप्रदाय
ix) जगजीवन साहब - सतनामी संप्रदाय
x) शंकराचार्य - स्मृति संप्रदाय

⇒ निर्गुण एवं सगुण ब्रह्म से संबंधित संत :-

सगुण ब्रह्म उपासक	निर्गुण ब्रह्म उपासक
- निम्बार्काचार्य	- कबीरदास
- रामानुजाचार्य	- दादू दयाल
- माधवाचार्य	- रामानंद
- सूरदास	- रैदास
- मीराबाई	- गुरुनानक
- वल्लभाचार्य	
- चैतन्य महाप्रभु	
- तुलसीदास	

KD Job Updates
Raj Holkar

निर्गुण भक्ति :- इसके अनुसार ईश्वर निराकार है, उसका कोई रूप रंग नहीं है। इसमें मूर्तिपूजा एवं अवतारवाद को स्थान नहीं है।

सगुण भक्ति : इसके अनुसार ईश्वर शरीरधारी है। वह रंग, रूप, आकार, दया, क्रोध आदि गुणों से युक्त है। इसमें मूर्तिपूजा एवं अवतारवाद को स्थान दिया गया है।

Scanned by CamScanner

मुगल साम्राज्य

⇒ मुगल कौन थे ?

मुगल, मंगोल एवं तुर्की वंश के मिश्रण से उत्पन्न वंश था। माता की ओर से ये मंगोलवंशी चंगेज खान से संबंध रखते थे तथा पिता की ओर से ये तुर्क शासक तैमूर के वंशज थे। मुगलों ने स्वयं को तिमूर वंशी माना है।

⇒ बाबर कौन था ?

बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 ई. को अफगानिस्तान के फरगना प्रांत में हुआ। बाबर का पिता उमर शेख मिर्जा फरगना का एक तुर्क शासक था। 1494 ई. में बाबर का पिता एक छज्जे पर खड़ा होकर कबूतर उड़ा रहा था और छज्जा टूट जाने से उसकी मृत्यु हो गयी इस प्रकार बाबर महज 12 वर्ष की उम्र में फरगना की राजगद्दी पर बैठा।

⇒ भारत आने से पूर्व मध्य एशिया में बाबर का जीवन :-

Raj Holkar

तैमूरी साम्राज्य के विघटन के बाद मध्य तथा पश्चिमी एशिया में तीन शक्तिशाली साम्राज्य उदित हुए -

- **उज्बेक** [ट्रांसआक्सियाना/मावरा-उन-नहर पर शासन]
- **सफवी** [ईरान पर शासन]
- **उस्मानली (ऑटोमन)** [आधुनिक तुर्की तथा सीरिया पर शासन]

KD Job Updates
Raj Holkar

⇒ **ऑटोमन साम्राज्य एवं सफवियों के बीच संघर्ष :-** बगदाद, ईरान एवं अजरबैजान के प्रभुत्व को लेकर एवं शिया व सुन्नी का आपसी झगड़ा।

⇒ **तैमूर एवं उज्बेकों के मध्य संघर्ष :-** इनका संघर्ष कजाकिस्तान में उज्बेक खानों की रियासत की स्थापना के बाद। मंगोल एवं तुर्क के साथ था।

सफवी → ट्रांसआक्सियान ← ऑटोमन

तिमूरवंश

इन सभी प्रतिद्वंदियों की आँख ट्रांसआक्सियाना पर लगी रहती थी।

Scanned by CamScanner

* ट्रांसआक्सियाना के लिए चलने वाले संघर्ष का केन्द्र-बिन्दु समरकन्द का नियंत्रण था।
* बाबर ने समरकन्द को दो बार जीता और उस पर कुछ-कुछ समय काबिज रहने के बाद दोनों बार उसे खो दिया।

पहली बार समरकंद विजय: 1497 ई० में बाबर ने समरकंद को जीता परन्तु शीघ्र ही उसने नगर त्याग दिया क्योंकि वहाँ से पैसा, रसद, लूट का सामान में कुछ भी नहीं मिला।

जब बाबर फरगना के लिए लौटता इससे पहले ही कुछ बेगों ने उसके सौतेले भाई जहाँगीर मिर्जा को फरगना की गद्दी पर बैठा दिया। इस प्रकार बाबर समरकन्द के साथ अपना राज्य (फरगना) भी खो बैठा।

Raj Holkar

समरकंद पर दूसरी विजय: 1501 ई० में बाबर ने समरकन्द पर एक बार विजय प्राप्त की। क्योंकि समरकंद के तैमूरी सुल्तान की माँ ने उजबेक के शैबानी खान से सौदा करके समरकन्द शैबानी खान को दे दिया एवं शैबानी खान से विवाह कर लिया था।

'सर-ए-पुल' का युद्ध :- यह युद्ध 1502 ई० में बाबर एवं उजबेक शासक शैबानी खान के मध्य हुआ। इस युद्ध में ही उज्बेकों ने तुलुगमा पद्धति का प्रयोग कर बाबर को बुरी तरह हराया था। बाद में इसी पद्धति का उपयोग बाबर ने पानीपत के युद्ध में किया एवं इब्राहिम लोदी को हराया था।

बाबर की काबुल विजय :- बार-बार असफलताओं के बाद बाबर को लगने लगा था कि उस क्षेत्र में उसका टिका रहना असंभव है। इसी स्थिति में बाबर ने काबुल एवं गजनी [1504 ई०] पर आक्रमण कर काबुल व गजनी का शासक बन गया।

काबुल विजय से बाबर को दो प्रमुख लाभ हुए पहला, बाबर को उज्बेकों से चैन मिला। दूसरा, काबुल में बैठकर बाबर अब हिन्दुस्तान एवं खुरासान दोनों पर नजर रख सकता था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ बाबर का भारत अभियान :-

* सन् 1519 ई. में बाबर ने अपना आक्रमण बाजौर पर किया और बाजौर एवं भीरा को जीत लिया। यह भारत विजय के लिए किया गया पहला आक्रमण था। इसी युध्द में बाबर ने सर्वप्रथम बारूद एवं तोपखाने का प्रयोग किया।

* पानीपत का प्रथम युध्द [21 अप्रैल, 1526] :-

Raj Holkar

पृष्ठभूमि :- बाजौर एवं भीरा पर कब्जा करने के बाद बाबर उन प्रदेशों पर अपना अधिकार जताने लगा जो तैमूर ने जीते थे। इसी क्रम में बाबर ने इब्राहिम लोदी के पास एक दूत भेजकर कहलवाना चाहा कि वह जो इलाके तैमूर के थे उन्हें बाबर को वापस कर दे। परन्तु लाहौर के सूबेदार दौलत खां लोदी ने उस दूत को इब्राहिम लोदी के पास नहीं जाने दिया।

दौलत खां लोदी ने अपनी आय का हिस्सा इब्राहिम को नहीं पहुंचाया था इस कारण सुल्तान की कार्यवाही के डर से अपने बेटे दिलावर खां को बाबर के पास भेजा एवं ~~युध्द~~ के भारत पर आक्रमण करने का न्यौता दिया। इब्राहिम लोदी से पराजित होकर बहलोल लोदी का बेटा आलम खां लोदी भी बाबर के पास काबुल पहुंच गया। ठीक इसी समय राणा सांगा का एक दूत भी बाबर के पास पहुंचा एवं बाबर को दिल्ली पर आक्रमण के लिए न्यौता दिया और कहा जिस समय बाबर दिल्ली पर आक्रमण करेगा उसी समय राणा सांगा आगरा पर आक्रमण करेगा।

उपरोक्त घटनाओं के बाद बाबर को आभास हो गया कि भारत को जीतना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। और इसी महत्वाकांक्षा के साथ बाबर ने पानीपत के युध्द को लड़ा एवं विजय प्राप्त की।

KD Job Updates

Raj Holkar

घटनाक्रम :-

* 1525 ई० में बाबर ने भारत विजय के लिए काबुल से कूच किया। उसके पास लगभग 12000 सैनिकों की फौज थी। बाबर पहले स्यालकोट पहुंचा और बाद में लाहौर पहुंचा।
* लाहौर को दौलत खां लोदी ने घेर रखा था परन्तु बाबर की फौज को देख दौलत खां की सेना भाग गयी एवं दौलत खां ने बाबर के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। बाबर ने लाहौर पर कब्जा किया एवं आगे बढ़ गया।

Scanned by CamScanner

* पंजाब को जीतकर बाबर दिल्ली की ओर बढ़ा। बाबर एवं इब्राहिम लोदी की सेना पानीपत में आमने सामने हुई। बाबर के अनुसार इब्राहिम लोदी की सेना में 1 लाख लोग एवं 1000 हाथी थे परन्तु अफगान स्त्रोतों के अनुसार बाबर की सेना लोदी की सेना से बहुत कम थी लोदी की सेना में 50,000 लोग थे।
* बाबर ने युद्ध क्षेत्र में तुलुगमा पद्धति का प्रयोग कर इब्राहिम लोदी की सेना को घेर लिया एवं रूमी पद्धति (तोपों को सजाने की पद्धति) के प्रयोग से तोपों को सजाया तथा तोपची उस्ताद अली एवं मुस्तफा की सहायता से भरपूर गोलाबारी की।
* पानीपत के युद्ध स्थल पर ही इब्राहिम लोदी एवं ग्वालियर का शासक विक्रमाजीत मारा गया। बाबर ने इस निर्णायक युद्ध में विजय प्राप्त की।

Raj Holkar

⇒ पानीपत के युद्ध के परिणाम / प्रभाव :-

* पानीपत का युद्ध राजनीतिक दृष्टि से इतना निर्णायक नहीं था जितना सैनिक दृष्टि से था परन्तु राजनैतिक रूप में भी इस युद्ध ने अहम भूमिका निभायी तथा उत्तर भारत में एक नयी शक्ति का उदय हुआ।
* लोदियों का सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया तथा सल्तनत की सत्ता अब मुगलों के हाथ में आ गयी।
* लोदी सुल्तानों द्वारा संचित किया गया कोष अब बाबर के पास आ गया जिससे बाबर की वित्तिय कठिनाइयाँ दूर हो गयी।

⇒ अतिरिक्त तथ्य :-

* बाबर ने तुलुगमा पद्धति को उज्बेकों से सीखा था।
* बाबर ने 1506 ई० में फैसला लिया कि उसके सभी अनुगामी बाबर को पादशाह कहें।
* बाबर का भारत पर पहला आक्रमण बाजौर - भीरा (1519) था इब्राहिम लोदी पर किया गया आक्रमण बाबर का पाँचवाँ आक्रमण था।
* बाबर का पूरा नाम जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर था।
* रूमि पद्धति / उस्मानी पद्धति : दो गाड़ियों के बीच तोप को सजाना था।
* हुमायुं ने बाबर को कोहिनूर हीरा दिया था। हुमायुं ने यह हीरा ग्वालियर के राजा विक्रमादित्य / विक्रमाजीत से प्राप्त किया था।
* बाबर को कलन्दर कहा जाता था। पानीपत युद्ध के प्रत्यक्षदर्शी गुरु नानक थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ खानवा का युध्द :- [16 मार्च, 1527]

पृष्ठभूमि :- बाबर ने राणा सांगा पर समझौता भंग करने का आरोप लगाया और कहा कि समझौते के अनुसार मैंने दिल्ली पर आक्रमण किया परन्तु राणा सांगा ने आगरा पर आक्रमण नहीं किया। दूसरी ओर, राणा सांगा ने पहले सोचा था कि बाबर भारत में स्थायी रूप से राज नहीं करेगा परन्तु पानीपत की जीत एवं बाबर के स्थायी साम्राज्य निर्माण को देख राणा सांगा ने एक महा गठजोड बनाकर बाबर को भारत से बाहर कर पुनः लोदी शासन स्थापित करने की योजना बनायी।

घटना क्रम :-

Raj Holkar

16 मार्च 1527 ई० खानवा नामक स्थान पर बाबर एवं राणा सांगा के मध्य युध्द हुआ।

शामिल पक्ष: i) बाबर की सेना

ii) राणा सांगा एवं गठबंधन : गठबंधन में लगभग सभी राजपूत राजा, मालवा का मेदिनी राय, महमूद लोदी, हसन खां मेवाती, आलम खां लोदी शामिल थे।

Raj Holkar

* बाबर ने इस युध्द में सैनिक मनोबल बढ़ाने के लिए जिहाद का नारा दिया। एवं मुसलमानों पर लगने वाले तमगा नामक कर को समाप्त करने की घोषणा की।
* बाबर ने खानवा का युध्द जीतने के बाद गाजी की उपाधि धारण की।

KD Job Updates

⇒ चन्देरी का युध्द :- [29 जनवरी, 1528]

* चंदेरी का युध्द बाबर एवं मालवा शासक मेदिनी राय के बीच हुआ। इस युध्द में बाबर विजयी रहा एवं मेदिनी राय मारा गया।
* इस युध्द में भी बाबर ने जिहाद का नारा दिया था।
* चन्देरी एवं खानवा के युध्द में बाबर ने राजपूतों की खोपडियों के बुर्ज एवं मीनार बनाने के आदेश दिए थे।

Scanned by CamScanner

⇒ **घाघरा का युध्द : [5, अप्रैल 1529]**

* घाघरा का युध्द बाबर एवं अफगानों के बीच बिहार में घाघरा नदी के तट पर लडा गया। इसमें बाबर की विजय हुई।
* यह बाबर द्वारा लडा गया अंतिम युध्द था।
* इस युध्द के बाद 'बाबर का भारत पर स्थायी रूप से अधिकार हो गया एवं बाबर के साम्राज्य की सीमा सिंधु से लेकर बिहार एवं हिमालय से ग्वालियर तक फैल गयी।

Raj Holkar

⇒ **बाबर की मृत्यु :-**

* बाबर की मृत्यु 26 दिसम्बर, 1530 ई० को आगरा में हुई। बाबर को आगरा के आराम बाग में दफनाया गया था किन्तु बाद में काबुल में दफनाया गया था।

अन्य तथ्य :-

* बाबर ने "तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा)" नामक आत्मकथा तुर्की भाषा में लिखी।
* बाबर ने काबुल में शाहरुख एवं कंधार में बाबरी नामक सिक्के चलाए।
* बाबर ने 'सुल्तान' की परंपरा को तोडा एवं खुद को "बादशाह" घोषित किया।
* बाबर ने नापने के लिए गज-ए-बाबरी नामक माप का प्रयोग किया।
* बाबर ने मुबईयान नामक पद्यशैली का विकास किया।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

हुमायुं

मुगल शासक

बाबर
↓
हुमायुं
↓
अकबर
↓
जहांगीर
↓
शाहजहां
↓
ऑरंगजेब
↓
बहादुरशाह-I
↓
जहांदारशाह
↓
फर्रुखसियार
↓
रफी उद दरजात
↓
रफी उद्दौला
↓
मुहम्मद शाह
↓
अहमद शाह
↓
आलमगीर-II
↓
शाह आलम-II
↓
अकबर शाह-II → बहादुर शाह जफर (अंतिम)

* बाबर के 4 पुत्र थे - इनमें राज्य का विभाजन हुआ।
  ① हुमायुं → दिल्ली एवं आगरा
  ② कामरान → काबुल एवं कांधार
  ③ असकरी → संभल
  ④ हिंदाल → अलवर
* हुमायुं का राज्याभिषेक आगरा में हुआ।

⇒ **हुमायुं द्वारा लड़े गये युद्ध :-**

Raj Holkar

1. **कालिंजर पर आक्रमण** [1531]
   * हुमायुं का पहला सैनिक अभियान बुन्देलखण्ड के कालिंजर के विरुद्ध था। कालिंजर का शासक प्रताप रुद्र देव था। यह अभियान असफल रहा।
2. **दोहरिया का युद्ध :-** [1532]
   * यह युद्ध हुमायुं एवं अफगान शासक महमूद लोदी के बीच हुआ। इसमें हुमायुं की जीत हुई।
3. **चुनार पर घेरा :-** [1532 ई.]
   * इस समय चुनार पर अफगान शासक शेरखां का अधिकार था। शेरखां ने हुमायुं की अधीनता स्वीकार कर ली।
4. **बहादुर शाह से संघर्ष :-** [1535-36 ई.]
   * हुमायुं ने बहादुर शाह पर आक्रमण किया इसमें गुजरात शासक बहादुर शाह पराजित हुआ।
   * हुमायुं ने माण्डू एवं चम्पानेर किले को जीता।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

5. चौसा का युध्द :- [26 जून, 1539 ई.]

* यह युध्द अफगान शासक शेरखाँ (शेरशाह सूरी) एवं हुमायुं के बीच हुआ
* इस युध्द में हुमायुं पराजित हुआ।
* शेरखां ने शेरशाह उपाधि धारण की।
* हुमायुं घोडे सहित गंगा में कूद गया एवं निजाम नामक भिस्ती की सहायता से जान बचायी। हुमायुं ने इस उपकार के बदले भिस्ती को एक दिन का बादशाह बनाया था।

6. बिलग्राम का युध्द :- [17 मई, 1540 ई.]

* यह युध्द शेरशाह सूरी एवं हुमायुं के बीच लडा गया। इसमें हुमायुं बुरी तरह पराजित हुआ।
* इस युध्द के बाद हुमायुं भारत छोडकर सिंध भाग गया।
* शेरशाह सूरी ने दिल्ली एवं आगरा पर अधिकार कर लिया। एवं सूर वंश की स्थापना की।

सूर वंश

KD Job Updates
Raj Holkar

⇒ निर्वासन काल में हुमायुं :-

* बिलग्राम के युध्द में पराजित होने के बाद ~~भारत~~ प्रारंभ में हुमायु ने अमरकोट के राणा वीरसाल के यहाँ शरण ली।
* हुमायुं ने 1541 ई. में हमीदा बानो बेगम से निकाह किया एवं अमरकोट में ही हमीदा बानो ने अकबर को जन्म दिया।
* अमरकोट से हुमायुं ने ईरान के शाह के यहाँ शरण ली।
* 1545 ई. में हुमायुं ने कंधार व काबुल पर अधिकार कर लिया
* हुमायुं ने 1555 ई. में ईरान के शाह तथा बैरम खाँ की मदद से पुनः सिंहासन प्राप्त किया।

Scanned by CamScanner

सूर वंश (द्वितीय अफगान राज्य) (87)

* बिलग्राम के युध्द में हुमायुं को हराकर शेरखां (शेरशाह सूरी) ने सूरवंश की स्थापना की।

Raj Holkar

⇒ शेरशाह सूरी :-

* शेरशाह के बचपन का नाम फरीद था। बिहार के सूबेदार बहार खां लोहानी ने फरीद को शेरखां की उपाधि दी थी।
* बहार खां (मुहम्मद शाह) की मृत्यु के बाद शेरखां ने उसकी पत्नि से विवाह कर लिया एवं बिहार का शासक बन बैठा।
* शेरखां ने चौसा के युध्द में हुमायुं को पराजित किया एवं शेरशाह की उपाधि धारण की।
* बिलग्राम के युध्द में हुमायुं को पराजित किया एवं दिल्ली सल्तनत पर अधिकार कर लिया। दिल्ली में द्वितीय अफगान राज्य की स्थापना की।

* शेरशाह सूरी के विजय अभियान :

Raj Holkar

- 1543 ई. में रायसीन पर आक्रमण किया एवं वहाँ के शासक पूरनमल की धोखे से हत्या कर दी। यह शेरशाह के चरित्र पर कलंक था। इस घटना के बाद शेरशाह के बेटे कुतुब खां ने आत्महत्या कर ली थी।

- 1545 ई. में शेरशाह ने मारवाड के शासक मालदेव पर आक्रमण किया। मालदेव मारा गया परन्तु मालदेव के राजपूत सरदार जैता एवं कुप्पा ने अपनी वीरता से अफगानी सेना के छक्के छुडा दिए। इस आक्रमण के लिए शेरशाह सूरी ने कहा, "मुट्ठी भर बाजरे के लिए लगभग हिन्दुस्तान का साम्राज्य खो चुका था।"

- 1545 ई. में शेरशाह सूरी ने अपना अंतिम अभियान कलिंजर के विरुध्द किया था। इस समय कलिंजर का शासक कीरत सिंह था। इसी अभियान में शेरशाह उक्का नामक आग्नेयास्त्र से गोला फेंक रहा था परन्तु गोला उसके पास रखे बारुद के ढेर पर गिर गया जिससे शेरशाह सूरी की मृत्यु हो गयी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ शेरशाह सूरी द्वारा किए गए सुधार :-

* शेरशाह का प्रशासन अत्यंत केन्द्रीकृत था। मंत्री स्वयं निर्णय नहीं ले सकते थे।
* शेरशाह ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य को 47 सरकारों में विभाजित किया था।
* शेरशाह ने बंगाल सूबे को 19 सरकारों में विभाजित किया।

शिकदार का पद - यह सैनिक अधिकारी था।
मुंसिफ - ए - मुंसिफान - यह एक न्यायिक अधिकारी था।

* शेरशाह की लगान व्यवस्था मुख्य रूप से रैय्यतवाड़ी थी जिसमें किसानों से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया गया था।
* शेरशाह ने उत्पादन के आधार पर भूमि को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था - अच्छी, मध्यम एवं खराब।

जरीबाना :- यह भूमि सर्वेक्षण शुल्क था। Raj Holkar
महासिलाना :- यह कर संग्रह शुल्क था।

* गाँवों में कानून - व्यवस्था स्थापित करने का काम चौधरी एवं मुकद्दम नामक स्थानीय मुखिया करते थे।
* शेरशाह सूरी ने सड़क निर्माण पर बहुत बल दिया। शेरशाह सूरी मार्ग जिसे वर्तमान में ग्राण्ड ट्रंक रोड (G.T. Road) कहते हैं। इसका निर्माण शेरशाह सूरी ने करवाया था।
* शेरशाह सूरी ने चाँदी का रूपया (180 ग्रेन) एवं ताँबे का दाम (380 ग्रेन) नामक सिक्के चलाए थे।
* शेरशाह ने रोहतासगढ़ नामक किला बनवाया था।
* कानूनगो ने शेरशाह सूरी के लिए कहा है कि "वह बाहर से मुस्लिम अन्दर से हिन्दु था।"

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

दिल्ली का अंतिम हिन्दु सम्राट : हेमू

* शेरशाह सूरी के उत्तराधिकारियों में मुहम्मद आदिल शाह एक अयोग्य एवं दुराचारी शासक था। इसने हेमू को अपने प्रशासन का संपूर्ण भार सौंप दिया।
* आदिल शाह ने चुनार को अपनी राजधानी बनाया तथा हेमू मुगलों को हिन्दुस्तान से बाहर निकालने के लिए नियुक्त किया। आदिल शाह के शासक बनते ही हेमू को प्रधान मंत्री बनाया गया।
* हेमू ने अपने स्वामी के लिए 24 लड़ाइयाँ लड़ी जिसमें उसे 22 लड़ाइयों में सफलता मिली।
* हेमू ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। वह दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला अंतिम हिन्दु सम्राट था। इसका शासन बहुत अल्पकालिक था।

Raj Holkar

KD Job Updates

Raj Holkar

हुमायुँ द्वारा पुनः राज्य की प्राप्ति

* 1545 ई. में हुमायुं ने काबुल तथा कांधार पर हमला कर कब्जा कर लिया
* फरवरी 1555 ई० में लाहौर पर अधिकार कर लिया था।

मच्छीवारा का युध्द [15 मई, 1555] :- यह सतलज नदी के किनारे पर हुमायुं एवं अफगान सरदार (नसीब खां एवं तातार खां) के बीच हुआ। इसमें हुमायुं की जीत हुई। अब मुगलों का अधिकार पंजाब पर हो गया।

सरहिन्द का युध्द [22 जून, 1555] :- यह युध्द अफगान एवं मुगल सेना के बीच हुआ। अफगानों का नेतृत्व सिकन्दर सूर एवं मुगल सेना का नेतृत्व बैरम खां ने किया। अफगान सेना पराजित हुई।

* सरहिन्द के युध्द में विजय के बाद भारत का सिंहासन पर एक बार पुनः मुगलों का शासन स्थापित हो गया।
* 23 जुलाई, 1955 में हुमायुं पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर गया एवं मृत्यु हो गयी।
* हुमायुं सप्ताह के सात दिन सात रंग के कपड़े पहनता था।
* हुमायुं एकमात्र मुगल शासक था जिसने अपना साम्राज्य भाइयों में बाँटा था।

Scanned by CamScanner

अकबर (90)

⇒ प्रारंभिक जीवन :-

* अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 ई. को सिंध के अमरकोट में राजपूत राणा वीरसाल के घर में हुआ था। अकबर का पूरा नाम जमालुद्दीन मुहम्मद अकबर था। पिता हुमायुं एवं माता हमीदा बानो बेगम थी।
* अकबर का राज्याभिषेक 14 फरवरी, 1556 ई. में पंजाब के कालानौर (गुरदासपुर) में बैरम खां द्वारा हुआ। बैरम खां को अकबर का वजीर नियुक्त किया गया। [अभिषेक : मिर्जा ~~मीर~~ अब्दुल कासिम ने बैरम खां की देखरेख में किया] 25-26 अक्टूबर में मृत्यु। सिकन्दरा (आगरा) में दफनाया गया। यहाँ अकबर का मकबरा है।

Raj Holkar

पानीपत का दूसरा युध्द :- [5 नवंबर, 1556]

पानीपत का दूसरा युध्द अकबर के वजीर व संरक्षक बैरम खां एवं मोहम्मद आदिल शाह सूर के वजीर हेमू के बीच हुआ। इसमें हेमू पराजित हुआ एवं मारा गया।

KD Job Updates
Raj Holkar

तिलवाड़ा का युध्द :-

अकबर का संरक्षक बैरम खां अकबर के वयस्क होने के बाद भी शासन की बागडोर स्वयं अपने पास रखना चाहता था इसी कारण बैरम खां ने अकबर के खिलाफ विद्रोह कर दिया। दोनों के बीच तिलवाड़ा नामक स्थान पर युध्द हुआ जिसमें बैरम खां पराजित हुआ। अकबर ने बैरम की विधवा से विवाह कर लिया एवं बैरम का पुत्र अब्दुर्रहीम खाने खाना था।

⇒ पर्दाशासन :

यह घटना अकबर से जुड़ी हुई है। 1560-62 ई. के बीच अकबर शासन में अकबर की परिवार की महिलाएं प्रभावशाली रही थी। इसी कारण इस काल को पर्दाशासन कहा गया है।

⇒ अकबर का राजत्व सिध्दांत :-

* अकबर के राजत्व सिध्दांत के अनुसार राजा के पद को दैवीय देन माना गया तथा राजा को दैवीय प्रकाश माना जिसके आगे सबका झुकना अनिवार्य था।
* अकबर का राजत्व उदार निरंकुशता पर आधारित था।
* राजनीतिक व्यवस्था पर कट्टरवाद का प्रभाव कम था।
* शासक जनहित संबंधी अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग था।
* प्रजा के लिए पितृवत प्रेम, सत्य - असत्य का विवेक आदि शामिल था।

Scanned by CamScanner

अकबर द्वारा साम्राज्य विस्तार

⇒ मालवा अभियान : [1561 ई०]

* साम्राज्य विस्तार के क्रम में अकबर का पहला आक्रमण मालवा के शासक बाज बहादुर के ऊपर था।
* इस अभियान में मुगल सेना का नेतृत्व अधम खाँ एवं पीर मुहम्मद खाँ ने किया।
* मालवा का शासक बाज बहादुर पराजित हुआ एवं भाग कर बुरहानपुर में शरण ली।
* बाज बहादुर की परम सुन्दरी पत्नि रानी रूपमती ने अपने सम्मान की रक्षा के उद्देश्य से मृत्यु को अपनाया।

⇒ गढ़ कटंगा अभियान : [1564 ई०]

Raj Holkar

* गढ़ कटंगा, गोंडवाना प्रदेश था जो जबलपुर के पास का क्षेत्र था। यहाँ के राजा की मृत्यु के बाद उसकी विधवा पत्नी रानी दुर्गावती राज कर रही थी। अकबर साम्राज्य में कड़ा (इलाहाबाद) के सूबेदार आसफ खाँ ने दमोह के पास रानी दुर्गावती को पराजित किया।
* पराजित होने के बाद रानी दुर्गावती ने बंदी बनाए जाने के भय से स्वयं को छुरा घोंप कर आत्महत्या कर ली। गढ़ कटंगा पर भी अकबर का राज्य स्थापित हो गया।

KD Job Updates

राजस्थान अभियान

Raj Holkar

⇒ अकबर की राजपूत नीति :-

अकबर की राजपूत नीति दमन, सहयोग एवं समझौते पर आधारित थी जो अलग अलग 3 चरणों में विभाजित थी। अकबर की राजपूत नीति का उद्देश्य साम्राज्य के स्थायित्व के लिए राजपूतों की सहानुभूति प्राप्त करना था।

प्रथम चरण, 1572 तक था इस समय दमन की नीति अपना कर राजपूतों पर आधिपत्य स्थापित करने पर बल था। द्वितीय चरण 1572-78 तक था इस चरण में राजपूतों से साम्राज्य विस्तार में सहयोग प्राप्त करने की नीति प्रभावी थी। इस चरण में राजपूत शक्तियों के बीच शक्ति संतुलन स्थापित करना भी उद्देश्य शामिल था। तृतीय चरण 1578 के बाद का काल था। इस नीति में हिन्दु एवं मुस्लिम धर्म के कारण उत्पन्न हुए विरोधों का निराकरण वैवाहिक संबंधों द्वारा किए जाने की झलक मिलती है।

Scanned by CamScanner

⇒ अकबर के राजस्थान पर किए गए अभियान :-

राजस्थान पर आक्रमण/अभियान के कारण :-

Raj Holkar

i) राजस्थान पर प्रभुत्व एक साध्य का साधन था। गुजरात और मालवा तक पहुंचने वाला मार्ग राजस्थान से होकर जाता था। इन दोनों प्रदेशों पर नियंत्रण के लिए राजस्थान पर कानू रखना आवश्यक था।

ii) राणा उदयसिंह ने मालवा के पदच्युत शासक बाज बहादुर और संभल से भागने वाले मिर्जा को शरण देकर अकबर को ठेस पहुंचायी।

iii) साम्राज्य के विस्तार एवं स्थायित्व के लिए राजपूतों का दमन अथवा मित्रता आवश्यक था। ये सलाह हुमायुं ने अकबर को दी थी।

iv) राजस्थान पर मुगलों के आक्रमण के पीछे न तो प्रादेशिक विस्तार की इच्छा थी और न ही धन प्राप्ति का लोभ था। इसका मुख्य उद्देश्य मुगल साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करना एवं अपने शत्रु को खतरा उत्पन्न करने से पहले ही उसकी शक्ति समाप्त करना था अथवा मित्रता के द्वारा उनकी शक्ति का उपयोग करना था।

घटनाक्रम :-

* सन् 1562 ई. में अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाला कछवाहा शासक भारमल (आमेर) राजस्थान का पहला राजपूत शासक था।
* सन् 1562 ई. में ही मेडता पर अधिकार किया गया। → का विनाश किया
* सन् 1568 ई. में लगभग 4 महीने के घेराबंदी मेवाड़ ~~पर अधिकार किया~~। → मेवाड ने आधिपत्य स्वीकार नहीं किया।
* सन् 1569 ई. में रणथम्भौर पर अधिकार किया।
* सन् 1570 ई. में मारवाड, बीकानेर एवं जैसलमेर के राजाओं ने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया।
* क्षेत्रीय स्वतंत्र राज्यों में केवल मेवाड ही स्वतंत्र था जिसने अकबर का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

Raj Holkar

⇒ हल्दीघाटी का युध्द :-

पृष्ठभूमि: 1570 ई॰ तक मेवाड के अलावा राजस्थान के सभी राजपूत राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी। 1568 ई॰ मे मेवाड को अधीन करने के लिए अकबर ने चित्तौड पर आक्रमण किया 4 महीने की घेराबन्दी के बाद भी जब चित्तौड का राजा उदयसिंह बाहर नहीं आया तो अकबर ने कत्लेआम का आदेश दिया इससे 30,000 से अधिक लोग मारे गये। किले में रसद की कमी हो गयी। राजा उदयसिंह किले की सुरक्षा जयमल एवं फत्ता के हाथों सौंपकर गुप्त रास्ते से परिवार के साथ पास वाली पहाडी में चला गया परन्तु अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

1572 ई॰ में महाराणा प्रताप का राज्यारोहण हुआ। महाराणा ने मेवाड के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया। अकबर ने कई दूतमण्डली महाराणा प्रताप के दरबार में भेजी। अकबर का स्पष्ट आदेश था कि महाराणा प्रताप अकबर की अधीनता स्वीकार करे परन्तु महाराणा ने दूतों के साथ स्पष्ट रूप से अवमानना संदेश भेजा अब अकबर के पास शक्ति प्रयोग के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं बचा था।

⇒ अकबर द्वारा भेजी गयी दूत मण्डली का क्रम : Raj Holkar

जलाल खां कूरची → राजा मानसिंह → भगवंत दास → टोडरमल

* महाराणा प्रताप ने भगवंत दास के साथ अपने पुत्र अमरसिंह को अकबर के दरबार में भेजा था परन्तु अकबर ने महाराणा को सशरीर दरबार में उपस्थित होकर अधीनता स्वीकार करने की शर्त रखी इस कारण यह वार्ता विफल रही।

हल्दीघाटी: सन 1576 ई॰ में मुगल सेना राजा मानसिंह के नेतृत्व में एवं महाराणा प्रताप तथा महाराणा के साथ हकीम खां सूर की अफगान सेना हल्दीघाटी नामक स्थल पर आमने - सामने हुई। महाराणा एवं अफगानी सेना मुगल सेना का मुकाबला नहीं कर पायी। यह युध्द अनिर्णीत रहा। महाराणा ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। राणा बचकर पहाडियों में चला गया।

परिणाम: - युध्द अनिर्णीत रहा। राणा जंगलों में चला गया परन्तु अधीनता नहीं स्वीकार की। अकबर अजमेर लौट आया। मुगलों ने गोगुन्दा, उदयपुर, कुंभलगढ पर अधिकार कर लिया। राणा ने कुछ समय बाद चावण्ड को नई राजधानी बनाया एवं गोरिल्ला पध्दति से मुगलों के खिलाफ अपनी लडाई जारी रखी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ अकबर का गुजरात अभियान :-

सन् 1572 के अंत में अकबर गुजरात पहुंचा। सबसे पहले अहमदाबाद पर कब्जा किया फिर दक्षिण गुजरात एवं सूरत पर कब्जा किया। अकबर ने गुजरात में खान ए आजम अजीज कोका को सूबेदार नियुक्त किया।

⇒ अकबर का बंगाल अभियान :-

* इस्लाम शाह की मृत्यु के बाद बंगाल स्वतंत्र हो चुका था। सत्ता की बागडोर सुलेमान कुर्रानी के हाथ में थी।
* अकबर के पूर्वी अभियान का लक्ष्य "बिहार को फतह करना था।" परन्तु कार्यवाही का तात्कालिक कारण दाउद खाँ द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा थी।
* दाउद खाँ को पराजित कर अकबर ने मुनिम खाँ को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया एवं मुनिम खाँ की मृत्यु के बाद हुसैन-कुली खान-ए-जहाँ को बंगाल का नया सूबेदार नियुक्त किया।

Raj Holkar

⇒ अन्य अभियान :-

* 1585 ई० में ~~सिंधु~~ काबुल के शासक मिर्जा हकीम की मृत्यु के बाद अकबर ने मानसिंह को काबुल पर अधिकार करने के लिए भेजा तथा मानसिंह को काबुल का सूबेदार बना दिया।
* सन् 1586 ई० में अकबर ने कश्मीर को जीतने का निश्चय किया वहाँ के शासक याकूब खाँ ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी परन्तु सशरीर अकबर के सामने उपस्थित होकर समर्पण करने से मना कर दिया था। वास्तविक रूप में कश्मीर पर अधिकार ~~1586~~ 1587 ई० में कासिम खाँ द्वारा कश्मीर शासक याकूब खाँ को पराजित करने के बाद हुआ।
* कश्मीर पर अधिकार के बाद सिंध, लद्दाख एवं ब्लूचिस्तान पर अधिकार कर लिया।
* अकबर की अंतिम कार्यवाही कन्धार को मुगल साम्राज्य में शामिल करना था।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

अकबर के नवरत्न

1. **बीरबल :-** इनका जन्म काल्पी में हुआ था। बचपन का नाम महेशदास था। आमेर के राजा भारमल के पुत्र भगवान दास ने इन्हें अकबर तक पहुँचाया था। अकबर ने इन्हें कविराज एवं राजा की उपाधि तथा 2000 का मनसब प्रदान किया। ये अकबर के न्याय विभाग के सर्वोच्च अधिकारी थे। दीन ए इलाही धर्म स्वीकार करने वाले एकमात्र हिन्दु राजा बीरबल थे। इनकी मृत्यु युसुफजई कबीले के साथ होने वाले संघर्ष में हुई।

2. **अबुल फजल :-** इन्होने आइन ए अकबरी, अकबरनामा की रचना की। अबुल फजल दीन ए इलाही धर्म के मुख्य पुरोहित थे। इनकी हत्या शहजादा सलीम ने करवायी थी।

3. **तानसेन :-** ये ग्वालियर के थे। अकबर ने इन्हें कण्ठाभरण वाणी विलास की उपाधि दी। इनके समय ध्रुपद गायन शैली का विकास हुआ। इन्होने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था।

4. **अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना :-** ये बैरम खाँ का पुत्र था। इनका पालन पोषण स्वयं अकबर ने किया था। इन्होने बाबरनामा का फारसी में अनुवाद किया था।

Raj Holkar

5. **मानसिंह :-** ये आमेर के राजा भारमल के पौत्र तथा भगवान दास के पुत्र थे। अकबर के मेवाड (हल्दीघाटी), काबुल, बंगाल एवं बिहार के अभियानों में मुख्य भूमिका निभायी।

6. **टोडरमल :-** इसका जन्म अवध के सीतापुर में हुआ। अकबर से पहले ये शेरशाह सूरी के यहाँ नौकरी करते थे। अकबर के शासन में दहशाला (भूमि सुधार) की व्यवस्था दी। इन्होने दीन-ए-इलाही धर्म को स्वीकार नहीं किया था।

7. **फैजी :-** अकबर ने इन्हें राजकवि के पद पर आसीन किया था। इन्होने गणित की प्रसिध्द पुस्तक लीलावती का फारसी में अनुवाद किया।

8. **हकीम हुमाम :-** ये अकबर के रसोईघर का कार्य संभालते थे।

9. **मुल्ला-दो-प्याजा :-** ये अरब के रहने वाले थे। ये अपनी बुध्दिमानी व वाकपटुता के कारण नवरत्नों में शामिल थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाएं :-

1562 ई. - दास प्रथा का अंत
1563 ई. - तीर्थ यात्रा कर समाप्त
1564 ई. - जजिया कर समाप्त
1567 ई. - मनसबदारी व्यवस्था प्रारंभ
1571 ई. - फतेहपुर सीकरी की स्थापना
1575 ई. - इबादत खाने का निर्माण
1579 ई. - दहसाला प्रणाली की घोषणा
1580 ई. - साम्राज्य को 12 सूबों में विभाजित किया [दक्षिण विजय के बाद सूबों की संख्या 15 हो गयी थी]
1582 ई. - दहसाला प्रणाली लागू एवं दीन ए इलाही की घोषणा
1583 ई. - इलाही संवत् की स्थापना।

Raj Holkar

⇒ अकबर की धार्मिक नीति :-

* अकबर की धार्मिक नीति का मूल उद्देश्य :- सार्वभौमिक सहिष्णुता था।
* अकबर ने इस्लामी सिद्धांत के स्थान पर सुलह कुल की नीति अपनायी।
* अकबर के धार्मिक विचारों पर अब्दुल लतीफ की विचारधारा का प्रभाव था।
* अकबर ने इस्लाम के मूल तत्वों को समझने के लिए इबादत खाना का निर्माण किया
* उलेमाओं से धार्मिक विषयों पर मतभेद समाप्त करने के लिए महजर घोषणा पत्र जारी करवाया।
* सभी धर्मों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए अकबर ने दीन-ए-इलाही धर्म की स्थापना की।

सुलह-ए-कुल नीति :- सुलह-ए-कुल का अर्थ सभी धर्मों को महत्व देना, आदर करना एवं धार्मिक सहिष्णुता से है। सूफी संतों ने सुलह-ए-कुल नीति पर जोर दिया था। यह धार्मिक कट्टरता को कम करती है।

मजहर घोषणा पत्र :- मजहर घोषणा पत्र वह दस्तावेज था जो समस्त धार्मिक मामलों में अकबर को धार्मिक मामलों का अंतिम व्याख्याकार घोषित करता था। इस पत्र से अकबर ने 'सुल्तान ए आदिल' या 'इमाम ए आदिल' की उपाधि धारण की। इस दस्तावेज को लाने का उद्देश्य उलेमाओं के विरोध को कम करना एवं राजत्व की गरिमा को बढ़ाना था। इसका प्रारूप शेख मुबारक ने तैयार किया था।

KD Job Updates
Raj Holkar

Scanned by CamScanner

⇒ तौहीद-ए-इलाही / दीन-ए-इलाही :-

Raj Holkar

पृष्ठभूमि : सरकार की बागडोर संभालते ही अकबर धार्मिक मामलों में उदार रहा 1563 ई॰ में हिन्दुओं से वसूला जाने वाला तीर्थ कर समाप्त कर दिया। इसी संदर्भ में जजिया को समाप्त कर दिया। अकबर ने राज-काज में उदार धार्मिक नीति का अनुसरण किया परन्तु व्यक्तिगत आचरण में वह एक रूढ़िवादी मुसलमान था।

धार्मिक मामलों में अकबर बचपन से जिज्ञासु था। अपनी इसी जिज्ञासा के कारण अकबर ने इबादतखाना खोला एवं सभी धर्मों के मूल सिद्धांतों को समझने की कोशिश की। आरंभ में इबादत खाने में केवल मुसलमान भाग ले सकते थे एवं चर्चा का दिन बृहस्पतिवार निश्चित था। 1578 ई॰ के बाद अकबर ने इबादत खाने के दरवाजे हिन्दु, जैन, बौद्ध, यहूदी, पारसी एवं ईसाइयों के लिए भी खोल दिए। परन्तु इबादत खाने का जो उद्देश्य था - "सत्य का पता लगाना" के स्थान पर अपने-अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने लगे अतः अकबर ने 1582 में इबादत खाने को बंद कर दिया।

इबादत खाने की बहसों को निरर्थक नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसके दो महत्वपूर्ण परिणाम निकले - ① बहसों से अकबर को विश्वास हो गया कि सभी धर्मों में सत्य के तत्व हैं और ये सभी मनुष्य को एक ही परम यथार्थ तक ले जाते हैं। इन विचारों से ही अकबर के मन में "सुलह-ए-कुल" की अवधारणा का अंकुर फूटा एवं दीन-ए-इलाही धर्म का आधार बना। ② इन बहसों से दरबारी आलिमों के विचारों की संकीर्णता, धर्मांधता अकबर के सामने आ गयी और ऐसे लोगों के साथ अकबर का संबंध विच्छेद हुआ तथा महजर की नीति का आरंभ भी इन्हीं बहसों का परिणाम था।

इस प्रकार इबादतखाने की बहसों ने एक नए उदार और सहिष्णु राज्य के उदय में तथा दीन ए इलाही धर्म की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। [Mains Exam]

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

⇒ दीन ए इलाही :-

* कई वर्षों इबादत खाने की चर्चाओं को सुनने एवं विभिन्न धर्मों के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को समझने के प्रतिफल के रूप में अकबर द्वारा दीन ए इलाही धर्म की स्थापना की गयी।
* दीन ए इलाही अकबर की धार्मिक सहिष्णुता और उदार लोकेश्वरवाद का प्रतीक था। जिसमें विभिन्न धर्मों के अच्छे सिद्धांतों को समावेशित किया गया।
* अकबर का उद्देश्य एक ऐसे राष्ट्रीय धर्म का प्रवर्तन करना था जिसे हिन्दु और मुसलमान दोनों स्वीकार कर सकें। यह एकेश्वरवाद पर आधारित सहिष्णुता का सन्देश वाहक था।
* दीन - ए - इलाही धर्म में जबरन धर्मांतरण का कोई स्थान नहीं था।

⇒ दीन - ए - इलाही के सिद्धांत :-

i) सम्राट को अपना आध्यात्मिक गुरु मानना
ii) यह धर्म एकेश्वरवाद में विश्वास करता था।
iii) दानशीलता
iv) सांसारिक इच्छा का परित्याग
v) शाकाहारी भोजन। शिकारियों एवं मद्दुआरों के साथ भोजन न करना।
vi) विशुद्ध नैतिक जीवन व्यतीत करना।
vii) अल्पायु, बांझ व गर्भवती स्त्रियों से शारीरिक संबंध निषेध।

Raj Holkar

चहार - गाना - ए - इख्लाश :- ये दीन - ए - इलाही में दीक्षा ग्रहण करने के चार चरण थे - जमीन, सम्पत्ति, सम्मान एवं धर्म।

विंसेंट स्मिथ के अनुसार :- "दीन ए इलाही अकबर की भूल थी' का स्मारक था बुद्धिमानी का नहीं।"

⇒ इबादत खाने में आमंत्रित धर्माचार्य :-

Raj Holkar

हिन्दु : देवी एवं पुरुषोत्तम
जैन धर्म : हरिविजय सूरी, जिन चन्द्र सूरी, विजय सेन सूरी, एवं शांति चन्द्र।
पारसी धर्म : दस्तूर मेहर जी राणा
ईसाई धर्म : एकाबीना और मोंसेरात

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

सलीम (जहांगीर)

अक्टूबर, 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद उसका बेटा सलीम गद्दी पर बैठा।

⇒ प्रारंभिक जीवन :-

* जहांगीर का जन्म 30 अगस्त, 1569 ई. में अकबर की पत्नी मरियम उज्जमानी (हरखा बाई उर्फ जोधाबाई) से हुआ। फतेहपुर स्थित शेख सलीम चिश्ती की कुटिया में हुआ।
* जहांगीर का राज्याभिषेक 3 नवंबर, 1605 ई. में आगरा में हुआ।
* जहांगीर का पहला विवाह आमेर के राजा भारमल की पुत्री एवं मानसिंह की बहिन मानबाई से हुआ। मानबाई से खुसरो का जन्म हुआ।
* जहांगीर का दूसरा विवाह मारवाड के शासक उदयसिंह की पुत्री जगत गोसाईं से हुआ। इससे खुर्रम (शाहजहां) का जन्म हुआ।
* जहांगीर नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह गाजी की उपाधि के साथ सिंहासन पर बैठा।

⇒ भेरावाल का युध्द (1606): जहांगीर के गद्दी पर बैठते ही जहांगीर के पुत्र खुसरो ने विद्रोह कर दिया था। जहांगीर ने खुसरो को भेरावल (जालंधर के निकट) में पराजित किया एवं अंधा करवा दिया।

Raj Holkar

* खुसरो की सहायता करने के कारण सिक्खों के 5वें गुरु अर्जुनदेव को फांसी पर लटका दिया।
* खुसरो की सहायता करने में शामिल अन्य व्यक्तियों को भी सजा दी गयी उनमें शामिल प्रमुख व्यक्ति - अब्दुर्रहीम खानेखाना को कठोर यातनाएँ, नूरजहाँ के पिता इतिमादुद्दौला को कैद, इतिमादुद्दौला के बेटे मुहम्मद शरीफ को मौत, थानेश्वर के शेख निजाम को निर्वासित कर मक्का भेजा, सिख गुरु अर्जुन देव को फांसी।

⇒ मेहरुन्निसा (नूरजहाँ) :- मेहरुन्निसा का जन्म 1577 ई. कांधार में हुआ। मेहरु के पिता का नाम गियास बेग (इतिमादुद्दौला) था। मेहरु का विवाह अलीकुली इस्ताजलू (शेर अफगान) से हुआ। शेर अफगान जहांगीर का चाकर था। कुतुबुद्दीन खां एवं शेर अफगान की आपस में लडायी हुई जिसमें दोनों मारे गये एवं मेहरु विधवा हो गयी। 1611 में मीना बाजार में जहांगीर की नजर मेहरु पर पडी एवं मेहरु के साथ प्रेम में पड गया तथा शादी कर ली। जहांगीर ने मेहरु को नूर महल, नूरजहाँ एवं बादशाह बेगम नाम दिए।

⇒ नूरजहानी चौकडी: इसमें नूरजहाँ, इतिमाद्दौला (पिता), आसफ खां (भाई) एवं खुर्रम शामिल थे। इन्होने जहांगीर शासन में मुख्य भूमिका निभायी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* जहांगीर ने निसार नामक सिक्के का प्रचलन किया।

⇒ **न्याय की जंजीर:-** जहांगीर ने राज्य की जनता को न्याय दिलाने के लिए न्याय का प्रतीक सोने की जंजीर को अपने महल के बाहर लगाया था।

* जहांगीर ने वीरसिंह बुन्देला द्वारा अबुल फजल की हत्या करवायी थी।
* जहांगीर, मानसिंह को बूदा भेडिया कहता था।

Raj Holkar

⇒ **खुर्रम (शाहजहाँ) का विद्रोह:**

शाहजहाँ को सन्देह हुआ कि नूरजहाँ उसे सत्ता से दूर कर देना चाहती है। शाहजहाँ ने 1623-26 ई. में विद्रोह कर दिया। शाहजहाँ के विद्रोह को महावत खां एवं परवेज ने दबाया था। विद्रोह के परिणाम स्वरूप फारस के शाह ने कांधार पर कब्जा कर लिया।

⇒ **महावत खां का विद्रोह:**

Raj Holkar

महावत खां एवं परवेज की निकटता बढ़ रही थी नूरजहाँ ने इसे तोडने का प्रयास किया। परिणाम स्वरूप महावत खां ने झेलम तट पर शाही शिविर पर कब्जा कर लिया परन्तु नूरजहाँ ने कूटनीति से सेना को अपने कब्जे में ले लिया और महावत खां दक्षिण भाग गया।

KD Job Updates

जहांगीर का साम्राज्य विस्तार

⇒ **मेवाड़ अभियान:-** राजस्थान में मेवाड एकमात्र राज्य था जो स्वतंत्र बना हुआ था। अकबर भी मेवाड को अधीन नहीं कर पाया था। मेवाड़ पर विजय प्राप्त करने के लिए जहांगीर ने कई सैनिक अभियान भेजे।

मेवाड पर अंतिम मुगल अभियान शहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) के नेतृत्व में हुआ था। इस अभियान में मेवाड के शासक अमरसिंह एवं खुर्रम के मध्य संधि हुई। अमरसिंह ने मुगल अधीनता स्वीकार कर ली।

⇒ **कांगडा:-** 1620 ई. में राजा विक्रमाजीत बघेला ने किले की घेराबन्दी की तथा अपने अधिकार में ले लिया। कांगडा के साथ चंबा ने भी मुगल अधीनता स्वीकार कर ली।

⇒ **अहमदनगर (दक्कन):** जहांगीर ने 1617 ई. में अहमदनगर अभियान पर शहजादे खुर्रम को भेजा। अहमदनगर एवं मुगलों के बीच संधि हुई। इसी के उपलक्ष्य में जहांगीर ने खुर्रम को शाहजहां की उपाधि दी थी।

Scanned by CamScanner

⇒ **जहाँगीर की धार्मिक नीति :-**

* जहांगीर न तो स्वभाव से और न ही लालन-पालन की दृष्टि से रूढ़िवादी था।
* जहांगीर जबरन धर्मांतरण का विरोधी था (आईन-ए-जहाँगीरी)
* जहांगीर ने न केवल अकबर की सुलह-ए-कुल की नीति का अनुसरण किया बल्कि मुरीद बनाने और इन्हें बादशाह की तस्वीरें देने का सिलसिला भी जारी रखा।
* जहांगीर ने अपने दरबार में दीवाली, होली, दशहरा, राखी, शिवरात्री आदि हिन्दु त्योंहार मनाने का रिवाज भी जारी रखा।
* जहांगीर ने पंजाब में गोहत्या बंद करवा दी थी।
* जहांगीर के दरबार में नौरोज त्योंहार धूम धाम से मनाया जाता था।
* जहांगीर ने मंदिरों और ब्राहमणों को दान और उपहार देने का अकबर का रिवाज जारी रखा।

कभी-कभी जहाँगीर संकीर्ण मानसिकता के कार्य भी करता था। इसका कारण शायद उलेमाओं को खुश करना था जैसे -
- कांगड़ा अभियान को जिहाद की संज्ञा दी। सांड की बली दी।
- गुजरात के जैन मंदिरों को बंद करने का आदेश दिया।

* जहांगीर की धार्मिक रुचि का मुख्य विजय एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा का खण्डन एवं अवतारवाद को अस्वीकार करना था।
* जहांगीर का शेख अहमद सरहिन्दी से विरोध था।
* जहांगीर ने श्रीकान्त नामक एक हिन्दु को हिन्दुओं का जज नियुक्त किया
* जहांगीर ने सूरदास को आश्रय दिया था।

⇒ **अन्य तथ्य :-**

* जहांगीर काल में आए पुर्तगाली दूतों का क्रम :
विलियम हॉकिंस (1608 ई०) → पॉल केनिंग (1612 ई०) → विलियम एडवर्ड (1615 ई०) → टॉमस रॉ (1615 ई०)
* जहांगीर का काल मुगल चित्रकला का स्वर्णकाल माना जाता है।
* इत्र बनाने की विधि का अविष्कार अस्मत बेगम (नूर जहाँ की मा) ने किया

⇒ **आइन-ए-जहांगीरी :-** यह जहांगीर द्वारा जारी किए गए 12 अध्यादेशों का समूह था।

KD Job Updates
Raj Holkar
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

शाहजहाँ (102)

⇒ प्रारंभिक जीवन :-

* शाहजहां का जन्म 5 जनवरी, 1592 ई. को लाहौर में हुआ। बचपन का नाम खुर्रम एवं पूरा नाम शिहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहाँ था। माता का नाम जगत गोसाई (जोधाबाई)
* शाहजहाँ का राज्याभिषेक 4 फरवरी, 1628 ई. में हुआ।
* शाहजहाँ ने दिल्ली के निकट शाहजनाबाद नगर की स्थापना की।
* शाहजहाँ ने राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित की।

राज्यारोहण : जहाँगीर की मृत्यु के समय शाहजहाँ दक्षिण में था। शाहजहाँ के श्वसुर आसफ खाँ एवं दीवान अबुल हसन ने खुसरो के लड़के दवार बक्श को सिंहासन पर बिठा दिया था। शाहजहाँ ने दवार बक्श की हत्या करके सिंहासन प्राप्त किया था। दवार बक्श को बलि का बकरा कहा जाता है।

* शाहजहाँ का विवाह आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन्द बानू बेगम से हुआ जो बाद में मुमताज महल के नाम से प्रसिद्ध हुई।

Raj Holkar

⇒ साम्राज्य विस्तार :-

शाहजहाँ ने सबसे पहले अहमदनगर को जीतकर मुगल साम्राज्य में मिलाया बाद में गोलकुण्डा के शासक कुतुबशाह ने मुगलों से संधि कर ली। गोलकुण्डा के बाद बीजापुर को संधि करने के लिए विवश कर दिया।

* शाहजहाँ के काल में कान्धार अंतिम रूप से मुगलों से छिन गया जिसे बाद में प्राप्त नहीं किया जा सका।

⇒ शाहजहाँ काल में आए विदेशी नागरिक :-

i) पीटर मुण्डी - इतालवी यात्री
ii) फ्रांसिस बर्नियर - फ्रांसीसी (चिकित्सक)
iii) निकोलाओ मनूची - इतालवी यात्री यह दारा शिकोह की सेना में तोपची था बाद में यह चिकित्सक बन गया था।
iv) जीन बैप्टिस्ट ट्रेवर्नियर - फ्रांसीसी यात्री इसने भारत की 6 बार यात्रा की पेशे से यह जौहरी था। इसने अपने यात्रा वृतान्त का विवरण ट्रेवल्स इन इंडिया नामक पुस्तक में दिया।
v) मेनडेस्लो :- शाहजहाँ काल में अल्पसमय के लिए भारत आया था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

Raj Holkar

⇒ शाहजहाँ की धार्मिक नीति :-

* शाहजहाँ ने सिजदा एवं पायबोस प्रथा को समाप्त कर दिया।
* शाहजहाँ ने चहार-तस्लीम प्रथा की शुरुआत की।
* शाहजहाँ ने इलाही संवत् को समाप्त कर हिजरी संवत् चलाया।
* हिन्दुओं पर तीर्थयात्रा कर लगाया इसे बाद में काशी के कवीन्द्राचार्य की प्रार्थना पर तीर्थयात्रा कर को समाप्त कर दिया।
* खंभात में गोवध निषेध कर दिया। अहमदाबाद के चिन्तामणि मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था।
* झरोखा दर्शन, तुलादान एवं हिन्दु राजाओं के माथे पर तिलक लगाने की प्रथा को बन्द नहीं किया।
* शाहजहाँ ने नए मंदिर बनवाने पर रोक लगा दी एवं निर्माणाधीन मंदिरों को तोड दिया गया।
* आगरा में गिरिजाघरों को तुडवाया गया।
* हिन्दु लडका एवं मुस्लिम लडकी की शादी पर प्रतिबंध लगा दिया।

Raj Holkar

⇒ उत्तराधिकार के लिए युध्द :-

* शाहजहां के 4 पुत्र थे- i) दारा शिकोह ii) शाहशुजा iii) औरंगजेब iv) मुराद बख्श
* शाहजहां ने अपने पुत्र दाराशिकोह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जिससे अन्य पुत्रों ने विद्रोह कर दिया। शाहशुजा ने बंगाल में स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया एवं मुराद ने गुजरात में स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। औरंगजेब ने मुराद से समझौता कर लिया अंत में औरंगजेब की विजय हुई।

i) बहादुर पुर का युध्द (1658 ई.): शाहशुजा एवं शाही सेना के मध्य। शाही सेना विजयी

ii) धरमत का युध्द (15 अप्रैल 1658 ई.): शाही सेना (जसवन्त सिंह व कासिम खां के नेतृत्व में) एवं औरंगजेब व मुराद की संयुक्त सेना के मध्य। शाही सेना पराजित।

iii) सामूगढ का युध्द (29 मई, 1658 ई.): दाराशिकोह (शाही सेना) एवं औरंगजेब व मुराद बख्श की संयुक्त सेना के मध्य। दाराशिकोह पराजित। औरंगजेब ने मुराद को बंदी बना कर हत्या कर दी।

iv) खजवा का युध्द (5 जनवरी 1659 ई.) :- औरंगजेब एवं शाहशुजा के मध्य शुजा हारकर अराकान चला गया।

v) देवराए का युध्द (अप्रैल, 1659 ई.): दाराशिकोह एवं औरंगजेब के मध्य दारा को बंदी बना कर मार डाला एवं दिल्ली में घुमाया बाद में हुमायुं के मकबरे में दफन कर दिया। उत्तराधिकार का यह अंतिम युध्द था।

KD Top Updates

Scanned by CamScanner

औरंगजेब

⇒ जन्म एवं राज्याभिषेक :

* औरंगजेब का जन्म 3 नवंबर, 1618 ई॰ को दोहद (उज्जैन के निकट) में हुआ।
* औरंगजेब की माँ मुमताज महल थी। औरंगजेब का विवाह दिलरास बानो बेगम (रबिया बीबी) से हुआ।

राज्याभिषेक: यह पहला मुगल शासक था जिसका 2 बार राज्याभिषेक हुआ

पहला - 31 जुलाई, 1658	दूसरा - 5 जून, 1659
सामूगढ़ की विजय के उपरान्त [अबुल मुजफ्फर आलमगीर की उपाधि धारण की।]	देवराय की विजय के उपरान्त औपचारिक रूप से।

Raj Holkar

⇒ कार्य :-

* औरंगजेब ने राहदारी, पानदारी एवं आबवाबों करों को समाप्त कर दिया
* औरंगजेब कुरान की नकलें तैयार करता था तथा टोपियाँ सीता था।

⇒ औरंगजेब की धार्मिक नीति :-

* औरंगजेब ने सिजदे पर रोक लगा दी तथा सिक्कों पर कलमा गोदने की मनाही कर दी।
* नौरोज का त्यौहार एवं दरबार में संगीत बंद करवा दिया परन्तु वाद्य संगीत एवं नौबत (शाही बैंड) को जारी रखा गया।
* औरंगजेब वीणा का अच्छा वादक था।
* औरंगजेब ने झरोखा दर्शन, तुलादान, ज्योतिषियों से जंत्री बनवाना समाप्त कर दिया
* होली एवं मुहर्रम सार्वजनिक रूप से मनाने पर रोक लगा दी।
* दरबारियों के रेशमी वस्त्र पहनने पर रोक लगा दी।

नोट :- उपरोक्त कदमों से औरंगजेब का कट्टरतावादी मिजाज होने का आभास होता है परन्तु इनमें से कुछ कदम मितव्ययता लाने के लिए थे क्योंकि राहदारी, पानदारी एवं आबवाबों आदि कर समाप्त करने के कारण सरकारी खजाने पर विपरीत प्रभाव पड़ रहे थे तथा कुछ कदम धार्मिक उत्थान व नैतिकता में वृद्धि तथा अंधविश्वासों को कम करने के लिए उठाए गए थे।

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

* औरंगजेब ने गुजरात में कई मंदिरों को नष्ट करवाया जिसमें सोमनाथ मंदिर भी शामिल था
* औरंगजेब ने बनारस के प्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर और जहांगीर काल में वीर सिंह बुन्देला द्वारा बनवाया मथुरा के केशव राय मंदिर जैसे कई मंदिरों को नष्ट किया तथा मस्जिदों का निर्माण करवाया।
* औरंगजेब ने हिन्दुओं पर तीर्थयात्रा कर लगाया।
* औरंगजेब ने जजिया कर लगाया तथा इससे स्त्रियों, मानसिक रुग्ण व्यक्तियों, सरकारी नौकरों तथा मुफलिस (संपत्ति विहीन) लोगों को छूट प्रदान की जजिया आय कर नहीं बल्कि संपत्ति कर था। जजिया कर वसूल करने के लिए अमीन नियुक्त किए गए। अंत में 1712 ई. में असद खाँ एवं जुल्फिकार अली खाँ के कहने पर समाप्त कर दिया।
* औरंगजेब को जिन्दापीर कहा जाता था।

Raj Holkar

मुहतसिब: औरंगजेब शासनकाल में सभी सूबों में मुहतसिब नामक अधिकारियों को नियुक्त किया गया। इनका कार्य यह सुनिश्चित करना था कि लोग शरियत के अनुसार जीवन जिए। सार्वजनिक स्थानों पर शराब और भांग जैसे मादक द्रव्यों का सेवन न करें। वेश्यालयों, जुआघरों में नियमों का पालन करवाना तथा माप-तौल के पैमानों की जांच करना भी इनके कार्यों में शामिल था।

⇒ औरंगजेब के समय हुए विद्रोह :-

अफगान विद्रोह: 1667 ई. में युसुफजई कबीले के सरदार 'भागू' ने स्वयं को राजा घोषित कर दिया। इस विद्रोह का उद्देश्य - पृथक अफगान राज्य की स्थापना करना था। अमीर खां के नेतृत्व में यह विद्रोह दबा दिया गया परन्तु बाद में अकमल खां के नेतृत्व में पुनः विद्रोह हुआ जिसे स्वयं औरंगजेब ने जाकर शांत किया।

जाट विद्रोह: यह आगरा एवं दिल्ली के आसपास के किसानों, काश्तकारों व जमींदारों ने शुरू किया। नेतृत्व जमींदारों के हाथ में था। सर्वप्रथम गोकुला नाम के हिन्दु जमींदार के नेतृत्व में हुआ। बाद में राजाराम ने पुनः विद्रोह किया। छापामार हमला एवं लूटपाट की। राजाराम सिकन्दरा में अकबर की कब्र से उसकी अस्थियां निकाल ले गया एवं जला दी। राजाराम के बाद चूरामन जाट ने नेतृत्व किया। चूरामन जाट ने ही भरतपुर नामक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

सतनामी/मुण्डिया विद्रोह:

* यह नारनौल नामक स्थान पर सतनामी संप्रदाय वालों ने शुरू किया। सतनामी लोग वैरागी थे जो शुद्ध अद्वैतवाद में विश्वास करते थे। विद्रोह की शुरुआत एक मुगल सैनिक व एक सतनामी के परस्पर झगड़े से हुई।

सिक्ख विद्रोह:-

* यह औरंगजेब के काल का एकमात्र विद्रोह था जो धार्मिक कारणों से हुआ।
* औरंगजेब के विरुद्ध प्रत्यक्ष सिक्ख विद्रोह औरंगजेब द्वारा गुरु तेगबहादुर को मृत्यु दण्ड दिए जाने के बाद हुआ।
* गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की शुरुआत की।

Raj Holkar

अन्य विद्रोह :-

बुन्देला विद्रोह : यह ओरछा के शासक चम्पतराय के नेतृत्व में हुआ था। बाद में इत्रखाल जुड़ा।

अकबर का विद्रोह : मेवाड व मारवाड से सहायता का आश्वासन पाकर अकबर ने विद्रोह किया। पराजित होकर फारस भाग गया।

पुर्तगालियों का विद्रोह : 1686 ई. में औरंगजेब ने अंग्रेजों को हुगली में परास्त कर बाहर खदेड़ा था।

KD Job Updates

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

मुगलकालीन प्रशासन

* मुगल प्रशासन सैन्य शक्ति पर आधारित एक केन्द्रीकृत व्यवस्था थी जो 'नियंत्रण एवं संतुलन' पर आधारित थी।

Raj Holkar

⇒ केन्द्रीय प्रशासन :-

* अकबर के शासन काल में ५ मंत्रिपद थे - वजीर (वकील), दीवान, मीर बख्शी एवं सद्र।

i) **वजीर (वकील)** : यह साम्राज्य का प्रधानमंत्री होता था। इसे सैनिक एवं असैनिक दोनों मामलों में असीमित अधिकार प्राप्त थे।

ii) **दीवान** : अकबर ने वजीर के एकाधिकार को समाप्त करने के लिए इस पद की स्थापना की। यह वित्त एवं राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी होता था। सम्राट की अनुपस्थिति में वह शासन के साधारण कार्यों को देखता था।

* मुगल काल में असद खां ने सर्वाधिक ३१ वर्षों तक दीवान के पद पर कार्य किया
* दीवान की सहायता के लिए अधिकारी -

a. दीवान ए खालिसा - शाही भूमि की देख भाल करने वाला अधिकारी।
b. दीवान ए तन - वेतन एवं जागीरों की देख भाल करने वाला।
c. मुस्तौफी - आय व्यय का निरीक्षक
d. मुसरिफ -

Raj Holkar

iii) **मीर बख्शी** :- यह सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी होता था। इसका कार्य सैनिकों की भर्ती, सैनिकों का हुलिया रखना, रसद प्रबंध, सेना में अनुशासन, सैनिकों के लिए हथियार, हाथी, घोड़े आदि का प्रबंधन एवं शाही महल की सुरक्षा। मनसबदारी व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाना।

मीर-ए-सामां : अकबर ने इस पद की स्थापना की यह घरेलू मामलों का प्रधान होता था। यह सम्राट के परिवार, महल तथा उसकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। इसके पास साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले कारखानों के प्रबंध का स्वतंत्र भार होता था।

iv) **सद्र-ए-कुल / सद्र-उस-सुदूर** :- यह धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार था। इसे शेख उल इस्लाम भी कहा जाता था।

* मुगल काल में सर्वप्रथम सद्र शेख गदाई था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ प्रांतीय प्रशासन :-

मुगल साम्राज्य सूबों में बंटा हुआ था।

सूबे/प्रांत — प्रमुख/सर्वोच्च अधिकारी - सिपहसालार या सूबेदार

↓ सूबा जिलों में विभाजित था।

सरकार/जिले — सर्वोच्च अधिकारी: फौजदार

↓ सरकार परगनों में विभाजित था।

परगना/महाल — सर्वोच्च अधिकारी: शिकदार

↓ परगना, गाँवों से मिलकर बनता था।

गाँव/ग्राम — सर्वोच्च अधिकारी: मुकद्दम, चौधरी या खुत

Raj Malkar

i) सूबे/प्रांत का प्रशासन :

* **अकबर** ने अपने संपूर्ण साम्राज्य को 12 सूबों में विभाजित किया था अंतिम समय में दक्षिण भारत के बरार, खानदेश एवं अहमदनगर को जीत कर सूबों में शामिल कर दिया अतः कुल सूबों की संख्या 15 हो गयी।
* **शाहजहाँ** ने कश्मीर, थट्टा और ओडीसा को स्वतंत्र सूबा बना दिया अतः शाहजहाँ काल में सूबों की संख्या 18 हो गयी थी।
* **औरंगजेब** ने बीजापुर एवं गोलकुण्डा को जीतकर साम्राज्य में मिलाने पर सूबों की संख्या 20 हो गयी थी।

सूबे के अधिकारी :-

i) **सिपहसालार/सूबेदार/गवर्नर :-** यह सूबे का प्रमुख अधिकारी होता था इसे सूबे के सम्पूर्ण सैनिक एवं असैनिक अधिकार प्राप्त थे। मुगल काल में सूबेदारों को किसी भी राज्य से संधियां तथा सरदारों को मनसब प्रदान करने का अधिकार नहीं था **अपवाद** गुजरात के सूबेदार टोडरमल को राजपूतों से संधियां एवं मनसब प्रदान करने का अधिकार दिया गया था।

ii) **प्रांतीय दीवान :-** इस पद का सृजन अकबर ने सूबेदारों की शक्ति को नियंत्रित करने के लिए किया था। यह सूबे का वित्त अधिकारी एवं राजस्व प्रमुख था जबकि सूबेदार कार्यकारिणी प्रमुख था। दीवान का कार्य भू-राजस्व व अन्य करों की वसूली करना, आय-व्यय का हिसाब रखना, सूबे की आर्थिक स्थिति की सूचना केन्द्रीय सरकार को देना था। सूबेदार व दीवान एक दूसरे पर नियंत्रण रखते थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

iii) बख्शी: बख्शी की नियुक्ति केन्द्रीय मीर बख्शी के अनुरोध पर शाही दरबार द्वारा की जाती थी। बख्शी का मुख्य कार्य सूबे की सेना की देखभाल करना था।

मीरबख्शी एवं बख्शी में अंतर :- प्रांतीय बख्शी सेना को वेतन वितरण का कार्य भी करता था जबकि मीर बख्शी सेना का वेतनाधिकारी नहीं होता था। केन्द्र में वेतन वितरण का कार्य दीवान-ए-तन करता था।

iv) प्रांतीय सद्र/मीर-ए-अदल :- सद्र की दृष्टि से यह प्रजा के नैतिक चरित्र एवं इस्लाम धर्म के कानूनों के पालन की व्यवस्था करता था। एवं काजी की दृष्टि से न्याय करता था।

v) कोतवाल :- सूबे की राजधानी तथा बड़े-बड़े नगरों में कानून एवं व्यवस्था की देखभाल करता था।

Raj Holkar

⇒ सरकार (जिले) का प्रशासन :-

मुगल काल में सरकार (जिले) में फौजदार, आमिल, कोतवाल एवं काजी इत्यादि महत्वपूर्ण अधिकारी होते थे।

i) फौजदार :- यह जिले का मुख्य प्रशासक होता था। इसका कार्य जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखना तथा चोर-लुटेरों से जनता की रक्षा करना था। शेरशाह के समय यह मुंशिफ-ए-मुंशिफान कहा जाता था। कालान्तर में फौजदार को न्यायिक अधिकार भी दिए गए तथा बाद में यह पद वंशानुगत हो गया।

ii) आमिल/अमलगुजार :- यह जिले का वित्त अधिकारी होता था इसका कार्य लगान वसूल करना तथा कृषि व किसानों की देखभाल करना था।

iii) वितिक्ची :- यह लिपिक (क्लर्क) होता था जो भूमि व राजस्व संबंधी कागज तैयार करता था।

iv) कोतवाल: नगर में शांति एवं सुरक्षा स्थापित करना। स्वच्छता व सफाई कार्य एवं न्यायिक कार्य भी करता था।

Raj Holkar

v) खजानदार: यह जिले का खजांची होता था।

vi) काजी-ए-सरकार: यह न्यायिक कार्य करता था। औरंगजेब काल में जजिया एवं जकात करों की वसूली भी करता था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ परगना एवं ग्राम प्रशासन :-

i) शिकदार :- परगने का प्रमुख अधिकारी। मुख्य कार्य परगने में शांति स्थापित करना।

ii) आमिल :- परगने का वित्त अधिकारी। कार्य किसानों से लगान वसूल करना।

iii) कानूनगो :- परगने के पटवारियों का प्रधान।

Raj Holkar

ग्राम प्रशासन :- मुगल शासक गाँव को एक स्वायत्त संस्था मानते थे जिसके प्रशासन का उत्तरदायित्व मुगलों के अधिकारियों को नहीं दिया जाता था। खुद ग्राम पंचायतें ही अपने गाँव की सुरक्षा - सफाई एवं शिक्षा की देखभाल करती थी।

ⓐ मुकद्दम/चौधरी :- यह गाँव का ग्राम प्रधान होता था।

नोट :- मुसद्दी नामक अधिकारी मुगल काल में बंदरगाहों के प्रशासन की देखभाल करता था।

बयूतात : मुगलकाल में कारखानों को बयूतात कहा जाता था।

खिअलत (खिल्लत) : यह एक सम्मान पोशाक थी जिसे बादशाह विशेष अवसरों पर पहनता था। अकबर ने अपने दूत भगवंतदास के साथ महाराणा प्रताप के लिए खिलअत पोशाक भेजी थी जिसे महाराणा प्रताप ने अकबर के सम्मान में पहना भी था।

Raj Holkar

KD Job Updates

मुगलकालीन सिक्के

* बाबर ने काबुल में चाँदी का शाहरुख तथा कन्धार में बाबरी नाम का सिक्का चलाया
* शेरशाह ने शुद्ध चांदी का सिक्का रुपया एवं तांबे का सिक्का पैसा चलाया
* अकबर ने सोने का सबसे बड़ा सिक्का शंसब चलाया एक अन्य सोने का सिक्का इलाही चलाया यह गोलाकार था। अकबर ने चाँदी का एक वर्गाकार सिक्का जलाली चलाया एवं तांबे का सिक्का दाम चलाया।
* अकबर ने अपने कुछ सिक्कों पर राम और सीता की मूर्ति का अंकन करवाया।
* तांबे का सबसे छोटा सिक्का जीतल था।
* जहांगीर ने निसार नामक सिक्का चलाया।
* शाहजहाँ ने आना नामक सिक्का चलाया।
* मुगलकाल में सर्वाधिक रुपये की ढलाई औरंगजेब के काल में हुई।
* मुगलकाल में टकसाल के अधिकारी को दरोगा-ए-दारुल जर्ब कहा जाता था।
* सिक्कों पर अपनी आकृति खुदवाने की शुरुआत जहांगीर ने की।

Scanned by CamScanner

⇒ मनसबदारी व्यवस्था :-

* मनसबदारी व्यवस्था सरकारी सोपान व्यवस्था से सम्बध्द थी। सभी मुगल अधिकारी, चाहे वो सैन्य सेवा से सम्बध्द हो या असैन्य सेवा से, एक ही सोपानक्रम में संयोजित कर दिए गए थे। मनसब से ओहदा एवं वेतन निर्धारित होता था। मनसबदारी व्यवस्था अकबर ने लागू की थी। मनसबदारी व्यवस्था मँगोलों की दशमलव पध्दति पर आधारित थी।
* अकबर ने अपने अंतिम वर्षो में मनसबदारी व्यवस्था में जात एवं सवार नामक द्वैध मनसब प्रथा को प्रारंभ किया।
* मनसबदारों को वेतन जागीर के रूप में या नकद दिया जाता था। परन्तु केवल राजस्व प्राप्ति का अधिकार था प्रशासनिक अधिकार नहीं था। मृत्यु या पदच्युति के बाद जागीर वापस करनी होती थी।

मनसबदारी में परिवर्तन :-

* जहाँगीर ने मनसबदारी व्यवस्था में दु-अस्पा एवं सीह अस्पा दर्जे को लागू किया।
* शाहजहाँ ने मनसबदारी में मासिक व्यवस्था प्रारंभ की इसके अंतर्गत मनसबदारों के वेतन, जागीर से होने वाली निर्धारित आय के स्थान पर जागीर पर होने वाली वास्तविक आय के अनुसार बारह के माप-दण्ड पर निर्धारित किए गए।
* औरंगजेब काल में मशरूत व्यवस्था [सवार संख्या में अतिरिक्त वृध्दि करना] शुरू की। ऐसा मनसबदार को किसी महत्व पूर्ण पद या अभियान हेतु नियुक्त करते समय होता था।
* मनसबदारी व्यवस्था में मराठों की नियुक्ति शाहजहाँ ने अहमदनगर अभियान से प्रारंभ हुई।
* सबसे अधिक मराठा मनसबदार औरंगजेब के समय थे।

निम्न - अस्पा : दो सैनिकों के बीच एक घोडा होता था।
यक् - अस्पा : वे सैनिक जिनके पास केवल एक घोडा होता था।
दु- अस्पा : वह घुडसवार जिनके पास दो घोडे होते थे।
सिंह - अस्पा : वह घुडसवार जिनके पास तीन घोडे होते थे।

KD Job Updates
Raj Holkar
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

⇒ मुगलकालीन राजस्व प्रणाली :-

* मुगलकाल में भू-राजस्व फसल उत्पादन पर लिया जाता था।
* इस काल में भू-राजस्व के लिए माल-ए-वाजिब शब्द का प्रयोग किया जाता था।

Raj Holkar

आइन-ए-दहशाला :

इस प्रणाली का वास्तविक प्रणेता टोडरमल था। मंसूर ने सहायता की। इसके अंतर्गत अलग-अलग फसलों के विगत 10 वर्ष के उत्पादन और उसी समय के प्रचलित मूल्यों का औसत निकाल कर इस औसत का 1/3 हिस्सा राजस्व के रूप में वसूला जाता था ये नकद रूप में होता था। इस प्रणाली में 1/10 भाग प्रत्येक वर्ष वसूला जाना था जिसे माल-ए-हरसाला कहा जाता था।

प्रारंभ में दहसाला प्रणाली सम्पूर्ण राज्य में लागू नही की गयी थी बल्कि केवल उन्हीं क्षेत्रों में प्रचलित थी जिन क्षेत्रों में जाब्ती प्रणाली प्रचलित थी।

आइन-ए-दहसाला प्रणाली को दक्षिण भारत में शाहजहाँ के शासन काल में मुर्शिद कुली खाँ ने लागू की।

दहसाला की विशेषताएं :

- भूमि की माप अनिवार्य एवं उत्पादन का आंकलन अनिवार्य
- दस्तूर के आधार पर राजस्व निर्धारण
- राजस्व की वसूली नकदी में होती थी।

दहसाला के लाभ :

- भूमि माप की जांच संभव
- अधिकारियों की मनमानी समाप्त
- राजस्व की मांग में उतार-चढ़ाव की कमी।

KD Job Updates
Raj Holkar

दहसाला पद्धति की सीमाएं :-

- उत्पादकता की अनिश्चितता का दण्ड केवल किसान को भुगतना पड़ता था।
- यह एक मँहगी प्रणाली थी। इसमें माप करने वाले के लिए प्रतिबीघा एक दाम की दर से जडीबाना दिया जाता था।

Scanned by CamScanner

⇒ कनकूत/नस्क/दानाबंदी :-

औरंगजेब ने नस्क पध्दति अपनायी। इस पध्दति में अनाज की उत्पादकता का आकलन किया जाता था। इसमें पूरे गाँव के आधार पर कर निर्धारण होता था यह पिछले कर निर्धारण पर लगाया गया एक अनुमान था।

नोट:- मुगलकाल में राजस्व की इजारा प्रथा को नहीं अपनाया गया परन्तु अपवाद स्वरूप किसी-किसी स्थान पर प्रचलित थी।

मुगलकालीन चित्रकला

Raj Holkar

* बिहजाद (पूर्व का रफैल) फारस का प्रसिध्द चित्रकार था। यह बाबर का समकालीन था 'तुजुक ए बाबरी' में बाबर ने बिहजाद को अग्रणी चित्रकार कहा है।

हुमायुं काल में चित्रकला :

* मुगल कालीन चित्रकला की नींव हुमायुं काल में पडी।
* हुमायुं काल के चित्रकार : मीर सैय्यद अली एवं अब्दुस्समद थे। ये दोनों चित्रकार फारस के थे। सैय्यद अली, बिहजाद का शिष्य था। हुमायुं इन दोनों चित्रकारों को दिल्ली लेकर आया था। चित्रकला की शुरूआत हुई।

⇒ दास्तान-ए-अमीर हम्जा :- यह एक चित्रित पाण्डुलिपि ग्रंथ है जिसको हुमायुं ने शुरू करवाया एवं हुमायुं ने इस कार्य के लिए मीर सैय्यद अली को नियुक्त किया। बाद में अकबर ने इसको करने के लिए आदेश दिया यह 1200 चित्रों का एक संग्रह है। मौलिक ग्रंथ अरबी भाषा में था जिसे मीर सैय्यद अली एवं अब्दुस्समद के नेतृत्व में फारसी भाषा में अनुदित करवाया गया था।

KD Job Updates

Raj Holkar

अकबर कालीन चित्रकला :-

* अकबर ने अब्दुस्समद को सिरीकलम की उपाधि दी थी। हुमायुं ने मीर सैय्यद अली को नादिर-उल-अस की उपाधि दी थी।

Scanned by CamScanner

अकबर कालीन प्रमुख चित्रकार : दसवन्त, बसावन, महेश, लाल, मुकुन्द, सावल दास तथा अब्दुस्समद।

रज्मनामा :- यह अकबर के काल में शुरु किया गया महाभारत ग्रंथ का फारसी अनुवाद ग्रंथ था। रज्मनामा के चित्रों को दसवन्त ने बनाया था एवं चित्रण कार्य का पर्यवेक्षण मुहम्मद शरीफ ने किया था।

* बसावन अकबर के समय का सर्वोत्कृष्ट चित्रकार था।
* अकबर के समय छवि चित्रकारी (Fresco - Painting) की शुरुआत हुई।
* आइन- ए- अकबरी में 17 चित्रकारों के नाम दिए हैं जिनमें प्रमुख चित्रकार थे - दसवन्त, बसावन, केशव, महेश, लाल, मुकुन्द, माधव, सैय्यद अली, अब्दुल समद (अब्दुस्समद), खेमकरण, हरिवंश, जगन एवं राम।

जहांगीर कालीन चित्रकला :-

Raj Holkar

* जहांगीर ने आकारिजा नामक चित्रकार के नेतृत्व में आगरा में चित्रशाला की स्थापना की।
* जहांगीर के काल में मुगल चित्रकला अपने चर्मोत्कर्ष पर थी -

जहांगीर कालीन चित्रकला की विशेषताएं -

- मोरक्का (एलबम) के रूप में चित्र बनाने लगे।
- अलंकृत हाशिए वाले चित्र बनने लगे।
- चौड़े हाशिए को फूल-पत्ती, पेड, पौधों व मनुष्य की आकृतियों से अलंकृत किया जाता था।
- छवि चित्र पर अधिक बल दिया गया।

KD Job Updates

Raj Holkar

जहांगीर दरबार के प्रमुख चित्रकार :-

1. अबुल हसन ✓
2. उस्ताद मंसूर ✓
3. फारुख बेग ✓
4. विशन दास ✓
5. आकारिजा ✓
6. मनोहर ✓
7. मुहम्मद मुराद
8. मुहम्मद नासिर
9. दौलत
10. गोवर्धन

Scanned by CamScanner

* जहाँगीर ने **बिशनदास** को अपने दूत **खान आलम** के साथ फारस के शाह के दरबार में चित्र बनाने के लिए भेजा था।
* जहाँगीर के समय के सर्वोत्कृष्ट चित्रकार **उस्ताद मंसूर एवं अबुल हसन** थे।
* जहाँगीर द्वारा प्रदान की गयी उपाधि –
  - उस्ताद मंसूर – **नादिर उल असर**
  - अबुल हसन – **नादिर-उद्-जमा**

* ~~जहाँगी~~ **उस्ताद मंसूर** :- पक्षियों की चित्रकारी, फूल चित्रकारी विशेषज्ञ था।
  - i) साइबेरिया का बिरला सारस
  - ii) बंगाल का अनोखा पुष्प

  ये उस्ताद मंसूर द्वारा बनाए गए प्रसिद्ध चित्र थे।

अबुल हसन : ये व्यक्ति चित्रों के विशेषज्ञ थे।
- इनकी प्रमुख विशेषज्ञता – रंग योजना थी।
- अबुल हसन ने 'तुजुक ए जहाँगीरी' के मुख्य पृष्ठ का चित्र बनाया था।

Raj Holkar

शाहजहाँ काल में चित्रकारी :-

* शाहजहाँ के काल में चित्रकला की अवनति हुई। शाहजहाँ के काल में स्थापत्य कला को अधिक महत्व दिया गया था।

शाहजहाँ काल के चित्रकार :- फकीर उल्ला, मीर हाशिम, मुरार, मुहम्मद नादिर, अनूप एवं चित्रा

औरंगजेब काल में चित्रकारी :-

* औरंगजेब ने चित्रकला को इस्लाम विरूध्द मानकर बंद करवा दिया था। किन्तु शासन काल के अंतिम वर्षों में उसने चित्रकारी में कुछ रूचि ली थी।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मुगलकालीन स्थापत्य

* मुगलकालीन स्थापत्य इस्लामी एवं भारतीय कला का मिश्रित रूप है।
* पेत्रादुला (संगमरमर पर जवाहरात से की गयी सजावट) मुगलकालीन स्थापत्य कला की अनूठी विशेषता है।

⇒ बाबर कालीन स्थापत्य :-

* बाबर ने आगरा के निकट आरामबाग/रामबाग बगीचे बनवाए।
* बाबर ने पानीपत में काबुली बाग में एक मस्जिद बनवायी।

⇒ हुमायुं कालीन स्थापत्य :-

* हुमायुं ने दिल्ली में दीनपनाह नामक ~~महल~~ किले की स्थापना की। ये पुराना किला नाम से जाना जाता है।

Raj Holkar

⇒ शेरशाह कालीन स्थापत्य :-

* शेरशाह ने दीनपनाह के अन्दर किला ए कुहना मस्जिद का निर्माण किया
* शेरशाह ने सासाराम (बिहार) में शेरशाह के मकबरे का निर्माण करवाया। यह मकबरा अष्टकोणीय लोदी शैली पर आधारित था।

⇒ अकबर कालीन स्थापत्य :-

KD Job Updates

Raj Holkar

अकबरकालीन स्थापत्य की विशेषताएं :-

* मुख्य रूप से बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ था।
* शहतीरों का अधिक उपयोग हुआ था।
* मेहराबों के संरचनात्मक स्वरूप के स्थान पर अलंकरणों के लिए अधिक उपयोग हुआ था।
* गुम्बद लोदी शैली से प्रभावित थे।
* कुछ भवनों में संगमरमर का प्रयोग हुआ था।

अकबरकालीन स्थापत्य को 2 चरणों में बाँटा जा सकता है -

i) **प्रथम चरण** :- आगरा, इलाहबाद एवं लाहौर के किले

ii) **द्वितीय चरण** :- फतेहपुर सीकरी का निर्माण

Scanned by CamScanner

हुमायुं का मकबरा :- इसका निर्माण हुमायुं की विधवा बेगम बेगा बेगम (हाजी बेगम) ने शुरू करवाया। इसका वास्तुकार मीरक मिर्जा गयास था।

- यह दोहरी गुंबद वाला भारत का पहला मकबरा है।
- चार बाग पद्धति का प्रयोग इसी मकबरे में किया गया था।
- यह अष्टभुजीय आकार का मकबरा है। इसे 'ताजमहल का पूर्वगामी' माना जाता है।

आगरा का किला :- → आगरा किले का वास्तुकार कासिम खाँ था। इसका निर्माण अकबर काल में हुआ परन्तु जहांगीर महल को छोड़कर अन्य सभी संरचनाओं को शाहजहाँ ने तुड़वा दिया था।

फतेहपुर सीकरी :- अकबर ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। यह आगरा से 26 कि०मी० पश्चिम में स्थित है।

फर्ग्यूसन कहता है - "फतेहपुर सीकरी किसी महान व्यक्ति के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है।"

* फतेहपुर सीकरी का मुख्य वास्तुकार बहाउद्दीन था।

फतेहपुर सीकरी में स्थित इमारतें :-

Raj Holkar

a. दीवान-ए-आम एवं दीवान-ए-खास
b. जोधाबाई का महल : फतेहपुर के भवनों में सबसे बड़ी इमारत।
c. बीरबल का महल
d. अबुल फजल का महल
e. इबादत खाना
f. शेख सलीम चिश्ती का मकबरा : जहांगीर ने इसमें संगमरमर लगवाया था।
g. बुलन्द दरवाजा : गुजरात विजय के ~~अवसर~~ स्मृति में
h. मरियम की कोठी : जोधाबाई महल के सामने स्थित।
i. इस्लाम शाह का मकबरा - वर्गाकार मेहराब का प्रयोग
j. जामा मस्जिद : "फतेहपुर का गौरव", "पत्थर में रूमानी कथा" उपनाम
k. पंच महल/हवा महल - पिरामिड आकार में पांच मंजिला भवन
l. तुर्की- सुल्ताना का महल : पर्सी ब्राउन ने इसे "स्थापत्य कला का मोती" कहा

KD Job Updates
Raj Holkar
Scanned by CamScanner

⇒ जहाँगीर कालीन स्थापत्य :-

* जहाँगीर के समय स्थापत्य पर अधिक बल नहीं दिया गया।

अकबर का मकबरा : यह आगरा के निकट सिकन्दरा में स्थित है। इसके निर्माण की योजना अकबर ने बनायी थी परन्तु निर्माण जहाँगीर ने करवाया। यह गुंबद विहीन मकबरा है।

ऐत्मादुद्दौला का मकबरा : यह आगरा में स्थित है। इसका निर्माण नूरजहाँ ने करवाया था। यह संगमरमर का प्रथम स्थापत्य भवन है।

Raj Holkar

⇒ शाहजहाँ कालीन स्थापत्य :-

* शाहजहाँ का काल मुगल "वास्तुकला का स्वर्णयुग" माना जाता है।
* शाहजहाँ काल में संगमरमर का सर्वाधिक प्रयोग किया गया।

a. दीवान-ए-आम : आगरे के किले में शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था। इसमें नादशाह का "तख्त ए-ताउस (मयूर सिंहासन)" स्थापित था।

b. दीवान-ए-खास : आगरा में बनवाया

Raj Holkar

c. मोती मस्जिद [आगरा] : शाहजहाँ ने बनवायी

d. मुसम्मन बुर्ज : शाहजहाँ ने बनवाया [आगरा में स्थित]

e. जामा मस्जिद : जहाँआरा ने बनवाया (आगरा में स्थित)

f. लाल किला (दिल्ली) : इसका निर्माण शाहजहाँ ने नए बसाए गए नगर शाहजहाँनाबाद में किया था। यह दिल्ली में स्थित, लाल बलुआ पत्थर से बना है।

g. जामा मस्जिद (दिल्ली) : इसका निर्माण शाहजहाँ ने करवाया था।

h. दीवान ए आम (दिल्ली) : यह लाल किले में बनवाया गया यहाँ मयूर सिंहासन रखा जाता था [राजधानी परिवर्तन के बाद]

i. दीवान ए खास (दिल्ली) : लाल किले में निर्मित

ताजमहल :- यमुना के तट पर आगरा में शाहजहाँ ने बनवाया। इसके नक्सानवीस उस्ताद ईसा खाँ थे एवं मकबरे की योजना उस्ताद अहमद लाहौरी ने बनायी थी।

मिस्त्री : उस्ताद ईसा खाँ स्थापत्यकार : उस्ताद अहमद लाहौरी

* ताजमहल में मुमताज एवं शाहजहाँ की कब्रें हैं।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मुगलकालीन साहित्य

⇒ प्रमुख पुस्तकें एवं लेखक/रचनाकार

i) तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) : यह स्वयं बाबर ने तुर्की भाषा में लिखी थी।
इस पुस्तक का 4 बार फारसी अनुवाद (शाहजहाँ काल तक) हुआ था।
* बाबर के समय फारसी अनुवाद - शेख जैनुद्दीन ख्वाजा ने किया।
* अकबर के समय इसका फारसी अनुवाद - अब्दुर्रहीम खाने खाना ने किया।

ii) हुमायुँनामा : इसकी रचना गुलबदन बेगम ने की।
iii) अकबरनामा : इसकी रचना अबुल फजल ने की।
iv) मुन्तखबाव-उल-तवारिख : अब्दुल कादिर बदायुँनी
v) आलमगीरनामा : मोहम्मद काजिम सिराजी।
vi) मासीर-ए-आलमगीरी : साकी मुस्तैद खाँ
↳ मुगलराज्य का गजेटियर [जादुनाथ सरकार ने कहा]

Raj Holkar

⇒ प्रमुख पुस्तकों के अनुवाद :

Raj Holkar

* अकबर ने फैजी के अधीन एक अनुवाद विभाग की स्थापना की।
i) पंचतंत्र - इसका फारसी में अनुवाद अबुल फजल ने किया।
ii) तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) :- फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खाने खाना
iii) रामायण - बदायुनी iv) लीलावती - फैजी

KD Job Updates

मुगलकाल में आए विदेशी यात्री

⇒ अकबर काल में आने वाले : फादर एक्वाविवा, फादर ऐंथाना मोंसेरात, रॉल्फ फिच, जेरोम जेवियर एवं इमैन्युल पिनहोरो

⇒ जहाँगीर काल में आने वाले : विलियम हॉकिंस (ब्रिटिश जेम्स का राजदूत), सर टॉमस रॉ, पियेत्रो देला वाले, विलियम फिंच, एडवर्ड टैरी, पेलसार्ट

⇒ शाहजहाँ काल में आने वाले :- पीटर मुण्डी (इटालवी), जीन बैपटिस्ट ट्रैवर्नियर, फ्रांसिस वर्नियर, मैनडेस्लो, निकोलाओ मनूची।

Scanned by CamScanner